# हिन्दी सन्दर्भ कोश

डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय

के

कुछ अन्य ग्रन्थ

आधुनिक हिन्दी साहित्य (१९४१)
फ़ोर्ट विलियम कॉलेज (१९४७)
भारतेन्दु की विचारधारा (१९४८)
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (१९५१)
हिन्दी साहित्य का इतिहास (१९५२)
आधुनिक हिन्दी साहित्य की भूमिका (१९५२)
प्राचीन हिन्दी-पत्र-संग्रह (१९५९)
उन्नीसवीं शताब्दी (१९६२)
पश्चिमी आलोचना-शास्त्र (१९६५)
आधुनिक कहानी का परिपार्श्व (१९६६)
हिन्दी उपन्यास : उपलब्धियाँ (१९७०)
हिन्दी भाषा का इतिहास (१९७०)
परिप्रेक्ष्य और प्रतिक्रियाएँ (१९७२)
द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास (१९७३)

प्रकाशक :
भारतीय साहित्य प्रकाशन
२८६, चाणक्य पुरी, सदर,
मेरठ–२५०००१

प्रकाशन–वर्ष : १९९६

मूल्य : १५० रुपये

मुद्रक :
पावन प्रिण्टर्स
मेरठ-२५०००२

# सम्पादक की ओर से

यह सन्दर्भ कोश हिन्दी साहित्य के सामान्य देशी-विदेशी पाठकों की सहायता के लिए तैयार किया गया है—'विद्वज्जनों' के लिए यह शायद उपयोगी सिद्ध न हो। प्रारम्भ में केवल उन्हीं सन्दर्भ-शब्दों को सम्मिलित करने का विचार था जो संख्यावाची हैं, जैसे चौंसठ कलाएँ, षोडशोपचार आदि। किन्तु हिन्दी के कुछ विदेशी पाठकों के अनुरोध से और उनकी कठिनाइयों को दृष्टि-पथ में रखते हुए ऐसे सन्दर्भ-शब्दों को भी स्थान दे दिया गया है जो संख्यावाची नहीं हैं और जो भारतीय पाठकों के सामान्य ज्ञान के हैं।

जिन प्राचीन और आधुनिक ग्रन्थों से मुझे सहायता प्राप्त हुई है उन ग्रन्थों के रचयिताओं के प्रति मैं अपना आभार प्रकट करता हूँ और पाठकों से निवेदन करता हूँ कि ऐसे संख्यावाची सन्दर्भ-शब्दों की जो उन्हें मालूम हों और जो इस कोश में न हों मुझे सूचना देने की कृपा करें। आभारी होऊँगा।

—लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय

३–ए, ताशकन्द मार्ग,
इलाहाबाद।

# हिन्दी सन्दर्भ कोश

# अ

## अंक

नाटकीय कथावस्तु का एक अंश जिसके अंत में यवनिका गिरा दी जाती है; संख्या का चिह्न ।

## अंकावतार

जब नाटक के किसी अंक के अंत में आगे आने वाले कार्य-व्यापार की सूचना हो और उसी के अनुसार अगला अंक प्रारंभ हो तो उसे अंकावतार कहते हैं । यह सूचना पात्रों द्वारा दी जाती है ।

## अंग

छठे मन्वन्तर के मनु, चाक्षुष, के पौत्र जिनका पुत्र वेन अत्यन्त दुष्ट था । अंग विरक्त होकर तपस्या करने वन चले गए; ययाति के वंशज छह लड़कों में से एक का नाम जिन्होंने अपने नाम से अंग राज्य स्थापित किया था—राज्य जो वर्तमान भागलपुर के निकट था; राजनीति के सात अंग :—स्वामी, अमात्य, सुहृद, कोष, राष्ट्र, दुर्ग और सेना; सेना के चार अंग :—हाथी, घोड़े, रथ और पैदल । आधुनिक काल में :—थल सेना, जल सेना और वायु सेना ।

## अंगद

किष्किन्धापुरी के वानरराज बालि और तारा के पुत्र जो श्रीराम के मित्र थे । इन्होंने रावण के दरबार में राम का दूतत्व किया और राम-रावण-युद्ध में वीरता प्रदर्शित की; दक्षिण दिशा के दिग्गज का नाम; श्रीकृष्ण के भाई गद का पुत्र; कौरव पक्ष का एक योद्धा; लक्ष्मण (कहीं-कहीं शत्रुघ्न) के एक पुत्र का नाम ।

## अंगराग

केसर, कपूर, कस्तूरी आदि सुगंधित द्रव्यों से मिला हुआ चन्दन जो अंग में लगाया जाता है; स्त्री के शरीर के पाँच अंगों की सजावट :—माँग में सिन्दूर, माथे पर रोली, गाल पर तिल बनाना, केसर का लेप, मेहँदी या महावर लगाना ।

## अंगिरस

दस प्रजापतियों (दे०) में से एक; एक वैदिक ऋषि; बृहस्पति का दूसरा नाम; साठ संवत्सरों (दे०) में से छठे का नाम ।

## अंगिरा

ब्रह्मा के मुख से उत्पन्न अंगिरा ऋषि महान् तेजस्वी थे। वृहस्पति, गौतम, वामदेव, विष्णु, अंगिरस आदि इन्हीं के पुत्र थे। नहुष के पतन के बाद इन्द्र का स्वर्ग में स्वागत इन्हींने अथर्ववेद के मंत्रों से किया था। इन्हीं के शाप से अग्नि में से धुआँ निकलने लगा है।

## अंगुली

अंगुष्ठ (अंगूठा), तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठा।

## अंजना

हनुमान जी की माता। पूर्व जन्म में ये वृहस्पति की परिचारिका थीं। उनके कोप से शापग्रस्त होकर ये केसरी वानर की पत्नी बनीं। जब शिव के वीर्य को पार्वती ने धारण करना न चाहा तो उन्होंने अपना वीर्य मरुत के द्वारा अंजना के गर्भ में स्थापित करा दिया और हनुमान जी का जन्म हुआ। शिव-बीज धारण करने से वह शापमुक्त हो गई। अंजना कुंजर नामक वानर की पुत्री थी।

## अंजनावती

सुप्रतीक नामक दिग्गज की हथिनी जो वहुत काली मानी जाती है।

## अंजनी

हनुमान जी की माता का नाम।

## अंडधर

शिव का एक नाम।

## अंतरिक्ष

ऋषभदेव के नौ पुत्रों में से एक। ये नौ पुत्र थे :—कवि, हरि, अन्तरिक्ष, प्रबुद्ध, पिप्पलायन, आविर्होत्र, द्रुमिल, चमस और करभाजन; एक असुर जो मुर का पुत्र था और श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया था।

## अंतर्धान

महाराज पृथु के पुत्र विजिताश्व का एक नाम। इन्होंने इन्द्र से अन्तर्धान होने की विद्या सीखी थी।

## अंतःकरण चतुष्टय

मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार।

अंधक

यदुवंशी सात्वत के एक पुत्र जिनके कुकुर, भजमान, शुचि और कम्बल-बर्हिश नाम के पुत्र हुए। इन्हीं से अन्धक वंश चला; कश्यप और दिति का पुत्र एक दैत्य जिसे शिवजी ने मारा था; यदुवंश का एक राजकुमार जो अनु का पुत्र था।

अंधक वृष्णि

अंधक और वृष्णि वंश वाला।

अंधतामिस्र

एक नरक जहाँ गहन अंधकार रहता है।

अंबरीष

महाराज नाभाग और मान्धाता के पुत्र और वैवस्वत मनु के पौत्र जिन्होंने भौतिक ऐश्वर्य त्याग कर भक्ति-मार्ग ग्रहण किया। इनकी भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान् विष्णु ने अपना चक्र इनकी रक्षा के लिए नियुक्त कर दिया था जिसके फलस्वरूप दुर्वासा का प्रचण्ड कोप भी इनका कुछ न बिगाड़ सका। ये विष्णु के परम भक्त थे।

अंबा

काशिराज की तीन पुत्रियाँ थीं—अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका। शान्तनु के पुत्र भीष्म इन तीनों को सत्यवती के पुत्र विचित्रवीर्य के लिए हस्तिनापुर ले आए थे। अम्बिका और अम्बालिका का विवाह तो विचित्रवीर्य से हो गया, किन्तु अंबा का विवाह न हो सका, क्योंकि उसने पहले ही साल्व राजा को अपने मन से वरण कर लिया था। किन्तु साल्व ने उसे स्वीकार न किया। जब वह भीष्म के पास वापिस गई तो भीष्म ने भी उसे स्वीकार न किया। इसका बदला लेने के लिए वह परशुराम के पास गई। परशुराम भीष्म के गुरु थे। दोनों में युद्ध हुआ, किन्तु दोनों बराबर रहे। विजयी कोई न हुआ। तब अम्बा ने तपस्या कर शिवजी से वरदान प्राप्त किया कि वह द्रुपदराज के कुल में जन्म लेकर भीष्म का वध करेगी। द्रुपदराज की वह पुत्री बनी। लेकिन द्रुपदराज पुत्र की कामना रखते थे। इसलिए उन्होंने इसे पुत्र की भाँति पाला। आगे चल कर यक्ष से उसने पुरुषत्व प्राप्त किया और शिखण्डि नाम धारण किया। महाभारत के युद्ध के समय भीष्म शिखण्डि द्वारा मारे गए।

अंशुक

बारीक रेशमी मलमल अथवा वह वस्त्र जो सबसे ऊपर या सबसे नीचे पहना जाय।

## अंशुमान

सूर्यवंशी राजा असमंजस के पुत्र और राजा सगर के पौत्र और महाराज दिलीप के पिता जिन्होंने राजा सगर के साठ हजार पुत्रों के उद्धार के लिए अपने पुत्र दिलीप को राज्य सौंप कर गंगा को भूमि पर लाने के लिए घोर तप किया, किन्तु सफलता प्राप्त करने से पूर्व मृत्यु को प्राप्त हुए ।

## अंशुल

चाणक्य का दूसरा नाम ।

## अंस

कृष्ण का सखा और गोकुल का एक गोप ।

## अकनिष्ठ (श्रेष्ठतर)

गौतम बुद्ध का एक नाम ।

## अकाय

परमात्मा, राहु ।

## अकूपार

वह कच्छप जिसके शरीर पर पृथ्वी टिकी मानी जाती है ।

## अक्रूर

कृष्ण के चाचा (वसुदेव के भाई) और उनके हितैषी एक प्रसिद्ध यादव जो कंस की ओर से श्रीकृष्ण और बलराम को मथुरा ले आने के लिए गए थे। ये वृष्णि वंश के श्वफल्क और काशी की राजकुमारी गान्दिनी के पुत्र थे । कहा जाता है कि अक्रूर मथुरा और द्वारका में कृष्ण के ही साथ रहे। शतधन्वा की स्यमंतक मणि इन्हीं के पास रह गई थी। स्यमंतक मणि जिसके पास रहती है उसके पास विपुल धनराशि रहती है ।

## अक्ष

वह कल्पित और अपरिवर्तनीय रेखा जो पृथ्वी के बीचोंबीच उसके आरपार दोनों ध्रुवों की ओर निकलती है और जिस पर पृथ्वी घूमती हुई मानी जाती है ।

## अक्षपाद

न्यायशास्त्र के रचयिता गौतम ऋषि अथवा न्यायवादी ।

## अक्षर

काव्य में शुभ, अशुभ और दग्ध—ये तीन प्रकार के अक्षर माने गए हैं। शुभ अक्षर हैं :—समस्त स्वर, क, ख, ग, घ, च, छ, ज, ड, द, ध, न, य, स, क्ष। अशुभ अक्षर हैं :—ङ, झ, ट, ठ, ढ, ण, त, थ, प, फ, ब, भ, म, र, ल, व, ष, ह। ह्रस्व अशुभ अक्षरों को दीर्घ कर देने से उनकी अशुभता नष्ट हो जाती है। दग्धाक्षर हैं :—झ, ह, र, भ, ष। छंद के प्रारंभ में इनका प्रयोग दूषित माना जाता है।

जिसका क्षर=नाश न हो अर्थात् स्वयं भगवान्।

## अक्षांश

पूर्व-पश्चिम मानी जाने वाली ३६० रेखाएँ जो भूगोल पर उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव के अन्तर के ३६० समान भागों पर जाती हैं; वह कोण जहाँ क्षितिज का तल पृथ्वी के अक्ष से कटता है।

## अक्षौहिणी (अक्ष=रथ; अहिनी=भीड़)

प्राचीन भारत में चतुरंगिणी सेना का वह भाग या परिमाण जिसमें २१८७० (या २१८००) रथ, २१८७० हाथी, ६५६१० घोड़े और विविध शस्त्रों से लैस १०९३५० पैदल सिपाही रहते थे।

अथवा—

नवनागसहस्राणि नागे नागे शतं रथा:।
रथे रथे शतं चाश्वा अश्वे अश्वे शतन्नर:॥

अथवा—

दशवाहिनी।

## अगस्त्य

कश्यप-वंश के एक ऋषि का नाम। उर्वशी को देख कर जब मित्र और वरुण को काम-विकार हुआ तो उनका शुक्र एक घड़े में रखा गया। उससे अगस्त्य और वशिष्ठ का जन्म हुआ। इसीलिए अगस्त्य को कुम्भयोनिज भी कहते हैं। इन्होंने विन्ध्य पर्वत पार कर दक्षिण में आश्रम बनाया, राजा नहुष को शाप देकर अजगर बनाया, राजा इन्द्रद्युम्न को शाप देकर गज बनाया और समुद्र में छिपे कालकेय राक्षस का वध किया।

## अगस्त्य-कूट

तमिलनाडु में एक पर्वत जिससे ताम्रपर्णी नदी निकलती है; एक नक्षत्र का नाम।

अगिया बैताल

प्रेत जिसके मुँह से आग निकलती है; विक्रमादित्य के दो बैतालों में से एक।

अग्नि

वेद में उल्लिखित तीन प्रधान देवताओं (अग्नि, वायु और सूर्य) में से एक। अग्नि के पुत्र स्वारोचिष दूसरे मनु थे। इनकी पत्नी का नाम स्वाहा है; पंचभूतों में से एक।

अग्नि

इन्हें शांडिल्य का प्रपौत्र और अंगिरस का पुत्र माना जाता है। ऋग्वेद अग्नि सम्बन्धी ऋचा से प्रारम्भ होता है। अग्नि का निवास घर-घर में और लोक-जीवन में माना गया है। ये दक्षिण-पूर्व कोण के दिक्पाल भी हैं। अधिक घी पी लेने के कारण इन्हें अजीर्ण रोग हो गया था। कृष्ण और अर्जुन ने खाण्डव वन में आग लगवा कर इनका रोग दूर किया जिससे प्रसन्न होकर इन्होंने कृष्ण को कौमोदकी गदा दी और अर्जुन को गाण्डीव धनुष। इनकी स्त्री का नाम स्वाहा है जिससे पावक, पवमान और शुचि तीन पुत्र उत्पन्न हुए। विष्णु पुराण और वायु पुराण में इनका विस्तृत उल्लेख है।

अग्नि

यज्ञ की अग्नि तीन प्रकार की होती है :—१. गार्हपत्य २. आहवनीय और ३. दक्षिण।

अग्नि

वैसे कुल ४९ अग्नि-देवता हैं, किन्तु अग्नि और स्वाहा के तीन पुत्र—पावक, पवमान और शुचि—प्रधान हैं।

अग्नि

जठराग्नि (शरीर में), दावाग्नि (जंगल में), बड़वाग्नि (समुद्र में)। वैद्यक मतानुसार ३ प्रकार की अग्नि मानी गई हैं :—

१. भौमाग्नि (पदार्थों के जलने से उत्पन्न), २. दिव्याग्नि, (आकाश में बिजली से उत्पन्न), ३. जठराग्नि (पित्त रूप से हृदय और नाभि के बीच में रहती और भोजन को पचाती तथा भूख उत्पन्न करती है। कार्तिक शुक्ल ८ से अग्रहण कृष्ण ८ के भीतर नवीन जठराग्नि की उत्पत्ति होती है।)

अग्नि

कर्मकाण्ड में ये तीन प्रकार की अग्नि प्रधान मानी गई हैं। (दे० पीछे) वैसे इनके अतिरिक्त तीन और हैं :—सभ्याग्नि, आवस्थ्य और औपासनाग्नि।

अग्नि

दे० 'अग्निजिह्वा'।

अग्नि-कुमार,-तनय,-सुत

कार्तिकेय, षडानन; आयुर्वेद के अनुसार एक रस विशेष।

अग्निकुल

क्षत्रियों का एक कुल।

अग्निकोण

पूर्व और दक्षिण का मध्य जिसके देवता अग्नि माने जाते हैं।

अग्निजात

कार्तिकेय, षडानन, विष्णु।

अग्निजिह्वा

अग्नि की सात जिह्वा मानी जाती हैं :—१. कराली, २. धूमिनी, ३. श्वेता, ४. लोहिता, ५. नील लोहिता, ६. सुवर्णा और ७. पद्मरागा।

इन सात जीभों के नाम इस प्रकार भी मिलते हैं :—

१. काली, २. कराली, ३. मनोजवा, ४. सुलोहिता, ५. धूम्रवर्णा, ६. स्फुलिंगिनी ('उग्रा' नाम भी मिलता है), और ७. विश्वरूपी ('प्रदीप्ता' नाम भी मिलता है)।

ये सात नाम इस प्रकार भी मिलते हैं :—

काली, कराली, जयपती, रक्तवर्णिका, ज्वलनी, धूम्रपुष्पा, धूम्रशीर्षा। अग्नि का दूसरा नाम 'सप्तजिह्व' भी है। सात नामों में 'लेलायमाना' और 'वसुप्रभा' नाम भी मिलते हैं।

अग्नित्रय

दे० 'अग्नि'।

अग्नि पुराण

१८ पुराणों में से एक। अग्नि ने इसे वशिष्ठ को सुनाया। इसलिए वक्ता के नाम पर 'अग्नि पुराण' कहलाया।

अग्नि प्रतिष्ठा

अग्नि को विधिपूर्वक, विशेषकर विवाह के समय, कुण्ड में स्थापित करना।

अग्निभू

कार्तिकेय।

अग्निमणि

सूर्यकान्त मणि या चकमक पत्थर।

अग्निमुख

देवता या ब्राह्मण।

अग्निवर्ण

सुदर्शन का पुत्र और रघु का पौत्र एक इक्ष्वाकु वंशी राजा।

अग्निवर्त्त

पुराणों में उल्लिखित एक मेघ।

अग्नि विश्वरूप

केतु तारों का एक भेद।

अग्निवेश

आयुर्वेद के एक आचार्य।

अग्निवेश्य

एक ऋषि जो द्रोणाचार्य और राजा द्रुपद के गुरु थे। इन्हें कानीन या जातुकर्ण्य भी कहते हैं। ये धनुर्वेद के आचार्य थे।

अग्निषोमीय

अग्निसोम नामक यज्ञ की हवि।

अग्निष्टोम

एक यज्ञ विशेष जो ज्योतिष्टोम नामक यज्ञ का रूपान्तर है।

अग्नि संस्कार

शव को भस्म करने के लिए चिता पर अग्नि रखने की क्रिया; श्राद्ध में पिण्डवेदी पर आग की चिनगारी फिराने की क्रिया।

अग्निसोम

एक यज्ञका नाम।

## अग्निहोम

अदिति के पुत्र सविता और उनकी पत्नी प्रश्नी के पुत्र जो अग्नि में आहुति देने की क्रिया के देवता माने जाते हैं।

## अग्निहोत्र

एक यज्ञ; सुबह-शाम नियम से किया जाने वाला एक वैदिक कर्म विशेष ।

## अग्निहोत्रि

वररुचि के एक पुत्र ।

## अग्निहोत्री

अग्निहोत्र करने वाला ।

## अग्यारी

अग्नि में धूप आदि सुगंधित द्रव्य देना; धूपदान ।

## अघ

एक असुर जो बकासुर और पूतना का छोटा भाई और कंस की सेना का प्रधान अध्यक्ष था। कंस ने इसे कृष्ण का वध करने के लिए गोकुल भेजा था। इसने गोकुल में अत्यन्त उत्पात मचाया, किन्तु अन्त में श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया ।

## अघोर

शिव या महादेव का एक रूप; एक पंथ जिसके अनुयायी मांस-मदिरा का सेवन करते हैं और मल-मूत्र आदि से घृणा नहीं करते; पंचोपनिषद् (दे०) में से एक ।

## अघोरा

भादों के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी जिस दिन शिवजी की पूजा की जाती है।

## अघोरी (अघोरपंथी)

अघोर पंथ या मत या सम्प्रदाय का अनुयायी ।

## अचलद्विष्

इन्द्र का नाम जिन्होंने पर्वतों के पंख काट डाले थे ।

## अच्छद

हिमालय की एक झील जिसका उल्लेख कादम्बरी में हुआ है ।

**अच्छावाक**

सोम यज्ञ करानेवालों में से एक ऋत्विज् जो होता का सहवर्ती होता है।

**अच्युत**

कृष्ण तथा विष्णु का नामान्तर।

**अज**

सूर्यवंशी राजा रघु के पुत्र। इन्हीं के पुत्र महाराज दशरथ थे; तीसरे मनु (दे०) के एक पुत्र; पुरूरवा के एक पुत्र; ब्रह्मा, विष्णु और शिव की उपाधि; कामदेव।

**अजगव**

महाराज पृथु के धनुष का नाम; शिवजी के धनुष का नाम।

**अजनाभ**

भारतवर्ष का एक प्राचीन नाम।

**अजा**

सांख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति या माया।

**अजातशत्रु**

युधिष्ठिर; शिव; उपनिषद् में वर्णित काशी का एक ज्ञानी राजा; गौतम बुद्ध का समकालीन और मगध के सम्राट् बिंबसार का पुत्र।

**अजामिल**

कान्यकुब्ज का एक ब्राह्मण जो अपने परिवार को छोड़ वेश्यागामी बना। वेश्या से हुए पुत्रों में से एक का नाम नारायण था। यमदूतों को आया देख कर उसने भयभीत होकर अपने पुत्र नारायण को पुकारा। भगवान् का नाम होने के कारण उसी समय विष्णु-दूत वहाँ आए और उसे यमदूतों से मुक्त कराया। इससे उसके मन पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उसने वेश्या को छोड़ सन्मार्ग अपनाया और अन्त में सद्गति को प्राप्त हुआ।

**अजीगर्त**

उपनिषद् और पुराणों में वर्णित शुनःशेफ के पिता का नाम।

**अट्टहासिन**

शिवजी का एक नाम।

**अठारह**

१८ पुराण, १८ उपपुराण, १८ विधाएं या कलाएं (दे०)।

**अणिमा**

शिवजी की आठ सिद्धियों में से एक (दे० 'सिद्धि')। इस सिद्धि के प्राप्त कर लेने से योगी लोग किसी को दिखाई नहीं पड़ते (छोटा रूप धारण करने की विद्या)।

**अणु**

शिव और विष्णु का नाम; नैयायिकों द्वारा स्वीकृत पदार्थ विशेष।

**अणुवाद**

वल्लभाचार्य का सिद्धान्त जिसके अनुसार जीव या आत्मा को अणु माना गया है; वैशेषिक दर्शन।

**अतल**

सात पातालों में से दूसरा पाताल; (दे० 'पाताल')।

**अतिगण्ड**

ज्योतिष-शास्त्र के अनुसार योग विशेष।

**अतिथि यज्ञ**

पंच महायज्ञों में से एक।

**अतिबला**

एक विद्या जो विश्वामित्र जी ने श्रीरामचन्द्र जी को सिखाई थी। इस विद्या के सीख लेने से श्रम और ज्वर की बाधा का भय नहीं रहता था।

**अतिराग**

ज्योतिष्टोम यज्ञ का एक ऐच्छिक भाग।

**अतिसार**

रोग विशेष जो उदराग्नि को मंद कर देता है।

**अतीन्द्रिय**

सांख्य शास्त्र में जीव या प्रकृति या प्रधान पुरुष परमात्मा; वेदान्त के अनुसार मन।

**अत्यग्निष्टोम**

ज्योतिष्टोम यज्ञ का कर्म विशेष।

**अत्रि**

ब्रह्मा के एक मानस पुत्र और सप्तर्षियों में से एक। अनसूया अत्रि की पत्नी थीं जो भगवान् कपिलदेव की बहन और कर्दम-देवहूति

की कन्या थी। अत्रि ने अनसूया सहित घोर तप किया और ब्रह्मा, विष्णु और शंकर के वरदान स्वरूप तीनों के अंश से तीन पुत्र उत्पन्न हुए—विष्णु के अंश से दत्तात्रेय, ब्रह्मा के अंश से चन्द्रमा और शिव के अंश से दुर्वासा हुए। वनवास के समय राम और सीता ने इनका आतिथ्य स्वीकार किया था। अत्रि एक प्रसिद्ध ब्रह्मवादी थे; एक तारा जो सप्तर्षि-मण्डल में है।

अथ

एक शब्द जिससे प्राचीन समय में कोई लेखन-कार्य प्रारम्भ किया जाता था।

अथर्वणि

अथर्ववेद में निष्णात ब्राह्मण; यज्ञ करानेवाला पुरोहित; कर्मकाण्डी।

अथर्वन्

अथर्ववेद की ऋचाएं; यज्ञकर्त्ता विशेष जो अग्नि और सोम की पूजा करता है। अथर्ववेद नामक चौथे वेद का मंत्र-द्रष्टा या ऋषि भृगु और अंगिरा गोत्र वाला माना जाता है।

अदिति

दक्ष प्रजापति की पुत्री और मरीचि-पुत्र कश्यप ऋषि की पत्नी। आदित्य, एकादश रुद्र, अष्टवसु आदि इन्हीं के पुत्र थे और भगवान् विष्णु ने वामन नाम से इन्हीं की कोख से जन्म लिया। ये देवताओं की माता मानी जाती हैं।

अद्वैत

वह मत जो ब्रह्म, जीव और विविध रूपात्मक संसार में अभेद मानता है। ब्रह्म को छोड़ कर संसार में और किसी वस्तु की वास्तविक सत्ता वेदान्त नहीं मानता। अन्ततोगत्वा यह सृष्टि उसी ब्रह्म में एकाकार हो जाती है। माया के वशीभूत हो जीव भ्रमित होता रहता है। ज्ञान द्वारा भ्रमफंद कट जाता है। अद्वैत-वादी को ही वेदान्ती कहते हैं। अद्वैत मत की स्थापना में शंकराचार्य अग्रगण्य हैं। अन्य अद्वैत मत हैं:—विशिष्टाद्वैत, शुद्धाद्वैत, द्वैताद्वैत, द्वैत।

अधिकमास या अधिमास

सामान्यत: इसे मलमास या लौंद का मास कहा जाता है। शुक्ल प्रतिपदा से लेकर अमावस्या पर्यन्त ऐसा काल जिसमें संक्रान्ति न पड़े (प्रति तीसरे वर्ष)।

वह मंत्र जिसमें अग्नि, वायु, सूर्य इत्यादि देवताओं के नाम-कीर्त्तन से ब्रह्म-विभूति की शिक्षा प्राप्त हो।

अधिमास या मलमास या लौंद का महीना

हर तीसरे वर्ष में एक अधिक मास होता है जो शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से लेकर अमावस तक रहता है और इसमें संक्रान्ति नहीं होती। यह चान्द्र और सौर वर्षों को एक करने के लिए चान्द्र वर्ष में जोड़ लिया जाता है।

अधिवास

यज्ञ के अनुष्ठान के प्रारम्भ में प्रतिमा की प्रतिष्ठा-क्रिया; स्त्रियों का एक दोष; विवाह से पहले तेल, हल्दी चढ़ाने की रीति।

अध्यात्म

जीव और ब्रह्म का स्वरूप बतलाने वाली विद्या।

अध्वर

एक धार्मिक कृत्य; सोम याग।

अध्वर मीमांसा

जैमिनि कृत पूर्व-मीमांसा का नाम।

अध्वर्यु

ऋत्विक्; पुरोहित; यजुर्वेद का ज्ञाता।

अनंग

कामदेव। लोक-कल्याण की दृष्टि से और देवताओं के कहने से सती की मृत्यु से क्षुब्ध और तपस्या में रत शिवजी पर जब कामदेव ने अपने बाणों का सन्धान किया तो शिवजी ने अपना तीसरा नेत्र खोल कर कामदेव को भस्म कर दिया। कामदेव ने ऐसा कार्य इसलिए किया क्योंकि शिवजी से उत्पन्न कार्तिकेय ही तारक असुर का वध कर सकते थे। भस्म हो जाने पर भी कामदेव अशरीरी रूप में आज तक जीवित है।

अनक दुन्दुभि

कृष्ण के पिता वसुदेव की उपाधि।

अनर्थ

अनर्थ १५ (पन्द्रह) माने गए हैं :—

चोरी, हिंसा, मिथ्या, दम्भ, काम, क्रोध, विस्मरण, वैर, अप्रतीति, भेद, भय, खेद, चिन्ता, लोभ, सर्वस्पर्द्धा।

## अनसूया

अत्रि मुनि की पत्नी जो स्त्रीत्व का आदर्श मानी जाती है; 'अभिज्ञान शाकुन्तल' की एक नारी-पात्र ।

## अनहद

योगमार्ग के अन्तर्गत जब प्राणवायु सुषुम्ना नाड़ी द्वारा ब्रह्मरन्ध्र में पहुँच जाती है तब अनहद नाद सुनाई देता है जो भ्रमर, शंख, मृदंग, ताल, घंटा, वीणा, भेरि, दुन्दुभि, समुद्र-गर्जन, मेघ-गर्जन दस प्रकार का होता है । इससे योगियों को परमानन्द प्राप्त होता है ।

## अनामय

विष्णु का एक नाम ।

## अनाहत

वह शब्द जो दोनों हाथों के अंगूठों से दोनों कानों को बन्द करने से सुनाई देता है ।

## अनाहत चक्र

हृदय-स्थित बारह दलों का कमल, जिसके बीच ब्रह्म का ध्यान किया जाता है । हठयोग के अनुसार शरीर के भीतर के छह चक्रों में से एक ।

## अनिभिषाचार्य

गुरु वृहस्पति ।

## अनिरुद्ध

प्रद्युम्न और रुक्मि की पुत्री रुक्मवती के पुत्र का नाम जो कृष्ण के पौत्र और वाणासुर की कन्या उषा के पति थे । उषा ने इन्हें स्वप्न में देखा और इन पर मुग्ध हो गई । उषा के पुत्र का नाम वज्र है ।

## अनीक

सेना के आगे चलने वाले अश्वारोहियों की टुकड़ी ।

## अनुभाव

हृदय के भाव को प्रकाशित करने वाली शारीरिक चेष्टाएं । रस का एक अंग । ये चार प्रकार के होते हैं :—१. सात्विक (स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वर-भंग, कंप, वैवर्ण्य, अश्रु, प्रलय) २. कायिक, ३. मानसिक और ४. आहार्य (नायक-नायिका का परस्पर एक दूसरे का वेष धारण करना) । कटाक्ष, रोमांच आदि अनुभाव के अन्तर्गत आते हैं ।

अनुराधा

सात तारों से मिल कर सर्पाकार एक नक्षत्र जो २७ नक्षत्रों में से १७ वाँ माना जाता है।

अनुलोम

संगीत में सुरों का उतार।

अनुलोम विवाह

उच्च वर्ण के पुरुष का अपने से नीचे वर्ण की स्त्री से विवाह।

अनुष्टुभ्

चार पद का एक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण में ८ अक्षर होते हैं।

अनेकान्तवाद

जैन दर्शन में स्याद्वाद—जिसके विषय में कुछ निश्चित न हो। बौद्ध और जैनविशेष अनेकान्तवादी कहे जाते हैं; सात पदार्थों को माननेवाला नास्तिक।

अन्त्य

संख्या विशेष—१००००००००००००००; मीन राशि; रेवती नक्षत्र।

अन्नकूट

भात का बड़ा ढेर। ब्रज में अन्नकूट का त्योहार मनाया जाता है। यह कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से पूर्णिमा तक किसी दिन होता है। इसमें भोजनों का भोग भगवान् को लगाया जाता है।

अन्नपूर्णा

अन्न की अधिष्ठात्री देवी दुर्गा का एक रूप।

अन्नप्राशन

१६ संस्कारों में से एक संस्कार जिसमें नवजात बालक को प्रथम बार अन्न चटाया जाता है।

अन्नमय कोश

त्वचा, चर्म, मांस, रुधिर, अस्थि, वीर्य, मल आदि का समूह भौतिक शरीर जो अन्न पर आधारित है।

अपदेवता

निम्न कोटि का देवता, भूत, प्रेत।

## अपरा

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार इन आठ भेदों वाली भगवान् की जड़ प्रकृति या मूल प्रकृति या शक्ति। यह प्रकृति संसार की हेतु-रूप है और इसी से जीव बन्धन में पड़ता है।

## अपर्णा

पार्वती या दुर्गा का एक नाम।

## अपान

शरीर की वह वायु जो गुदा से निकलती है।

## अप्रतिष्ट

एक नरक।

## अप्सरा

इन्द्र की सभा में गंधर्वों की नाचनेवाली स्त्रियाँ। ये स्वर्ग-वेश्याएं कही जाती हैं। मुख्य अप्सराएं सात हैं :—घृताची, मेनका, रम्भा, उर्वशी, तिलोत्तमा, सुकेशी, मंजुघोषा।

## अभिमन्यु

अर्जुन के पुत्र जिन्होंने गर्भ में ही अर्जुन के मुख से चक्रव्यूह में घुसने की विद्या जान ली थी। किन्तु जब अर्जुन बाहर निकलना सुनाने लगे तो माता के सो जाने के कारण वे चक्रव्यूह से निकलना न जान सके। इसीलिए महाभारत के युद्ध के समय ये कौरवों के चक्रव्यूह में घुस तो गए, किन्तु बाहर न निकल सकने के कारण मारे गए। जिन छह महारथियों ने इन्हें मिल कर मारा उनके नाम हैं :—द्रोणाचार्य, कर्ण, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, बृहद्बल और कृतवर्मा। महाराज परीक्षित इन्हीं के पुत्र थे।

## अभिसारिका

नायिका जो अपने नायक से मिलने संकेत-स्थल पर जाती है। दिन में जाने वाली को दिवाभिसारिका, चाँदनी रात में जाने वाली को शुक्लाभिसारिका और अँधेरी रात में जानेवाली को कृष्णाभिसारिका कहते हैं। काव्य में रस के अन्तर्गत इन अभिसारिकाओं का वर्णन होता है।

## अभ्यास

एक अवलम्ब में चित्त को स्थापित कर देना योग में अभ्यास कहा जाता है। संगीत में अस्थाई या टेक को अभ्यास कहते हैं।

अमर कंटक

वह पहाड़ जिससे नर्मदा नदी निकलती है।

अमर कोश

अमरसिंह द्वारा रचित संस्कृत का शब्द-कोश। कहा जाता है अमर सिंह जैन थे और विक्रमाजीत के नवरत्नों में से एक थे।

अमरावती

इन्द्र की पुरी का नाम।

अमावस, अमावस्या, अमावास्या, अमावसी, अमावासी

अँधेरे पाख (कृष्ण पक्ष) का अन्तिम दिन।

अमृत

समुद्र-मंथन करने पर निकला एक रस जिसे पीने से मनुष्य अमर हो सकता है। पौराणिक आख्यान के अनुसार अमृत-घट देवताओं ने ग्रहण किया था, किन्तु दानवों ने उनसे छीन लिया था। विष्णु ने स्त्री-रूप धारण कर दानवों से अमृत-घट ले लिया। जिस समय वे देवताओं को अमृत बाँट रहे थे उस समय एक राक्षस भी देवता का रूप धारण कर आ बैठा था। अमृत उसके गले तक पहुँचा ही था कि चन्द्रमा ने रहस्य खोल दिया। विष्णु ने अपने चक्र से उसका गला काट दिया। किन्तु क्योंकि अमृत गले तक पहुँच चुका था, इसलिए वह राक्षस मरा नहीं। उसके शरीर के दो हिस्से हो गए—सिर जिसे केतु कहते हैं और धड़ जिसे राहु कहते हैं।

अमृत देवता गरुड़ और विष्णु को भी कहते हैं।

अमृत-वल्लरी-पान

कुंडलिनी-शक्ति जब उलट कर ब्रह्मांड में पहुँच जाती है और सारे शरीर में वायु व्याप्त हो जाती है, तब उल्टा सहस्रार से अमृत का निर्झर प्रवाहित होता है। इसी को अमृत-वल्लरी का पान कहते हैं।

अमृत संजीवनी

दे० 'मृतसंजीवनी'।

अरविन्द

विष्णु और साथ ही ब्रह्मा का दूसरा नाम।

अरिष्ट

बलि का पुत्र और कंस का सेवक जो बैल का रूप धारण कर कृष्ण को मारने ब्रज गया। किन्तु कृष्ण ने उसके सींग उखाड़ कर उसे मार डाला।

अरुंधती

वसिष्ठ तारा के समीप रहने वाला सप्तर्षि-मण्डल का सबसे छोटा आठवाँ तारा। यह केवल तारा के नाम से भी प्रसिद्ध है। जिनकी मृत्यु निकट होती है उन्हें यह तारा दिखाई नहीं पड़ता; वशिष्ठ की पत्नी का नाम भी अरुंधती था। अरुंधती कर्दम प्रजापति और मनु-पुत्री देवहूति की पुत्री थी।

अरुण

ऋषि कश्यप और विनिता के पुत्र, गरुण के भाई और सूर्य के सारथी जो सूर्य की ओर मुँह करके बैठते हैं। इमेनी के गर्भ से इनके सम्पाति और जटायु नामक दो पुत्र हुए। अरुण एक बार स्त्री-रूप धारण कर इन्द्र की नाट्यशाला में गए। इनके सौन्दर्य पर मुग्ध इन्द्र से इनका एक पुत्र हुआ जो बलि के नाम से विख्यात हुआ। उसी रूप से मोहित सूर्य से उनका पुत्र सुग्रीव हुआ। गरुड़ भी इन्हीं के पुत्र माने जाते हैं। साथ ही वे शनि, सावर्णि मनु, कर्ण, यम और दोनों अश्विनी-कुमारों के पिता भी माने जाते हैं। यमुना और तापती नदियाँ अरुण की ही पुत्रियाँ मानी जाती हैं।

अर्घ

षोडशोपचार, पूजन में से एक उपचार जिसमें जल, दूध, कुशाग्र, दही, सरसों, चावल और यव मिलाकर देवता को अर्पित किया जाता है।

अर्जुन

इन्द्र द्वारा उत्पन्न कुन्ती के पुत्र और पाँच पांडवों में तीसरे और कृष्ण के सखा। पाँच पाँडव—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव। अर्जुन परमवीर और धनुर्विद्या में पारंगत थे। इनके धनुष का नाम गाण्डीव था जिसे इन्होंने खाण्डव वन-दहन के समय अग्नि से प्राप्त किया था। इन्होंने कई विवाह किए। अभिमन्यु इन्हीं के पुत्र थे। ये द्रोणाचार्य के शिष्य थे। अपनी बाण-विद्या के कारण ही इन्होंने द्रौपदी को प्राप्त किया। इन्होंने उलूपी, मणिपुर की राजकन्या चित्रांगदा और श्रीकृष्ण की बहन सुभद्रा से भी विवाह किया। सुभद्रा के गर्भ से अभिमन्यु का जन्म हुआ और चित्रांगदा के गर्भ से वभ्रुवाहन का। ये कृष्ण के सखा और पाण्डवों की शक्ति थे। इन्होंने द्वारिका में कृष्ण और वसुदेव का अंतिम संस्कार किया था। हिमालय के महाप्रस्थान के पथ पर अर्जुन की मृत्यु हुई।

अर्जुनध्वज

हनुमान जी का एक नाम।

**अर्धनारीश्वर**

भगवान् शिव का नाम जो अपने वाम भाग में पार्वती जी को स्थापित कर अर्धनारीश्वर बने।

**अर्बुद**

एक दैत्य जिसे इन्द्र ने मारा था; दस करोड़ की संख्या।

**अर्हत**

जैनियों के एक पूज्य देवता; बौद्ध भिक्षु।

**अलंबुसा**

एक देश का नाम।

**अलकापुरी**

कैलास-स्थित और विश्वकर्मा द्वारा निर्मित कुबेर की नगरी।

**अवतार**

वैसे तो विष्णु भगवान् के २४ अवतार माने जाते हैं :—
ब्रह्मा, वाराह, नारद, नरनारायण, कपिल, दत्तात्रेय, यज्ञ, ऋषभ्, पृथु, मत्स्य, कूर्म, धन्वन्तरि, मोहिनी, नृसिंह, वामन, परशुराम, वेदव्यास, राम, बलराम, कृष्ण, बुद्ध, हंस, हयग्रीव, कल्कि।
किन्तु मुख्य दस अवतार ही हैं :—
मत्स्य, कूर्म, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बलभद्र (कहीं-कहीं 'बुद्ध') और कल्कि।

**अवन्ति**

उज्जैन का नाम; एक नदी का नाम।

**अवस्था**

आध्यात्मिक दृष्टि से मनुष्य की चार अवस्थाएं हैं :—
१. जाग्रत्, २. स्वप्न, ३. सुषुप्त, ४. तुरीय।
सूफियों के ये ही चार आलम हैं :—
नासूत, मलकूत, जबरूत, लाहूत।

**अवस्थाएं**

वय की दृष्टि से मनुष्य की चार अवस्थाएं हैं :—बाल, कुमार, युवा, वृद्ध। इस दृष्टि से आठ अवस्थाएं भी मानी जाती हैं :—बाल, कौमार, पौगंड, कैशोर, यौवन, तरुण, वृद्ध और वर्षीयान्।

**अव्याकृत**

वेदान्त में अप्रकट बीज रूप जगत्कारण; सांख्य के अनुसार प्रकृति।

**अशोक**

एक वृक्ष जिसका फूल कामदेव के पाँच फूलों में से एक माना जाता है; मौर्य-वंश का एक सम्राट्।

**अश्लेषा**

२७ नक्षत्रों में से नवाँ नक्षत्र। केतु ग्रह का जन्म इसी नक्षत्र से माना जाता है।

**अश्वत्थामा**

शस्त्र और शास्त्र में निपुण अश्वत्थामा द्रोणाचार्य और कृपी के पुत्र थे। महाभारत के युद्ध में इन्होंने अनेक वीरों को मारा। ये दुर्योधन की तरफ से पाण्डवों से लड़े थे; सप्त चिरजीवियों में से एक।

**अश्वमेध**

विश्वविजयी होने की आकांक्षा से छोड़ा गया अश्व जिसके मस्तक पर जय-पत्र बँधा रहता था और जिसे रोकने वाले पर विजय प्राप्त करनी होती थी। अश्वमेध की गणना महायज्ञों में की जाती है। घोड़े को मार कर उसकी चर्बी से ही हवन किया जाता था।

**अश्विनी**

२७ नक्षत्रों में प्रथम; एक अप्सरा जो सूर्य की पत्नी मानी गई है और जिसने घोड़ी बन कर सूर्य के साथ मैथुन किया।

**अश्विनी कुमार**

इनके जन्म के सम्बन्ध में कई मत हैं—कश्यप और अदिति के पुत्र, ब्रह्मा के कानों से उत्पन्न, सत्य और दस्त्र नाम से सूर्य की पत्नी संज्ञा से (कहीं-कहीं सूर्य की पत्नी अश्विनी और कहीं प्रभा से) अश्व के रूप में उत्पन्न। अश्विनीकुमार दो जुड़वाँ भाई थे। इन्होंने दध्यङ मुनि से वैद्यक का ज्ञान प्राप्त किया था। राजा शर्याति की पुत्री एवं च्यवन ऋषि की पत्नी सुकन्या पर प्रसन्न होकर च्यवन को नेत्र और नव यौवन प्रदान किया था।

इस बात का भी उल्लेख मिलता है कि अश्विनी नाम की एक अप्सरा थी जिसने घोड़ी का रूप धारण कर सूर्य से दो पुत्र उत्पन्न कराए थे जो अश्विनीकुमार कहलाए। अश्विनी को 'वडवा' भी कहते हैं। एक मत यह भी है कि ये त्वष्टा की पुत्री प्रभा स्त्री से उत्पन्न सूर्य के पुत्र थे। ये देवताओं के वैद्य माने जाते हैं।

**अष्टक**

ऋग्वेद का भाग विशेष; पाणिनि के सूत्रों के आठ अध्याय।

### अष्टकुल

सर्पों के आठ कुल हैं :—

शेष, वासुकि, कंबल, कर्कोटक, पद्म, महापद्म, शंख और कुलिक।

### अष्टकृष्ण

वल्लभ सम्प्रदाय के अनुसार आठ कृष्ण या कृष्णमूर्तियाँ हैं :—

श्रीनाथ, नवनीतप्रिय, मथुरानाथ, विट्ठलनाथ, द्वारकानाथ, गोकुलनाथ, गोकुलचंद्रमा और मदनमोहन।

### अष्टछाप

गोसाईं विट्ठलनाथ द्वारा स्थापित चार अपने पिता, महाप्रभु वल्लभाचार्य, के और चार अपने शिष्यों का मण्डल।

महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्य :—

सूरदास, कृष्णदास, कुंभनदास और परमानन्ददास।

गोसाईं विट्ठलनाथ के शिष्य :—

नन्ददास, चतुर्भुजदास, छीतस्वामी और गोविन्दस्वामी।

### अष्ट दिक्पाल

आठ दिशाओं के स्वामी—

इन्द्रौ वन्हिः पितृपतिः नैऋतो वरुणोमरुत्।
कुबेर ईशः पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात्॥

### अष्टद्रव्य

आठ द्रव्य जो हवन में काम आते हैं :—

अश्वत्थ, गूलर, पाकर, वट, तिल, सरसों, पायस और घी।

### अष्टधातु

सोना, चाँदी (रूपा), ताँबा, राँगा, जस्ता, सीसा, लोहा, पारा (पृथ्वी पर महादेव जी के गिरे वीर्य से उत्पन्न)। ये आठ नाम इस प्रकार भी मिलते हैं :—सोना, रूपा, ताँबा, पीतल, राँगा, काँसा, सीसा, लोहा।

### अष्ट प्रकृति

राज्य के आठ प्रधान कर्मचारी :—

सुमंत्र, पण्डित, मंत्री, प्रधान, सचिव, अमात्य, प्राड्विवाक और प्रतिनिधि।

### अष्ट मंगल

जिस घोड़े का मुँह, सीना, पूँछ और खुर सब सफेद हों ऐसे घोड़े को अष्टमंगल कहते हैं।

अथवा आठ मांगलिक द्रव्यों का समुदाय :—

मृगराजो वृषो नाराः कलशो व्यजनं तथा ।
वैजयन्ती तथा भेरी दीप इत्यष्टमंगलम् ।।

अथवा :—ब्राह्मण, गाय, अग्नि, स्वर्ण, घृत, सूर्य, जल, नरपति ।

**अष्टमूर्ति**

शिवजी की आठ मूर्तियाँ :—

क्षितिमूर्ति = सर्व, जलमूर्ति = भव, अग्निमूर्ति = रुद्र, वायुमूर्ति = उग्र, आकाशमूर्ति = भीम, यजमान मूर्ति = पशुपति, सूर्यमूर्ति = ईशान और चन्द्रमूर्ति = महादेव ।

**अष्ट वर्ग**

आठ ओषधियों का समूह :—

जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीर काकोली, ऋद्धि और वृद्धि; राज्य के सन्दर्भ में कृषि, वस्ति, दुर्ग, सोना, हस्तिबंधन, खान, कर-ग्रहण और सैन्य-संस्थापन का समूह; ज्योतिष का एक गोचर ।

**अष्टवसु**

दे० 'वसु' ।

**अष्टसिद्धि**

दे० 'सिद्धि' ।

**अष्टांग**

योग की क्रिया के आठ भेद :—

यम, नियम (संयम), आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि;

आयुर्वेद के आठ विभाग :—

शल्य, शालाक्य, कायचिकित्सा, भूतविद्या, कौमारभृत्य, अगदतंत्र, रसायनतंत्र और बाजीकरण;

शरीर के आठ अंग जिनसे 'साष्टांग प्रणाम' किया जाता है :—

जानु, पद, हाथ, उर, शिर, वचन, दृष्टि और बुद्धि ।

**अष्टांग प्रणाम**

दे० 'अष्टांग' ।

**अष्टाध्यायी**

पाणिनीय व्याकरण का प्रधान ग्रन्थ जिसमें आठ अध्याय हैं ।

अष्टावक्र

उद्दालक मुनि की पुत्री सुजाता और कहोडक के पुत्र अष्टावक्र गर्भ में ही पिता के शाप से ग्रस्त होकर जब उत्पन्न हुए तो शरीर से वक्र थे। गर्भ स्थित अष्टावक्र ने जब पिता का वेदोच्चारण सुना तो उनके उच्चारण में गलती बताई। इसी से कुपित होकर पिता ने शाप दिया था कि वक्र बुद्धि की भाँति तेरा शरीर भी वक्र होगा।

असंहत

सांख्य दर्शन के अनुसार पुरुष या जीव।

असिधारा व्रत

वह व्रत विशेष जिसमें तलवार की धार पर खड़ा होना पड़ता है; युवती स्त्री के साथ सदैव रह कर भी उसके साथ मैथुन करने की इच्छा को रोकना।

असुर

कश्यप और दिति के पुत्र, किन्तु देवताओं के शत्रु।

अस्मिता

योग के अनुसार पाँच क्लेशों में से एक; दृक् द्रष्टा और दर्शन शक्ति को एक मानना अथवा पुरुष (आत्मा) और बुद्धि में अभेद मानने की भ्रांति (योग)।

अहल्या

पुरुवंश की राजकुमारी, राजा मुग्दल की पुत्री और गौतम ऋषि की पत्नी। इन्द्र ने धोखा देकर अहल्या से समागम किया। मालूम हो जाने पर वह पति के शाप से शिला बन गई। त्रेता युग में भगवान् राम के चरण-स्पर्श से उसे मोक्ष प्राप्त हुआ। गौतम मुनि के शाप से ही इन्द्र के शरीर में सहस्र योनियाँ उत्पन्न हुईं जिसके फलस्वरूप इन्द्र का नाम सहस्रयोनि पड़ा। प्रार्थना करने पर योनियाँ आँखों में बदल गईं। इसलिए इन्द्र को सहस्राक्ष भी कहते हैं। कुछ आख्यानों में इन्द्र के स्थान पर चन्द्रमा का उल्लेख मिलता है। गौतम ऋषि के शाप के कारण वह क्षय रोग से पीड़ित हो घटता-बढ़ता रहता है।

अहिच्छत्र

पांचाल देश का दूसरा नाम जिसे द्रोणाचार्य ने पाण्डवों की सहायता से जीता था। यह राज्य वर्तमान रुहेलखण्ड में था और इसकी राजधानी रामनगर में थी।

अहिपुच्छ

वृत्रासुर जो इन्द्र का शत्रु था।

१०६८५ पुस्तकालय
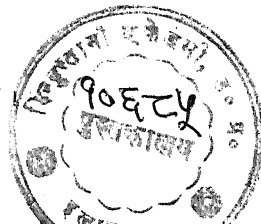
# आ

### आंगिरस

अंगिरा या अंगिरस के पुत्र वृहस्पति, उतथ्य और संवर्त्त ।

### आंजनेय

अंजनि के पुत्र हनुमान जी ।

### आंविकेय

धृतराष्ट्र और कार्तिकेय की उपाधि ।

### आकाश गंगा

अत्यन्त छोटे-छोटे तारों का विस्तृत समूह जो आकाश में उत्तर से दक्षिण तक फैला हुआ है ।

### आकाशदीप

कार्त्तिक मास में लक्ष्मीनारायण की प्रसन्नतार्थ ऊँचे बाँस पर लटकाया हुआ दीप ।

### आकाशमुखी

वे साधु जो आकाश की ओर मुख करके तप करते हैं ।

### आखातीज

वैशाख सुदी तीज जब स्त्रियाँ वटपूजन करती है और दान देती हैं । संस्कृत शब्द 'अक्षय तृतीया' है ।

### आख्यान

पुराणों के आधार पर रची गई वह कथा जिसमें पात्र कभी अपने मुख से अपना कुछ-कुछ वर्णन करता है ।

### आगम

शास्त्र, वेद; न्याय के चार प्रमाणों में से अन्तिम प्रमाण ।

'आगतं शिव वक्त्रेभ्यो, गतञ्च गिरिजा श्रुतौ ।
मतञ्च वासुदेवस्य तस्मादागम उच्यते ।।'

महादेव ने कहा (आ=आया), पार्वती ने सुना (ग=गया—पार्वती के पास) और विष्णु ने माना (म=माना—विष्णु ने) ।

### आग्नेय

कार्तिकेय या स्कन्द की उपाधि; पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा; अग्नि की पत्नी; दक्षिण का एक देश जिसकी एक प्रसिद्ध नगरी माहिष्मती थी ।

आग्रहायण

मार्गशीर्ष मास; अगहन।

अग्रहायिणी

मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा।

आजगव

शिवजी का धनुष या पिनाक।

आदि काव्य

महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण।

आदित्य

कश्यप और दक्ष की पुत्री अदिति के पुत्र बारह आदित्य माने गए हैं :—शक्र, अर्यमा, धाता, सविता, त्वष्टा, विवस्वान्, मित्र, वरुण, पूषा, भंग, भग और अंशु। (दे० 'देवता' भी)।

द्वादश आदित्यों के ये नाम भी मिलते हैं :—

विवस्वान, अर्यमा, पूषा, त्वष्टा, सविता, भग, धाता, विधाता, वरुण, मित्र, शक्र, उरुक्रम।

आदित्यों के नामों में कहीं-कहीं विष्णु, रुद्र, सूर्य के नाम भी मिलते हैं। आदित्य का अर्थ 'इन्द्र', 'वामन', 'वसु', 'सूर्य', 'देवता', 'विश्वेदेवा' आदि भी होता है।

आदि पुराण

दे० 'ब्रह्मपुराण'।

आनक दुन्दुभी

दे० 'अनक दुन्दुभि'।

आपस्तम्ब

एक ऋषि जो कृष्ण युजर्वेद की एक शाखा के प्रवर्तक माने जाते हैं; एक स्मृतिकार।

आपोशन

मंत्र विशेष जो भोजन करने के पूर्व और पीछे पढ़े जाते हैं। भोजन के आरंभ में पढ़ा जाने वाला मंत्र—'अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा,' भोजन के बाद पढ़ा जाने वाला मंत्र—'अमृतापिधानमसि स्वाहा।'

आभरण

दे० 'आभूषण'।

आभूषण

आभूषण १२ माने जाते हैं :—

नूपुर, किंकिणि, चूड़ी, अंगूठी, कंकण, विजायठ, हार, कंठश्री, बेसर, बिरिया, टीका और सीसफूल ।

आम्नाय

ब्राह्मण, उपनिषद् और आरण्यकों सहित वेद और उनका अभ्यास ।

आयुध

तीन प्रकार के होते हैं :—

'प्रहरण', जैसे तलवार । 'हस्तमुक्त', जैसे चक्र, भाला, बरछी । 'यंत्रमुक्त,' जैसे तीर, बन्दूक, तोप ।

आरण्यक

वेद के ब्राह्मणों के अन्तर्गत एक भाग जो या तो वन में बैठ कर रचे गए थे या जिन्हें वन में जाकर पढ़ना चाहिए । वास्तव में आरण्यकों में वानप्रस्थों के कृत्यों का वर्णन और उनके लिए उपयोगी उपदेश हैं ।

आर्य

वेदों के रचयिता जिनके वंशज हिन्दू कहे जाते हैं—ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीन वर्ण ।

आर्य समाज

१८७५ ई० में स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित एक प्रसिद्ध और महान् सुधारवादी आन्दोलन ।

आर्यावर्त

देश विशेष जो पूर्व और पश्चिम में समुद्रों द्वारा और उत्तर-दक्षिण में हिमालय और विन्ध्य गिरि द्वारा सीमाबद्ध है :—

'आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्राच्च पश्चिमात् ।
तयोरेवान्तरं गिर्याः आर्यावर्तं विदुर्बुधाः ।।

आलम

दे० 'अवस्था' ।

आश्रम

चार होते हैं :—ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ, संन्यास । कलियुग में केवल 'गृहस्थ' और 'संन्यास' ये ही दो आश्रम रह जाते हैं—'गृहस्थाभिक्षुकश्चैव, आश्रमौ द्वौ कलौ युगे' ।

आसक्ति

गुण माहात्म्य, रूप, पूजा, स्मरण, दास्य, सख्य, कान्ता, वात्सल्य, आत्म-निवेदन, तन्मय और पर-विरह ये एकादश आसक्तियाँ हैं ।

## इ

### इंदिरा

लक्ष्मी, विष्णु की पत्नी ।

### इंदुमती

अज की पत्नी और भोज की भगिनी का नाम ।

### इंद्र

वैदिक देवता जिनका वाहन ऐरावत हाथी और अस्त्र वज्र है । इन्द्र की पत्नी का नाम शची और पुत्र का नाम जयन्त है । इनकी सभा का नाम सुधर्मा है और राजधानी अमरावती । वहीं नन्दन नाम का उद्यान और पारिजात तथा कल्पवृक्ष हैं । इन्द्र के घोड़े का नाम उच्चैःश्रवा और सारथि का नाम मातलि है । ये ज्येष्ठा नक्षत्र और पूर्व दिशा के स्वामी हैं । इन्द्र देवताओं के राजा माने जाते हैं ।

आकाश और बादलों के देवता इन्द्र ऋग्वेद में प्रमुख स्थान रखते हैं । जल की वर्षा और दस्युओं के नाश के लिए इन्हें स्मरण किया जाता था । ये देवराज थे । इन्होंने वृत्रासुर का वध किया । ऋग्वेद में इनकी माता का नाम निष्टिग्री और अथर्ववेद में एकाष्टका मिलता है । इन्हें सोमरस विशेष प्रिय था । रामायण और महाभारत काल में इन्द्र की महानता कम हो गई थी । रावण के पुत्र मेघनाद से पराजित होना, गौतम की पत्नी अहल्या के साथ बलात्कार करना, कृष्ण द्वारा इन्द्र की पूजा के स्थान पर गोवर्धन की पूजा स्थापित होना आदि प्रसंग इस बात के उदाहरण हैं ।

इन्द्र १४ माने गए हैं :—

इन्द्र, विश्वभुक्, विपश्चित, विभु, प्रभु, शिखि, मनोजव, तजस्वी, बलिर्भाव्य, त्रिदिव, सुशान्ति, सुकीर्ति, ऋतधावा, दिवस्पति (देवीपुराण) । इन्द्र के महल का नाम 'वैजयन्त' और वन का नाम 'नन्दनवन' है ।

### इंद्रजीत

लंका के अधिपति रावण का पुत्र जो राम-रावण युद्ध में मारा गया । इसे मेघनाथ (दे०) भी कहते हैं ।

### इंद्रधनुष

वर्षाकाल में सात रंगों का एक अर्धवृत्त जो सूर्य के सामने की दिशा में कभी-कभी आकाश में दिखलायी पड़ता है ।

**इंद्रप्रस्थ**

यमुना नदी के वाम तट पर बसा हुआ प्राचीन नगर। इसका आधुनिक नाम दिल्ली है, यद्यपि दिल्ली यमुना के दक्षिण तट पर है।

**इंद्रवधू**

बीरबहूटी—लाल कीड़ा जो बरसात में दिखाई देता है।

**इंद्रियाँ**

दस हैं जिनसे रूप, रस, गन्ध का अनुभव होता है। वे हैं :—
आँख, नाक, कान, रसना, त्वचा —ज्ञानेन्द्रियाँ तथा हाथ, पाँव, गुदा, लिंग (उपस्थ), मुख (वाणी)—कर्मेन्द्रियाँ जिनसे विभिन्न कर्म किए जाते हैं। यदि मन को भी एक इन्द्रिय माना जाय तो इन्द्रियाँ ग्यारह हैं।

अथवा :—

कर्मेन्द्रियाँ—हाथ, पैर, मुँह, उपस्थ (लिंग या योनि), गुदा।
ज्ञानेन्द्रियाँ—आँख, जीभ, नाक, कान, त्वचा।
अन्तरिन्द्रियाँ—मन, बुद्धि, अहंकार और चित्त।

**इक्ष्वाकु**

सूर्यवंशी एक राजा जिनके पिता का नाम वैवस्वत मनु था।

**इड्**

पंच प्रयोगों में तीसरा प्रयोग।

**इडः**

अग्नि का नाम।

**इडस्पति**

विष्णु का नाम।

**इडाला**

ये मनु की बेटी और राजा पुरूरवा की माता थीं।

**इड़ा**

'इडा' का प्रयोग अन्न, दुग्ध, वाणी और पृथ्वी के लिए हुआ है। शतपथ ब्राह्मण में बताया गया है कि जब मनु ने सन्तान की आकांक्षा से प्रेरित जो बलि दी उससे इड़ा की उत्पत्ति हुई। इड़ा का इला और इड़ा के रूप कभी स्त्री, कभी पुरुष हो जाने का उल्लेख भी मिलता है। पुराणों में इड़ा के सम्बन्ध में अनेक प्रकार के प्रसंग मिलते हैं; दक्ष की एक पुत्री और कश्यप ऋषि की एक पत्नी का नाम भी इड़ा है; हठयोग में कल्पित बाईं ओर की नाड़ी।

इतिहास

इतिह्=परंपरा की बात।

इति=ऐसा, ह=निश्चय, अस्=होना या आसु=रहना।

इलावृत

जंबूद्वीप के नौ खण्डों में से एक।

## ई

ईति

ईतियाँ सात होती हैं :—

अनावृष्टि, अतिवृष्टि, टीड़ी, मूषक, शुक, स्वसैन्य, परसैन्य।

'शुक' की गणना न करें तो विपत्तियाँ छह तरह की रह जाती हैं।

ईर्षा

तीन हैं :—पुत्र, सम्पत्ति, पत्नी।

ईशान

उत्तर और पूर्व के बीच की दिशा जिसके स्वामी महादेव माने जाते हैं; ग्यारह रुद्रों (दे०) में से एक; शिव; ग्यारह की संख्या।

ईश्वर

ईश्वर के छह गुण : ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य।

ईश्वरप्रणिधान

योगशास्त्र के पाँच नियमों में से अन्तिम; ईश्वर में अत्यधिक श्रद्धा-भक्ति।

ईसाई

ईसा मसीह के बताए हुए मार्ग पर चलने वाला।

## उ

उग्रश्रवस्

रोमहर्षण नामक पौराणिक पात्र का पुत्र।

उग्रसेन

आहुक के पुत्र, देवकी तथा कंस के पिता और देवक के भाई उग्रसेन मथुरा के अधिपति थे। कंस अपने श्वसुर जरासंध की सहायता

से इन्हें सिंहासन से उतार कर स्वयं शासक बन बैठा। श्रीकृष्ण ने उसका वध कर उग्रसेन को फिर राज्य सौंप दिया।

### उच्चैःश्रवा

इन्द्र या सूर्य के घोड़े का नाम। इसे 'बिल' भी कहते हैं। इसके खड़े कान, सात मुंह और सफेद रंग बताया जाता है। यह समुद्र-मन्थन के समय निकला था।

### उत्तरमीमांसा

वेदान्त दर्शन।

### उत्तरा

राजा विराट की पुत्री जिसे अज्ञातवास में बृहन्नला नाम से अर्जुन नृत्य-कला की शिक्षा देते थे। इसका विवाह अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु से सम्पन्न हुआ। उत्तरा से ही परीक्षित उत्पन्न हुए थे; एक नक्षत्र।

### उत्तराफल्गुनी या फाल्गुनी

१२ वाँ नक्षत्र।

### उत्तराभाद्र पद या पदा

२६ वाँ नक्षत्र।

### उत्तराधीश

कुबेर।

### उत्तरायण

मकर से मिथुन तक सूर्य जिस मार्ग पर चलते हैं उसे उत्तरायण कहा जाता है। इस पथ पर सूर्य ६ मास रहते हैं। इस समय सूर्य की गति उत्तर की ओर झुकी हुई मकर रेखा से उत्तर कर्क रेखा की ओर रहती है।

### उत्तराषाढ़ा

इक्कीसवाँ नक्षत्र।

### उत्तानपाद

एक पौराणिक राजा जिनके पुत्र भक्तशिरोमणि ध्रुव थे (उत्तानपादजः = ध्रुव)। ये स्वयं स्वायंभुव मनु के पुत्र थे।

### उत्सर्जन

वैदिक अध्ययन बन्द करने के उपलक्ष्य में गृह-कर्म विशेष। यह वर्ष में दो बार—पूस और श्रावण में किया जाता था।

## उदधिकन्या

लक्ष्मी; द्वारकापुरी।

## उदयगिरि

उदयाचल पर्वत जो पूर्व दिशा में है। यहीं से सूर्य का उदय होना माना गया है।

## उदयन

अगस्त्य मुनि का नाम; कौशाम्बी का चंद्रवंशी राजा जो वत्सराज के नाम से भी प्रसिद्ध है।

## उदयाचल

दे० 'उदयगिरि'।

## उदान

शरीर की पाँच वायुओं में से एक जो कण्ठ में रहती है। यह हृदय से कण्ठ और तालू तक तथा सिर से भ्रूमध्य तक मानी गई है। डकार और छींक इसी से आती है।

## उदासी

नानकपंथी साधुओं का एक सम्प्रदाय; संन्यासी।

## उदीच्य

सरस्वती नदी के उत्तर-पश्चिम वाला देश।

## उद्धव

कृष्ण के सखा एवं परामर्शदाता। इन्हें वसुदेव के भाई देवनाग का पुत्र और कृष्ण जी का चचेरा भाई भी बताया जाता है। विरह-पीड़ित गोपियों को सगुण भक्ति के स्थान पर निर्गुण भक्ति का उपदेश देने ये ही गए थे, किन्तु लौटे सगुण भक्ति में निमग्न हो कर। यह प्रसंग सर्वप्रथम भागवत में आया है।

## उद्यापन

किसी व्रत की समाप्ति पर किया जाने वाला कर्म।

## उपचार

पूजन के अंग या विधान सोलह हैं (षोडशोपचार) :—
आसन, पाद्य, अर्घ्य, स्नान, लेपन, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, शीतल जल, वस्त्र, आभूषण, माला, सुगन्ध, आचमनीय, सतल्प।

## उपदेवता

ये ३७ होते हैं जो सामूहिक दृष्टि से तुषित कहे जाते हैं। यक्ष, विद्याधर, गंधर्व, किन्नर आदि उपदेवता हैं।

## उपधातु

शरीर के रस-रक्तादि सात धातुओं से बने हुए दूध (स्तन), पसीना, चर्बी, दन्त, केश, रज और ओज ।

## उपनन्द

गोकुल का एक वयोवृद्ध गोप ।

## उपनिषद्

वेद की शाखाओं के ब्राह्मणों के वे अन्तिम भाग जिनमें आत्मा-परमात्मा आदि का वर्णन किया गया है; ब्रह्मविद्या; वेदान्त-दर्शन । उपनिषद् का अर्थ है 'गुरु' के पास बैठ कर ब्रह्म-विद्या प्राप्त करना ।

उपनिषद् वैसे तो १०८ कहे जाते हैं, किन्तु उनमें से १० सर्वोत्तम माने जाते हैं :—

ईशावास्योपनिषद्, केनोपनिषद्, कठोपनिषद्. प्रश्नोपनिषद्. मुण्डकोपनिषद्, माण्डूक्योपनिषद्, तैत्तिरीयोपनिषद्, ऐतरेयोपनिषद्, छान्दोग्योपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद् ।

## उपपुराण

१८ पुराणों के अतिरिक्त अन्य छोटे-छोटे पुराण । ये भी १८ ही हैं :—

सनत्कुमार, नारसिंह, नारदीय, शिव, दुर्वासा, कपिल, मानव, औशनस, वरुण, कालिका, शांब, नन्दा, सौर, पराशर, आदित्य, माहेश्वर, भार्गव, वासिष्ठ ।

आद्यं सनत्कुमारोक्तं नारसिंहमतः परं ।<br>
तृतीयं नारद प्रोक्तं कुमारेण तु भाषितम् ।<br>
चतुर्थं शिवधर्माख्यं साक्षान्नन्दीश भाषितम् ।<br>
दुर्वाससोक्तमाश्चर्यं नारदोक्त मतः परम् ।<br>
कापिलं मानवं चैव तथैवोशनसेरितं ।<br>
ब्रह्माण्डं वारुणं चाथ कालिकाह्वयमेव च ।<br>
माहेश्वरं तथा शांबं सौरं सर्वार्थसंचयम् ।<br>
पराशरोक्तं प्रवरं तथा भागवतद्वयं ।<br>
इदमष्टादशं प्रोक्त पुराणं कौर्मसंज्ञितं ।<br>
चतुर्धा संस्थितं पुण्यं संहितानां प्रभेदतः ।

**उपरूपक**

उपरूपक के अठारह भेद होते हैं :—

नाटिका, त्रोटक, गोष्ठी, सट्टक, नाट्यरासक, प्रस्थानक, उल्लाप्य, काव्य, प्रेङ्खण, रासक, संलापक, श्रीगदित, शिल्पक, विलसिका, दुमलिविका, प्रकरणी, हल्लीश, भाणिका। (दे० 'नाटक')

**उपवन**

बारह माने गए है:—

शान्तनुकुण्ड, राधाकुण्ड, गोवर्द्धन, परमन्दर, बरसाना, संकेत, नन्दघाट, चीरघाट, बलरामस्थल, नन्दगाँव, गोकुल, चन्दनवन।

**उपविष**

सेहुड़ (थूहर), मदार, करिचारी, घुंघची, कनेर, कुचिला, जमालगोटा, धतूरा और अफीम ये नौ उपविष माने गए हैं।

**उपवेद**

वे विद्याएं जिनका मूल वेद में है। ये चार हैं :—

धनुर्वेद, गन्धर्ववेद, आयुर्वेद, स्थापत्य। ('स्थापत्य' के स्थान पर 'धर्मशास्त्र' का उल्लेख भी मिलता है)

धनुर्वेद का मूल यजुर्वेद में (विश्वामित्र द्वारा राजपूतों के लिए निर्मित), गान्धर्व विद्या का मूल सामवेद में (भरत द्वारा निर्मित), आयुर्वेद विद्या का मूल ऋग्वेद में (ब्रह्मा द्वारा निर्मित) और स्थापत्य विद्या का मूल अथर्ववेद में (विश्वकर्मा द्वारा निर्मित) माना जाता है।

**उपसंख्या**

यह शब्द प्रायः कात्यायन के वार्तिक के लिए प्रयुक्त होता है जिसमें पाणिनि की छूटों की पूर्ति की गई है।

**उपसुन्द**

निकुम्भ का पुत्र और सुन्द का भाई एक दैत्य।

**उपस्मृति**

धर्मशास्त्र के छोटे १८ ग्रन्थ।

**उपांग**

वेदांगों के परिशिष्ट रूप में लिखे गए या गौण ग्रन्थ :—

पुराण, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र।

**उपाय**

राजनीति में विरोधी पक्ष पर विजय प्राप्त करने के चार उपाय :—

साम, दाम, दण्ड, भेद।

उपेन्द्र

वामन या विष्णु का एक नाम; इन्द्र का छोटा भाई।

उर्वशी

नर के साथी नारायण की जंघा से उत्पन्न एक अप्सरा। स्वर्ग में यह इन्द्र की अप्सरा थी और पुरूरवा इसका प्रेमी था।

उलूपी

एक नागकुमारी जिसका विवाह अर्जुन के साथ हुआ था। अर्जुन के औरस और उलूपी के गर्भ से बभ्रुवाहन नामक एक वीर उत्पन्न हुआ था जिसने युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ की दिग्विजय-यात्रा में अर्जुन को परास्त किया था।

उल्कामुख

अगिया बैताल; महादेवजी का एक नाम; एक प्रकार का प्रेत जिसके मुख से आग निकलती है।

उशनस्

वैदिक साहित्य में उल्लिखित एक कवि जिनके नाम से एक स्मृति भी प्रसिद्ध है; शुक्र या शुक्र ग्रह का अधिष्ठातृ देवता।

उषा

बाण दैत्य की पुत्री और बलि की पौत्री उषा ने स्वप्न में श्रीकृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध (दे०) के प्रति प्रेम किया और अपनी सखा चित्रलेखा की सहायता से उससे गंधर्व विवाह कर लिया। बाण ने विरोध किया, किन्तु श्रीकृष्ण, बलराम और प्रद्युम्न ने उसे पराजित किया और उषा को वापिस द्वारका ले आए।

ऊर्ध्वचरण

एक प्रकार के तपस्वी जो सिर के बल खड़े होकर तप करते हैं।

ऊर्ध्वद्वार

ब्रह्मरन्ध्र।

ऊर्ध्वपुंड्र

खड़ा वैष्णवी तिलक।

ऊर्ध्वबाहु

वह तपस्वी जो अपनी एक भुजा ऊपर उठाए तप करता है।

ऊर्ध्वरेखा

राम-कृष्ण आदि विष्णु के अवतारों के ४८ चरण-चिह्नों में से एक।

**ऊर्मी**

छह हैं :—

शीत, उष्ण, दु:ख, सुख, मान, अपमान। (दे० 'षट्ऊर्मि' भी)

## ऋ

**ऋण**

चार प्रकार के माने गए हैं :—

१. ऋषि-ऋण—शिक्षा प्राप्त कर इस ऋण से मुक्ति मिलती है।

२. देव-ऋण—यज्ञ द्वारा चुकाया जाता है।

३. पितृ-ऋण—श्राद्धादि द्वारा चुकाया जाता है।

४. मनुष्य-ऋण—सत्याचरण आदि से चुकाया जाता है।

**ऋतम्भरा**

योगशास्त्रानुसार सत्य को धारण और पुष्ट करने वाली चित्तवृत्ति विशेष।

**ऋतु**

छह हैं :—

वसन्त (चैत्र, वैशाख), ग्रीष्म (ज्येष्ठ, आषाढ़), वर्षा (सावन, भादों), शरद (कुँआर, कातिक), हेमन्त (अगहन, पूस), शिशिर (माघ, फागुन)।

**ऋतुपर्ण**

अयोध्या के इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा का नाम।

**ऋत्विज्**

यज्ञ कराने वाला। प्रत्येक यज्ञ में चार ऋत्विज् माने गए हैं :—

होतृ, अध्वर्य, उदातृ, ब्रह्मन् (होता, अध्वर्यु, उद्गाता, ब्रह्मा)। बड़े यज्ञ में इनकी संख्या सोलह हो जाती है।

**ऋभुक्ष**

इन्द्र का एक नाम।

**ऋष्यकेतु**

प्रद्युम्न के पुत्र अनिरुद्ध का नाम; कामदेव का नाम।

**ऋषि**

दे० 'सप्तर्षि'। वैसे ऋषियों के प्रकार भी सात माने गए हैं :—

१. श्रुतर्षि (जिसने पवित्र कथा सुनी हो), २. काण्डर्षि (जो वेद का

कोई मुख्य काण्ड सिखलाता हो), ३. परमर्षि (जैसे, मुनि भेल), ४. महर्षि (जैसे, व्यास), ५. राजर्षि (जैसे, विश्वामित्र), ६ ब्रह्मर्षि (जैसे, वशिष्ठ), ७. देवर्षि (जैसे, नारद)।

ऋषिकुल्या

महाभारत के तीर्थयात्रा पर्व में उल्लिखित एक नदी।

ऋषिपंचमी

भाद्र मास की शुक्ला पंचमी।

ऋष्य

अनिरुद्ध का एक नाम।

ऋष्यमूक

मद्रास में तुंगभद्रा नदी के तट पर पर्वत।

ऋष्यशृंग

विभाण्डक ऋषि के पुत्र का नाम।

ऋष्व

इन्द्र और अग्नि का नाम।

## ऐ

ऐतरेय

ऋग्वेद का एक ब्राह्मण।

ऐरावत

इन्द्र का हाथी जो पूर्व दिशा का दिग्गज (दे०) है।

ऐरावती

ऐरावत हाथी की पत्नी।

ऐलविल

कुबेर का एक नाम।

ऐशान

शिवजी से संबंधित।

ऐशानी

दुर्गा का एक नाम।

एषणाएं

पुत्रैषणा, वित्तैषणा और लोकैषणा।

# औ

**औत्तरेय**

परीक्षित राजा का नाम जिसका जन्म उत्तरा के गर्भ से हुआ था।

**औत्तानपाद**

ध्रुव जी का नाम; ध्रुव नाम का तारा जो सदा उत्तर दिशा में दिखाई पड़ता है।

**और्व**

भृगुवंशीय एक प्रसिद्ध ऋषि; पौराणिक भूगोल का दक्षिण भाग जहाँ दैत्यों का निवास माना जाता है; पंच प्रवर ऋषियों में से एक।

**औलूक्य**

कणाद का नाम जो वैशेषिक दर्शन के प्रचारक थे।

**औशनस**

उशना कृत स्मृति या धर्मशास्त्र।

**औशीनर**

उशीनर का पुत्र।

**औशीनरी**

पुरूरवा की रानी का नाम।

# क

**कंस**

दानवराज दुर्मिल ने जब उग्रसेन की ऋतुस्नाता पत्नी के साथ उग्रसेन का रूप धारण कर संभोग किया और जब उग्रसेन की पत्नी ने दुर्मिल का अधिक गौर वर्ण देखा तो पूछा—'कस्त्वम्', 'कस्त्वम्'। इस कारण दुर्मिल के वीर्यज पुत्र का नाम कंस हुआ। उग्रसेन का वह क्षेत्रज पुत्र कहा जाएगा। उसने मगधराज जरासंध की अस्ति और प्राप्ति नाम की दो कन्याओं से विवाह किया और उसी की सहायता से अपने पिता उग्रसेन को पदच्युत किया। उसने अपने बहन-बहनोई (देवकी और वसुदेव) को इसलिए कारागार में डाल दिया था क्योंकि आकाशवाणी ने देवकी के आठवें पुत्र द्वारा उसका वध बताया था। ये आठवें पुत्र कृष्ण थे जिन्होंने अवसर पाकर कंस का वध किया।

**कच**

वृहस्पति का पुत्र जो असुरों के गुरु शुक्राचार्य से मृतसंजीवनी विद्या सीखने गया था और जिसका शुक्र की पुत्री देवयानी से प्रेम हो गया था। कच का जैवेय नाम भी है।

कच्छप

कुबेर की नौ निधियों में से एक।

कच्छपावतार

समुद्र-मंथन (दे०) के समय विष्णु का रूप जिसे अवतार माना जाता है।

कच्छपी

सरस्वती की वीणा।

कठ

एक ऋषि जो वैशम्पायन के शिष्य थे। कृष्ण यजुर्वेद की शाखा इन्हीं के नाम से प्रसिद्ध है; एक यजुर्वेदीय उपनिषद्।

कठवल्ली

कृष्ण यजुर्वेद की कठशाखा का एक उपनिषद्।

कणाद

अणुवाद या वैशेषिक दर्शन के जनक का नाम; उलूक मुनि।

कण्व

कश्यप गोत्र में उत्पन्न एक ऋषि जिन्होंने शकुन्तला का पालन-पोषण किया।

कण्वाश्रम

यह आश्रम आधुनिक बिजनौर (रुहेलखण्ड) के पास था।

कद्रु

दे० 'कद्रू'।

कद्रू

दक्ष प्रजापति की कन्या और महर्षि कश्यप की पत्नी। कद्रू नाग-माता मानी जाती है।

कन्याकुमारी

भारत के दक्षिण में रामेश्वर के निकट एक अन्तरीप।

कपालिनी

दुर्गा का एक नाम।

कपाली

शिव, महादेव, भैरव की उपाधि।

कपिंजल

एक मुनि का नाम।

कापल

एक महर्षि जिन्होंने राजा सगर के साठ हजार पुत्रों को कुपित होकर भस्म कर डाला था। ये सांख्य-दर्शन के आविष्कारक माने जाते हैं। 'कपिल स्मृति' कपिल रचित सांख्य सूत्र है।

कपिल स्मृति

महर्षि कपिल द्वारा रचित सांख्य सूत्र।

कपिशा

एक नदी का नाम; कश्यप की स्त्री जिससे पिशाच उत्पन्न हुए।

कपूर

तेरह प्रकार के माने गए हैं :—
पोतास (बरास), भीमसेन, सितकर, शंकरावास, पांशु, पिंज, अब्दसार, हिमबालुक, जूतिका, तुषार, हिम, शीतल, पत्रिकाख्य।

कफ

क्लेदन, अवलंबन, रसन, स्नेहन और श्लेष्मण, ये पाँच प्रकार के कफ हैं।

कबंध

श्री का पुत्र एक विशालकाय राक्षस जिसका मुख पेट के स्थान पर था और आँख एक तथा छाती में लम्बे हाथ थे। श्रीराम ने सीता-हरण के बाद दण्डकारण्य में इसका वध किया। वाल्मीकि रामायण में इसका उल्लेख है; राहु का भी एक नाम कबन्ध है।

कमल

द्विदल कमल (आज्ञा चक्र), चार दल कमल (मूलाधार चक्र), षट्दल कमल (स्वाधिष्ठान चक्र), दस दल कमल (मणिपूर चक्र), द्वादश दल कमल (अनाहत चक्र), षोडश दल कमल (विशुद्धाख्य चक्र), सहस्र दल कमल (सहस्रार चक्र)।

करटक

हितोपदेश और पंचतंत्र में वर्णित एक शृगाल का नाम।

कर्ण

कुन्ती के गर्भ से उत्पन्न सूर्य का पुत्र। यह कुन्ती की कुमारी अवस्था में उत्पन्न हुआ था, इसलिए उसने नवजात शिशु कर्ण को अश्व नदी में छोड़ दिया था जहाँ से धृतराष्ट्र के सूत अधिरथ ने उठा कर अपनी पत्नी राधा को सौंप दिया। इसीलिए कर्ण सूत-पुत्र कहलाया। इसने द्रोणाचार्य और परशुराम से शस्त्र-विद्या सीखी

थी। दुर्योधन का मित्र होने के कारण कर्ण ने सदैव कौरवों का पक्ष लिया। अर्जुन से पहले कर्ण ने द्रुपद के यहाँ मत्स्य-भेद किया था, किन्तु सूतपुत्र होने के कारण द्रौपदी ने कर्ण के साथ विवाह करना अस्वीकार कर दिया था। कर्ण की प्रतिद्वन्द्विता अर्जुन के साथ विशेष रूप से थी। कर्ण दानवीर भी था। महाभारत के युद्ध में वह अर्जुन के हाथों मारा गया।

कर्णाट
दक्षिण भारत का एक भूखण्ड विशेष।

कर्णी
चौर्यकला विज्ञान के प्रादुर्भावकर्त्ता मूलदेव की माता का नाम।

कर्मनाशा
एक नदी जो चौसा के पास गंगा से मिलती है।

कर्मयोग
फलासक्ति न रखते हुए और शुद्ध चित्त से कर्म-साधन।

कर्मेन्द्रिय
जिह्वा, हाथ, पैर, गुदा और लिंग।

कला
१८ कलाएं (दे० 'विद्या')।

कला
शुक्रनीति और कामसूत्र के अनुसार ६४ होती हैं :—
१. गायन, २. वादन, ३. नृत्य, ४. नाट्य, ५. आलेख्य या चित्रकला, ६. विशेषक छेद्य (विविध प्रकार के तिलक लगाने की कला), ७. तण्डुल कुसुमावलिविकार क्रिया, (चौक पूरना, अल्पना, देव-मंदिरों में बिना टूटे चावल और फूलों से चौक पूरना), ८. पुष्पास्तरण (पुष्पों की सेज बनाना), ९. दशन वसनांगराग (अंगरागादि-लेपन) १०. मणिभूमिका कर्म (पच्चीकारी, गर्मी के दिनों में विशेष गृह बनाना), ११. शयन रचन, १२. उदक वाद्य (जलतरंग बाजा बजाना), १३. उदकाघात (पानी के खेल), १४. चित्रयोग (रूप बनाना, जवान को बुड्ढा और बुड्ढे को जवान बनाना और नपुंसक बनाना), १५. माल्यग्रन्थन विकल्प, १६. शेखरापीडयोजन (शिर में अनेक प्रकार के फूल सजाना। शेखरक और आपीड ये दोनों अगल-अलग भी मानी जाती हैं।) १७. नेपथ्य प्रयोग (देशका-

लानुसार वस्त्र पहनना), १८. कर्ण पत्र भंग (हाथी दाँत और शंखादि के कर्णफूल बनाना), १९. गन्धियुक्त (सुगंधित पदार्थ बनाना और प्रयोग करना), २०. भूषण योजना, २१. ऐन्द्रजाल (जादूगरी), २२. हस्तलाघव, २३. कौचुमार योग (कुरूप को सुन्दर बनाना), २४. चित्रशाकापूपभक्ष्य विकार क्रिया या केवल सूपकर्म (विविध प्रकार के भोजन बनाना), २५. पानकरसरागासव योजन या केवल पानकादि भोजन या आपानक (शर्बत या शराब बनाना), २६. सूची कर्म, २७. सूत्र क्रीड़ा (विविध प्रकार के तागे बनाना और टूटे को साबुत और साबुत को टूटा दिखाना), २८. प्रहेलिका, २९. प्रतिमाला-बैतबाजी (अन्त्याक्षरी), ३०. दुर्वाचक योग या कूटक योग (कठिन शब्दों का पढ़ना), ३१. पुस्तकवाचन (शृंगारादि अलंकार और गान के साथ पढ़ना), ३२. नाटकाख्यायिका दर्शन या नाट्य-कला, ३३. काव्य-समस्यापूर्ण (समस्यापूर्ति), ३४. पत्रिकावेत्रबाण विकल्प या पट्टिकावान विकल्प (तरह-तरह की मेज, कुर्सी, पलंग बुनना), ३५. तर्कवातक्षकर्म या तक्ष कर्म (तर्क करना या शिल्पकारी व शान चढ़ाना), ३६. तक्षण (बढ़ई का काम), ३७. वास्तुविद्या, ३८. रूप्यरत्न परीक्षा या धातु परीक्षा (सोना, चाँदी आदि परखना), ३९. धातुवाद (कच्ची धातु साफ करना), ४०. मणिरागकरज्ञान (रत्नादि का ज्ञान), ४१. वृक्षायुर्वेदयोग (बाग़बानी), ४२. मेषकुक्कुटलावक युद्ध-विधि या सजीव द्यूत (तीतर, बटेर, मुर्गादि लड़ाना), ४३. शुकसारिका-प्रलापन (चिड़ीबाज़ी), ४४. उत्सादन (उबटन बनाना, लगाना और शरीर का दबाना मालिश करना), ४५. केशमार्जनकौशल, ४६. अक्षरमुष्टिका कथन (संक्षेप में लिखा हुआ पढ़ना), ४७. म्लेक्षित विकल्प (शब्दों का गूढ़ अर्थ समझना, जैसे अग्नि से ३ की संख्या, वेद से ४ की संख्या), ४८. देशभाषाविज्ञान (देश-देश की भाषा समझना), ४९. पुष्पशकटिका (बच्चों के लिए फूलों की गाड़ी बनाना), ५०. निमित्तज्ञानशुभाशुभदेशपरिज्ञान फल (गुप्त बातों को वर्तमान दशा देखकर बतलाना), ५१. यन्त्रमात्रिका (लड़ाई के लिए यंत्रों की घटना जानना), ५२. धारणमात्रिका (स्मरण-शक्ति बढ़ाना), ५३. समवाच्य, समपाठ्य या सम्पाद्य (बिना पढ़े हुए को दूसरे से सुनकर पढ़ना या सुनाना), ५४. मानसीकाव्यक्रिया (आशु काव्य-रचना और दूसरे के मन की बात जानना), ५५. अभिधान कोष (कोष-रचना), ५६. छन्दोज्ञान, ५७. क्रियाविकल्प

(काव्य-रचना के लिए अलंकारों का ज्ञान), ५८. छलितक योग (ऐयारी), ५९. वस्त्रगोपन (फटे कपड़ों को इस प्रकार पहनना कि मालूम न पड़े), ६०. द्यूतक्रीड़ा, ६१. आकर्ष्य क्रीड़ा (पाँसा खेलना), ६२. बालक्रीड़न कर्म (बालकों के लिए खिलौने बनाना), ६३. वैनयिकी वैजयिकी विद्या (विनय और विजय के उपाय), ६४. वैतालिकी व्यायामिकी विद्या (भूत, प्रेत और दाँवपेंच आदि)।

कलिंग

देश विशेष जो गोदावरी और वैतरणी नदियों के बीच स्थित था।

कल्कि

भगवान् विष्णु का दसवाँ अर्थात् अन्तिम अवतार जो पुराणों के अनुसार कलियुग के अन्त में संभल (मुरादाबाद) में एक कुमारी कन्या के गर्भ से होगा।

कल्प

सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग मिलाकर एक हजार चतुर्युगों का एक कल्प और ब्रह्मा का एक दिन माना जाता है जो इस संसार के ४३२०००००० (४३ करोड़ २० लाख) वर्ष के समान है अर्थात् १४ मन्वन्तर के समान; छह वेदांगों में से वेद का एक अंग।

कल्पतरु

दे० 'कल्पवृक्ष'।

कल्पद्रुम

दे० 'कल्पवृक्ष'।

कल्पवृक्ष

समुद्र-मंथन के फलस्वरूप प्राप्त एक अविनश्वर वृक्ष जो देवलोक में है। यह वृक्ष इन्द्र को मिला था। यह मनोवांछित फल देने वाला माना गया है और इसकी आयु एक कल्प की मानी गई है।

कल्पसूत्र

ग्रन्थ जिसमें यज्ञ आदि कर्मों की पद्धतियों का निरूपण किया गया है।

कश्यप

अदिति और दिति के पति एक महर्षि; गरुड़ का एक नाम; सप्तर्षि-मण्डल का एक तारा।

### कश्यप-स्त्री

तेरह मानी गई हैं :—

दिति, अदिति, कद्रू, विनता, श्रीधाम्मा, भानुयोगेश्वरी, श्रोणतिलका, षण्नेत्रिका, पवनावती, मेघावती, कतकदंश्या, वन्ध्या, कनकमाला ।

### कष्ट

आठ माने गए हैं :—

पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार ।

अथवा—

अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेशन ये पाँच क्लेश और दैहिक, दैविक, भौतिक तीन ताप ।

### कांची

आधुनिक कांजीवरम् नगर ।

### कांडर्षि

वह ऋषि जिसने कर्म, ज्ञान, उपासना जैसे वेद के किसी कांड पर विचार किया हो, उदाहरणार्थ—जैमिनि ।

### काकभुशुंडि

एक ब्राह्मण जो लोमश ऋषि के शाप से काक हो गए थे, किन्तु राम के अनन्य भक्त थे। तुलसीकृत 'रामचरितमानस' में वक्ता-श्रोता पद्धति के अन्तर्गत इनका उल्लेख होता है ।

### काकुत्स्थ

ककुत्स्थ राजा के वंशधर; सूर्यवंशी राजाओं की उपाधि विशेष ।

### कागभुसुंड

दे० 'काकभुशुंडि' ।

### कात्यायन

कत ऋषि के गोत्र में उत्पन्न एक प्रसिद्ध वैयाकरण जिन्होंने पाणिनि के सूत्रों को पूर्ण करने के लिए वार्तिक की रचना की; वररुचि नामक व्याकरण का वार्तिक बनाने वाले; कात्यायन सूत्र नामक धर्म-शास्त्र के निर्माता ।

वास्तव में तीन कात्यायन प्रसिद्ध हैं :—

एक विश्वामित्र के वंशज, दूसरे गोभिल के पुत्र और तीसरे सोमदत्त के पुत्र वररुचि कात्यायन । पाली व्याकरण के रचयिता एक बौद्ध आचार्य का नाम भी कात्यायन है ।

कात्यायनी

दुर्गा और पार्वती का एक नाम; कात्यायन ऋषि की पत्नी।

कात्यायनी-पुत्र

कार्तिकेय।

कान्यकुब्ज

कन्नौज, एक प्राचीन प्रान्त का नाम।

कापालिक

शैव या वाम मार्ग का एक सम्प्रदाय जिसके साधु अपने पास खोपड़ी रखते हैं और उसी में खाना राँध कर खाते हैं। ये साधु तांत्रिक होते थे और मद्य-मांस का सेवन करते थे।

कापालिन

शिवजी का एक नाम।

कामड़िया

रामदेव सम्प्रदाय के चमार साधु।

कामदेव

ऋग्वेद में उल्लिखित इच्छा ही कालान्तर में प्रेम के देवता कामदेव के रूप में प्रसिद्ध हुई। इस सृष्टि में सर्वप्रथम काम की उत्पत्ति हुई। तैत्तिरीय ब्राह्मण में इसे श्रद्धा का पुत्र कहा गया है। हरिवंश पुराण के अनुसार यह लक्ष्मी का पुत्र है। कुछ ग्रन्थों में इसे ब्रह्मा का पुत्र बताया जाता है। इनका नाम वैसे बिना माता-पिता के माना जाता है। रति इनकी पत्नी है। शंकर द्वारा भस्म किए जाने के बाद यह अनंग नाम से प्रसिद्ध हुए, किन्तु कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न के रूप में इनका जन्म हुआ। प्रद्युम्न के पुत्र का नाम अनिरुद्ध और पुत्री का नाम तृषा मिलता है; जीवन के चार पदार्थों में से एक।

कामदेव

कामदेव के पाँच बाण :—

१. आकर्षण, २. वशीकरण, ३. उन्मादन, ४. द्रविण और ५. शोषण। इन पाँच बाणों के ये नाम भी मिलते हैं :—

१. मोहन, २. उन्मादन, ३. संतपन, ४. शोषण और ५. निश्चेष्ट-करण।

इन पाँच बाणों के पाँच पुष्प हैं :—

१. अरविन्द (लाल कमल), २. अशोक, ३. आम्रमंजरी, ४. नव-मल्लिका (चमेली) और ५. नीलोत्पल।

कामधेनु

वह पवित्र गाय जो मनमाँगी इच्छा पूर्ण करती है; वसिष्ठ की शवला या नंदिनी नाम की गाय जिसके कारण उनका विश्वामित्र से युद्ध हुआ।

कामरूप

असम में गौहाटी (गुवाहाटी) का प्रान्त जहाँ कामाख्या देवी का मन्दिर है।

कामाक्षी

तंत्र के अनुसार देवी की मूर्ति।

कामाख्या

देवी का एक रूप जिनका मन्दिर असम के गुवाहाटी प्रान्त में है।

कामवशायिता

सत्यसंकल्पता जो योगियों के आठ ऐश्वर्यों में से एक है।

कामसूत्र

वात्स्यायन द्वारा रचित कामशास्त्र अर्थात् वह शास्त्र जिसमें स्त्री-पुरुषों के परस्पर समागम आदि का वर्णन है।

कामायनी

वैवस्वत मनु की पत्नी।

कामेश्वरी

काख्या देवी की पाँच मूर्तियों में से एक; तंत्र के अनुसार भैरवी।

कायव्यूह

योगियों की अपने कर्मों के भोग के लिए चित्त में एक-एक इन्द्रिय और अंग की कल्पना की क्रिया।

कारण शरीर

सुषुप्त अवस्था का वह कल्पित शरीर जिसमें इंद्रियों के विषय-व्यापार का तो अभाव रहता है, पर अहंकार आदि का संस्कार रह जाता है (वेदान्त)।

कारिका

काव्य, दर्शन, व्याकरण, विज्ञान संबंधी प्रसिद्ध पद्यात्मक व्याख्या।

कारूं

हज़रत मूसा का चचेरा भाई जो अत्यन्त धनी, किन्तु सूम था। (कारूं का ख़ज़ाना = अतुल धन-सम्पत्ति)

कार्तवीर्य

हैल्यराज कृतवीर्य का पुत्र जिसकी राजधानी माहिष्मती नगरी थी। कार्तवीर्य के अन्य नाम सहस्रबाहु या सहस्रार्जुन अधिक प्रसिद्ध हैं।

कार्तिकेय

कृत्तिका नक्षत्र में उत्पन्न होने वाले शिवपुत्र स्वामि कार्तिक; स्कन्द; षडानन। इनके छह मुख माने जाते हैं और देवताओं के सेनानायक हैं। शिवजी के वीर्य को अग्नि के कबूतर का रूप धारण कर पान किया जिसके फलस्वरूप स्कंद की उत्पत्ति हुई। मोर इनका वाहन है।

काल

भूत, भविष्य, वर्तमान अथवा प्रातः, मध्याह्न, सायं।

कालकंठ

शिव, महादेव; नीलकंठ पक्षी।

कालकूट

वह विष जो समुद्र-मन्थन के समय निकला था और जिसे शिवजी ने अपने कण्ठ में रख लिया था।

कालनिशा

दिवाली की रात।

कालनेमि

रावण का चाचा (मामा होने का उल्लेख भी मिलता है) जिसे रावण ने हनुमान जी को मार डालने के लिए भेजा था, किन्तु जो स्वयं हनुमान जी द्वारा मारा गया; हिरण्यकशिपु का पुत्र; एक और राक्षस का नाम जिसके १०० पुत्र थे, जिसने कुबेर, वरुण आदि लोकपालों पर विजय प्राप्त कर स्वर्ग पर अपना अधिकार कर लिया था और अन्त में जिसे विष्णु ने मारा।

कालपुरुष

भगवान् का विराट् रूप।

कालभैरव

शिवजी के मुख्य गणों में से एक।

कालयवन

हरिवंश पुराण के अनुसार यवन जाति का राजा जिसने श्रीकृष्ण पर मथुरा में, जरासंध के कहने से, चढ़ाई की थी और जो श्रीकृष्ण की युक्ति से राजा मुचुकुन्द द्वारा भस्म किया गया था।

### कालरात्रि

प्रलय की वह रात जिस समय सृष्टि का अन्त हो जाता है, केवल नारायण ही बचते हैं; दिवाली की काली रात; यमराज की बहिन जो सब प्राणियों का नाश करती है; मनुष्य की आयु के सतहत्तरवें वर्ष के सातवें महीने के सातवें दिन की रात्रि जिसके बाद वह नित्यकर्म आदि से मुक्त समझा जाता है।

### कालाग्नि

प्रलय-काल की अग्नि; प्रलयाग्नि के अधिष्ठाता रुद्र।

### काला पहाड़

बहलोल लोदी का एक भांजा जो सिकन्दर लोदी से लड़ा था; मुर-शिदाबाद के नवाब दाऊद का एक सेनापति जो अत्यन्त क्रूर और कट्टर मुसलमान था; भयंकर।

### कालिका पुराण

एक उपपुराण जिसमें कालिका देवी के माहात्म्य का वर्णन है।

### कालियदमन

श्रीकृष्ण की उपाधि।

### कालिय नाग

गरुड़ के डर से कालीदह (दे०) में रहने वाला एक नाग। अन्त में कृष्ण ने इसका वध किया और सब लोगों को अभयदान दिया।

### कालीदह

वृन्दावन में यमुना की धारा में ब्रज भूमि में एक दह या कुंड। गरुड़ के डर से यहाँ कालिय नाग निवास करता था।

### कावेरी

दक्षिण भारत की एक नदी।

### काशिका

जयदित्य और वामन की बनाई हुई पाणिनीय व्याकरण पर एक वृत्ति; काशीपुरी।

### काशी

सप्त मोक्षपुरियों में से एक—आधुनिक बनारस; काशी के एक राजा का नाम जो अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका का पिता था।

काशी-करवट

काशी में एक स्थान (कुंआ) जहाँ लोग आरे से कट कर प्राण त्यागना पुण्य कार्य समझते थे।

किंपुरुष

एक प्राचीन जाति; किन्नर; वर्णसंकर।

किन्नर

संगीत-प्रेमी एक प्राचीन जाति; उप देवता जिनका मुख घोड़े के समान माना गया है।

किरात

हिमालय के पूर्वी भाग की एक पहाड़ी जंगली जाति जो वन-जन्तुओं को मार कर उनके मांस पर निर्वाह करती थी; किरात का रूप धारण करने वाले शिवजी का नाम।

किर्मीर

एक राक्षस जिसे भीम ने मारा था।

किशोर

ग्यारह से पन्द्रह वर्ष तक का बालक।

किष्किन्धा

मैसूर के आसपास का एक प्रदेश या इस प्रदेश में स्थित एक पहाड़ का नाम।

कीकट

मगध या आधुनिक बिहार प्रान्त का वैदिक नाम।

कीचक

राजा विराट का साला जिसने पाण्डवों के अज्ञातवास के समय द्रौपदी के साथ अनुचित व्यवहार करने की चेष्टा की और भीम द्वारा मारा गया। कीचक विराट की सेना का प्रधान सेनापति भी था।

कीलक

वह मंत्र जिससे किसी दूसरे मंत्र का प्रभाव नष्ट हो जाय; तंत्र का एक देवता।

कीलाक्षर

कील के आकार की प्राचीन बाबुल की लिपि।

कुंड

पाँच पवित्र कुण्ड हैं :—
ब्रह्म कुण्ड, विष्णु कुण्ड, रुद्र कुण्ड, सरस्वती कुण्ड और अग्नि कुण्ड (जो केदारनाथ के पास स्थित पुण्य स्थान त्रियुगीनारायण में है और जहाँ शिव-पार्वती का विवाह सम्पन्न हुआ था)।

कुंडलिनी

हठयोग के अनुसार वह शक्ति जो मूलाधार चक्र में सुषुम्ना नाड़ी और नाभि के निकट मानी गई है। इसी शक्ति को योगी ऊर्ध्वगामी बनाता है।

कुंति

दे० 'कुंती'।

कुंति

राजा ऋथ के पुत्र का नाम।

कुंतिभोज

एक यादववंशी राजा जिसने सन्तान न होने के कारण कुन्ती या पृथा को गोद लिया था।

कुंती

शूरसेन राजा की औरसी पुत्री जिसका नाम पृथा था और कुन्तिभोज ने जिसे गोद लिया था। यह राजा पाण्डु की पटरानी थी और कर्ण (कुमारी अवस्था में उत्पन्न), युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन इसके पुत्र थे।

कुंभकर्ण

रावण का भाई जो साल में छह महीने सोता था, छह महीने जागता था। यह राम-रावण युद्ध में मारा गया।

कुंभज

अगस्त्य, वसिष्ठ, द्रोणाचार्य।

कुंभजात

दे० 'कुंभज'।

कुंभयोनि

दे० 'कुंभज'।

कुंभसंभव

दे० 'कुंभज'।

**कुंभीपाक**

एक नरक जहाँ पशु-पक्षियों को मार कर खाने वाला उबलते तेल में डाला जाता है या कुम्हार के बर्तनों की तरह अवा में पकाया जाता है।

**कुटज**

अगस्त्य मुनि।

**कुटीचक्र**

वह संन्यासी जिसने शिखा और सूत्र का परित्याग न किया हो।

**कुत्ता**

चाणक्य ने इसके छह गुण माने हैं :—
बह्वाशी स्वल्पसन्तुष्टः सुनिद्रः शीघ्रचेतनः।
प्रभुभक्तश्च, शूरश्च षडेते च शुनो गुणाः ।।

**कुबेर**

धन के देवता और उत्तर दिशा के स्वामी। इन्हें इन्द्र का भण्डारी और महादेव जी का मित्र माना जाता है। ये विश्रवस् ऋषि के पुत्र और रावण के सौतेले भाई थे। इनके एक आँख, तीन पैर और आठ दाँत माने गए हैं। इनके पुत्र का नाम नलकूबर, पुरी का नाम 'अलकापुरी', उद्यान का नाम 'चैत्ररथ' और विमान का नाम 'पुष्पक' हैं। कुबेर के ऐश्वर्य के अन्तर्गत 'अष्ट सिद्धियाँ' और 'नव निधियाँ' (दे०) मानी जाती हैं।

**कुब्जा**

राजा कंस की जवान कुबड़ी दासी जो श्री कृष्ण से प्रेम करती थी और जिसका कुबड़ापन श्री कृष्ण ने दूर किया; कुबड़ी होने के कारण कैकेयी की मंथरा दासी भी कुब्जा कही जा सकती है।

**कुमारिल भट्ट**

एक मीमांसक जिन्होंने बौद्धों और जैनों को परास्त किया।

**कुरान**

मुसलमानों का धर्म-ग्रन्थ।

**कुरु**

एक सोमवंशी राजा जिसके वंश में पांडु और धृतराष्ट्र हुए; वैदिक आर्यों का एक कुल; हिमालय के उत्तर और दक्षिण का प्रदेश। आधुनिक काल में पश्चिमी उत्तर प्रदेश और हरियाणा के आसपास के भूमिभाग का प्राचीन नाम।

कुरुक्षेत्र

वह भूमिभाग जहाँ महाभारत का युद्ध हुआ था और जो आधुनिक अम्बाला और दिल्ली के बीच में था।

कुरुजांगल

प्राचीन पांचाल (आधुनिक रुहेलखण्ड) के पश्चिम का भूमिभाग।

कुलूत

कुलू नामक एक देश विशेष और उसके राजा।

कुवलयापीड़

कंस का एक हाथी जिसे श्री कृष्ण ने मारा।

कुवलयाश्व

यज्ञ विध्वंस करने वाले पातालकेतु को मारने के लिए सूर्य द्वारा पृथ्वी पर भेजा गया घोड़ा; धुंधमार राजा; ऋतुध्वज राजा।

कुश

श्री राम के पुत्र का नाम।

कुशद्वीप

सात द्वीपों (दे०) में से एक जो घृत-समुद्र से घिरा हुआ है।

कुशध्वज

जनक के छोटे भाई जिनकी कन्याएँ भरत और शत्रुघ्न को ब्याही गई थीं।

कुशिक

एक प्राचीन आर्य-वंश जिसमें विश्वामित्र उत्पन्न हुए और कौशिक कहलाए; एक राजा जो विश्वामित्र के पितामह और गाधि के पिता थे।

कुशावती

श्री राम के पुत्र कुश की राजधानी का नाम।

कुशीलव

वाल्मीकि की एक उपाधि।

कूर्म पुराण

दे० 'पुराण'।

कृत्तिका

एक नक्षत्र।

**कृत्तिवास**

महादेव जी का एक नाम ।

**कृत्या**

एक भयंकर राक्षसी जिसे तांत्रिक शत्रु को नष्ट करने के लिए भेजते हैं ।

**कृपी**

शरद्वान् की पुत्री, कृपाचार्य की बहिन और द्रोणाचार्य की पत्नी ।

**कृष्ण**

विष्णु भगवान् के पूर्णावतार जो वसुदेव-देवकी के पुत्र-रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुए और नंद-यशोदा के यहाँ पालित-पोषित होकर बड़े हुए । उन्होंने कंस तथा अन्य अत्याचारियों का दमन किया, ब्रज में अनेक प्रकार की लीलाएँ कीं, भारत की राजनीति में भाग लिया, महाभारत के युद्ध में अर्जुन के सारथी बने और गीता का उपदेश दिया ।

**कृष्ण**

एक असुर जिसे इन्द्र ने मारा; वेद का एक मंत्रद्रष्टा ऋषि; अथर्व-वेद के अन्तर्गत एक उपनिषद् ।

**कृष्णद्वैपायन**

पराशर के पुत्र व्यास जी का नाम जो अनेक पुराणों और महाभारत के रचयिता माने जाते हैं । व्यास नाम का कोई एक व्यक्ति था या एक उपाधि थी, यह अभी निश्चित नहीं है ।

**कृष्णाष्टमी**

भादों के कृष्ण-पक्ष की अष्टमी जिस दिन भगवान् कृष्ण का जन्म हुआ ।

**केकय**

व्यास और शाल्मली नदी के उस पार का भूमिभाग जो अब कश्मीर में है और इसका आधुनिक नाम 'कक्का' है । राजा दशरथ की पत्नी और भरत की माता कैकेयी यहीं की थीं; केकय देश के राजा जो दशरथ के श्वसुर और कैकेयी के पिता थे ।

**केतुमती**

रावण की नानी और सुमाली राक्षस की पत्नी ।

**केतुवृक्ष**

कदंब, पीपल, बरगद और जामुन—इन चार पेड़ों का नाम । ये पेड़ मेरु पर्वत के चारों ओर पाए जाते थे ।

**केदारनाथ**

हिमालय के भीतरी भाग में स्थित शिवलिंग।

**केवलात्मा**

पाप और पुण्य की भावना से रहित ईश्वर।

**केशरी**

हनुमान जी के पिता का नाम।

**केशव**

विष्णु का नाम जो ब्रह्म रुद्रादिकों पर दया करते हैं; केशी दैत्य को मारने वाले; विष्णु की अनेक मूर्तियों में से एक; श्री कृष्ण का एक नाम।

**केशिनी**

रावण की माता का नाम। इसका दूसरा नाम कैकसी भी है; पार्वती की एक सहचरी।

**केशी**

श्री कृष्ण के हाथ से मारा गया एक राक्षस; देवसेना का हरण करने वाला और इन्द्र द्वारा मारा गया एक और राक्षस; श्री कृष्ण की उपाधि।

**कैकसी**

सुमाली राक्षस की पुत्री और रावण की माता। दे० 'केशिनी'।

**कैकेयी**

केकय-नरेश की बेटी, महाराज दशरथ की छोटी रानी और भरत की जननी।

**कैटभ**

एक राक्षस जो विष्णु के हाथ से मारा गया।

**कैलास**

हिमालय की हिमाच्छादित चोटी जहाँ शिवजी का निवास माना जाता है। यह चोटी अब तिब्बत में है।

**कैवल्य**

मुक्ति, मोक्ष; एक उपनिषद्।

**कोकशास्त्र**

कोक कवि द्वारा रचित रतिशास्त्र।

**कोटवी**

दुर्गा देवी; बाणासुर की माता का नाम।

कोण

दो प्रधान दिशाओं के बीच की दिशा जो चार हैं :—अग्नि, नैर्ऋति, ईशान और वायव्य ।

कोश

आत्मा के पाँच प्रकार के कोश या शरीर हैं :—
अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश, आनन्दमय कोश ।

कोसल या कोशल या कोसला

अयोध्या नगरी का नाम ।

कौटिल्य

प्रसिद्ध नीतिकार चाणक्य का नाम ।

कौन्तेय

कुन्ती के पुत्र—युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन ।

कौमोदकी या कौमोदिकी या कौमोदी

भगवान् विष्णु की गदा का नाम ।

कौरव

राजा कुरु की सन्तान । सामान्यत: धृतराष्ट्र के दुर्योधनादि सौ पुत्र कौरव नाम से पुकारे जाते हैं ।

कौशल्या या कौसल्या

महाराज दशरथ की महारानी और श्री राम की जननी ।

कौशिक

दे० 'कुशिक' ।

कौषीतकी

ऋग्वेद की एक शाखा; ऋग्वेद के अन्तर्गत एक ब्राह्मण और उपनिषद् ।

कौस्तुभ

समुद्र-मन्थन के समय प्राप्त एक मणि जिसे भगवान् विष्णु अपने वक्षस्थल पर धारण करते हैं ।

क्रमसंन्यास

वह संन्यास जो ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ के बाद लिया जाय ।

क्रॉस

ईसाई मत में वह सूली जिस पर यहूदियों ने ईसा को चढ़ाया था । क्रॉस ईसाइयों का धर्म-चिह्न है ।

क्लेश

पाँच प्रकार के होते हैं :—
अविद्या, अस्मिता, अभिनिवेश, राग, द्वेष। इन्हें और त्रयताप को मिलाकर आठ प्रकार के कष्ट होते हैं।

क्षपणक

बौद्ध संन्यासी या दिगम्बर जैन भिक्षु।

क्षेमकरी (छेमकरी)

एक प्रकार की चील जिसका गला सफेद होता है।

## ख

खंजन

आँख के आकार का एक पक्षी जो शरद् ऋतु से लेकर शीत काल तक दिखाई देता है।

खंड

खण्ड नौ होते हैं :—इलावृत्ति, रम्यक्, हिरण्यमय, कुरु, हरि, भारत, केतुमाल, भद्राश्व, किंपुरुष।

खंडकथा

कथा का एक प्रकार जिसका नायक मंत्री अथवा ब्राह्मण होता है और जिसमें चार प्रकार का विरह रहता है।

खंडपरशु

शिव, विष्णु और परशुराम का नामान्तर।

खंड प्रलय

चतुर्युगी व्यतीत हो जाने पर होने वाली प्रलय।

खगोल विद्या

जिस विद्या से आकाश के नक्षत्रों, ग्रहों आदि का ज्ञान प्राप्त हो।

खग्रास

ऐसा ग्रहण जिसमें सूर्य या चन्द्रमा पूर्ण रूप से ढक जाय।

खड्गपत्र

यमपुरी का एक पेड़ जिसकी पत्तियाँ तलवार के आकार की होती हैं।

खरदूषण

रावण के भाई खर और दूषण नामक राक्षस। इनका वध श्री राम ने किया था।

**खरमास (खरवाँस)**

पूस और चैत के महीने जब सूर्य धन और मीन का होता है। इन महीनों में कोई भी मांगलिक कार्य वर्जित है।

**खस्वस्तिक**

सिर के ऊपर आकाश में माना गया कल्पित विन्दु। यह पादविन्दु का उलटा है।

**खांडव**

कुरुक्षेत्र के निकट एक वन। यज्ञों में अत्यधिक घी पी जाने के कारण अग्निदेव जब मन्दाग्नि से पीड़ित हुए तो श्री कृष्ण ने अर्जुन की सहायता से इन्द्र के इस प्रिय वन को जलाया और अग्नि की मन्दाग्नि दूर हुई तथा अग्नि ने श्री कृष्ण और अर्जुन को वरुण से कई तरह के आयुध दिलवाए, जैसे—गाण्डीव, अक्षय तरकस, कपिध्वज वाला रथ और उसके साथ चार सफेद घोड़े।

**खाद्य पदार्थ**

दे० 'पदार्थ'।

**खेचर**

आकाशचारी; सूर्य, चन्द्र आदि ग्रह; पक्षी; भूत-प्रेत; विमान; राक्षस; बादल; तारे; देवता।

**खेचरी गुटका**

एक योगसिद्ध गोली जिसके मुंह में रखने से आकाश में उड़ने की शक्ति आ जाती है।

**खेचरी मुद्रा**

योग-साधन की एक मुद्रा जिसमें जीभ को उलट कर तालू से लगाते हैं और दृष्टि मस्तक पर लगाते हैं।

## ग

**गंगा**

भारतवर्ष की एक पुराणप्रसिद्ध और पवित्र नदी जिसे, पौराणिक कथाओं के अनुसार, सगर के साठ हजार पुत्रों को तारने के लिए महाराज भगीरथ पृथ्वी-तल पर लाए थे। गंगा विष्णु के चरणों से निकल कर, ब्रह्मा के कमण्डलु और शिवजी की जटाओं में होती हुई पृथ्वी पर आती है। गंगा के वेग को रोकने के लिए ही शिवजी ने उसे जटाओं में धारण किया। गंगा प्रमुखतः तीन मानी गई हैं :—मन्दाकिनी, भागीरथी, प्रभावती।

**गंगाजली**

वह पात्र जिसमें गंगाजल रखा जाता है।

**गंगापुत्र**

वे ब्राह्मण (पंडे) जो गंगा या अन्य नदियों के किनारे दान लेते हैं।

**गंगा सागर**

पश्चिमी बंगाल में वह स्थान जहाँ गंगा समुद्र में गिरती है। अनेक व्यक्ति वहाँ मानता मानने जाते हैं।

**गंधक**

पार्वती के रज से उत्पन्न।

**गंध मादन**

एक पर्वत जो मेरु पर्वत के पूर्व में स्थित माना गया है। यहाँ नर-नारायण ने तपस्या की थी। हनुमान जी यहाँ उस समय कदली वन में रहते थे जब सौगन्धिक पुष्प की खोज करते हुए भीम से उनकी भेंट हुई थी।

**गंधर्व**

देवताओं के गवैया। यही कारण है कि संगीत-विद्या का नाम गंधर्व-विद्या भी है। गंधर्वों का राजा चित्ररथ माना जाता है। गंधर्वों के ११ गण हैं :—अश्राज्य, अंधारि, वंभारि, शूर्यवर्चा, कृधु, हस्त, स्वहस्त, स्वन्, मूर्धन्वा, विश्वावसु, कृशानु। इनमें प्रधान गंधर्व माने गए हैं :—
हाहा, हूहू, हंस, चित्ररथ, विश्वावसु, गोमायु, तुंबुरु, नंदि। (अग्निपुराण)

**गंधर्व विवाह**

आठ प्रकार के विवाहों (दे०) में से एक। यह विवाह युवक-युवती के गोपनीय प्रेम-बन्धन के आधार पर होता है। इस विवाह में न तो किसी की अनुमति की आवश्यकता पड़ती है और न किसी रीति-रस्म की।

**गंधर्व वेद**

चार उपवेदों में से एक वेद। यह सामवेद का उपवेद है और संगीत-विद्या से संबंध रखता है।

**गण**

अक्षौहिणी का एक अंग जिसमें २७ रथ, २७ हाथी, ८१ घोड़े और १३५ पैदल सिपाही रहते थे। इस संबंध में ऐसा उल्लेख भी मिलता है :—२९ रथ, ८१ घोड़े और १३५ पैदल; छन्दशास्त्र में आठ गण माने गए हैं :—भगण, जगण, यगण, सगण, रगण, तगण, मगण, नगण।

**गणदेवता**

अमरकोश के अनुसार गणदेवता इस प्रकार हैं :—

१२ आदित्य, १० विश्वदेव, ८ वसु, ४६ वायु, १२ साध्य, ११ रुद्र, ३६ तुषित, ६४ अभास्वा, २२० महाराजिक । आभास्वर, अनल, साध्य, तुषित, महाराजिक आदि गणदेवताओं के अनेक भेद हैं ।

**गणेश**

मनुष्य शरीर, किन्तु हाथी के सिर वाले देवता जो विघ्नविदारक माने जाते हैं । कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व गणेश जी को स्मरण किया जाता है । एक बार पार्वती जी के द्वार-रक्षक होने के नाते गणेश जी ने शिवजी को अन्दर जाने से रोका । शिवजी ने उनका सिर काट दिया । पार्वती जी के कहने-सुनने पर उन्हें पहले-पहल हाथी मिला और उसका सिर काट कर बालक के धड़ पर रख दिया और उसे अपने गणों में स्थान दिया । गणेशजी का वाहन मूषक है ।

**गनगौर**

चैत्र शुक्ल तृतीया जिस दिन स्त्रियाँ गणेश और गौरी की पूजा करती हैं ।

**गया**

बिहार में तीर्थ-स्थान जहाँ हिन्दू लोग पिण्डदान करने जाते हैं । यहीं बोध गया है जहाँ भगवान् बुद्ध को बोधि-वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था ।

**गरिमा**

शिवजी की अष्ट सिद्धियों में से एक जिसके सिद्ध हो जाने पर स्वेच्छापूर्वक अपने शरीर को जितना चाहें उतना बड़ा या भारी बनाया जा सकता है ।

**गरुड़**

अरुण देव के छोटे भाई और विष्णु के वाहन । ये पक्षिराज माने जाते हैं । (दे० 'अरुण')

**गरुड़ध्वज**

विष्णु की उपाधि ।

**गरुड़ांक**

विष्णु का नाम ।

**गर्ग**

ब्रह्मा के एक पुत्र, एक मुनि; एक पर्वत ।

गलमुंदरी

शिवजी की पूजा के समय गाल से ध्वनि उत्पन्न करना।

गव्य

दे० 'पंचगव्य'।

गांग

भीष्म और कार्तिकेय की उपाधि।

गांगायनि

भीष्म और कार्तिकेय की उपाधि।

गांगेय

भीष्म और कार्तिकेय की उपाधि।

गांडीव

अर्जुन के धनुष का नाम। यह धनुष उन्हें अग्नि से प्राप्त हुआ था। यह धनुष सोम ने वरुण को और वरुण ने अग्नि को दिया था। अग्नि ने उसे खाण्डव वनदहन (दे०) के समय अर्जुन को दे दिया।

गांदिगी

भीष्म और कार्तिकेय की उपाधि।

गांदिनी

भीष्म और कार्तिकेय की उपाधि; स्वफलक की पत्नी और अक्रूर की माता का नाम।

गांधर्व

आठ प्रकार के विवाहों में से एक; उपवेद जो सामवेद के अन्तर्गत माना गया है और जिसमें स्वर, तालादि का वर्णन है—संगीत-शास्त्र।

गांधार

संगीत के सात स्वरों में तीसरा; सरगम का तीसरा वर्ण; भारत और फारस के बीच का देश, आधुनिक कंधार। धृतराष्ट्र की पत्नी और दुर्योधन की माता गांधारी यहीं की थीं।

गांधारी

धृतराष्ट्र की पत्नी और दुर्योधनादि कौरवों की माता।

गांधारेय

दुर्योधन की उपाधि।

गाधि

विश्वामित्र के पिता का नाम।

**गाधिपुत्र**

दे० 'कुशिक'।

**गाधेय**

विश्वामित्र की उपाधि।

**गायत्र**

वैदिक छन्द विशेष जिसमें २४ अक्षर होते हैं; एक परम पवित्र वैदिक मंत्र (ओ३म् भूर्भुवः ...)।

**गायत्री मंत्र**

समस्त चराचर जगत का बीजरूप अण्ड जब फूटा तो उससे क्रमशः तीन नाद निकले—भूः (=यह लोक), भुवः (=पाताल लोक), स्वः (=स्वर्ग)। इन्हीं से गायत्री मंत्र प्रारम्भ होता है :—

'ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।'

ऋग्वेद का यह परम पवित्र मंत्र परब्रह्ममय माना जाता है।

**गार्गी**

गर्ग गोत्र में उत्पन्न एक प्रसिद्ध ब्रह्मवादिनी स्त्री; याज्ञवल्क्य ऋषि की पत्नी।

**गार्हपत्य**

अग्निहोत्र की अग्नि; तीन प्रकार की अग्नियों में से एक; वह स्थान जहाँ पवित्र अग्नि रखी जाय; गृहस्थ का पद और गौरव।

**गालव**

विश्वामित्र के एक शिष्य का नाम; एक वैयाकरण।

**गिरिव्रज**

जरासंध की राजधानी जो बाद को राजगृह कहलाई; केकय देश की राजधानी।

**गीता**

भारत का परम प्रसिद्ध ग्रन्थ जो महाभारत का अंश है। अर्जुन के मोहनाश के लिए भगवान् कृष्ण ने यह उपदेश कुरुक्षेत्र के मैदान में कौरव-पाण्डवों की युद्ध के लिए सन्नद्ध सेनाओं के बीच दिया था। कर्मयोग की कुंजी गीता में ही है।

**गुडाकेश**

अर्जुन; शिव।

गुण

बुद्धि के ये गुण हैं :—
शुश्रूषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा ।
ऊहापोहार्थविज्ञानं तत्वज्ञानां च धीगुण: ।।

गुण

ब्राह्मण के ये आठ गुण हैं :—
दया सर्वभूतेषु क्षांति: अनुसूया, शौचं ।
अनार्यसः मंगलम् अकार्पण्यम्, अस्पृहा, चेति ।।

गुण

राजा के छह गुण माने गए हैं :—
संधि, विग्रह, यान, आसन, संश्रय और द्वैध या द्वैधीभाव ।

गुण

सत्त्व, रज और तम । (दे० 'षट्गुण' भी)

गुल्म

सेना का वह भाग जिसमें ९ हाथी, ९ रथ, २७ घोड़े और ४५ पैदल होते थे ।

गुह्यक

कुबेर के खजाने की रक्षा करने वाले यक्ष ।

गुह्यपति

कुबेर की एक उपाधि ।

गृह्यसूत्र

गृह्यसूत्र के अनुसार गृहस्थ मुंडन, यज्ञोपवीत आदि संस्कारों का विधान करते हैं । गृह्यसूत्र संख्या में कई हैं ।

गोकर्ण

शैवों का तीर्थ-स्थान जो मलाबार में है ।

गोकुल

नंद-यशोदा का गाँव जो मथुरा के दक्षिण-पूर्व में है और जहाँ श्री कृष्ण का बाल्यकाल व्यतीत हुआ ।

### गोतम

सतानन्द के पिता और अहल्या के पति एवं अंगिरस गोत्री एक ऋषि विशेष।

### गोतमी

गोतम की पत्नी अहल्या।

### गोनर्द

महाभाष्य-प्रणेता पतंजलि की उपाधि। यही पतंजलि का जन्म-स्थान है।

### गोपाल

श्री कृष्ण की एक उपाधि।

### गोपाल तापनी या गोपाल तापनीय

एक उपनिषद् का नाम।

### गोपाष्टमी

कार्तिक शुक्ला अष्टमी।

### गोपीनाथ

श्री कृष्ण की एक उपाधि।

### गोमुखी

वह थैली जिसमें हाथ डाल कर माला फेरी जाती है; गंगोत्तरी में गो के मुख के आकार का वह स्थान जहां से गंगा निकलती है।

### गोमेध

एक यज्ञ जिसमें गौ से हवन किया जाता था।

### गोरखनाथ

नाथ-पंथी एक प्रसिद्ध योगी।

### गोलोक

श्री कृष्ण का लोक जो सब लोकों से श्रेष्ठ माना जाता है।

### गोवर्द्धन

वृन्दावन का एक पवित्र पर्वत। कुपित इन्द्र द्वारा की गई घनघोर वर्षा से ब्रज को बचाने के लिए श्री कृष्ण ने उसे उंगली पर उठा लिया था।

**गौतम**

भरद्वाज ऋषि का नाम; सतानन्द मुनि का गाम; कृपाचार्य का नाम जो द्रोणाचार्य के साले थे; बुद्धदेव का नाम; न्यायशास्त्र के प्रवर्त्तक का नाम; गौतम ऋषि का वंशज ऋषि; सप्तर्षि-मण्डल के तारों में से एक।

**गौतमी**

द्रोणाचार्य की स्त्री कृपी का नाम; गोदावरी नदी; बुद्धदेव द्वारा दी गई शिक्षा; गौतम द्वारा प्रवर्तित न्याय-दर्शन; कृपाचार्य की स्त्री; गौतम की पत्नी, अहल्या; दुर्गा।

**गौ पदार्थ**

ये छह माने गए हैं :—

गोमूत्र, गोबर, दूध, घी, दही, गोरोचन।

**गौरी शंकर**

शिवजी का नाम; हिमालय पर्वत की सबसे ऊँची चोटी (एवरेस्ट)।

**ग्रह**

नव ग्रह हैं :—

सूर्य, चन्द्र, मंगल, वृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु और बुध।

**ग्रहण**

चन्द्र और सूर्य के बीच जब पृथ्वी आ जाती है तो चन्द्र ग्रहण पड़ता है। सूर्य और पृथ्वी के बीच जब चन्द्रमा आ जाता है तो सूर्य ग्रहण पड़ता है।

## घ

**घटकर्ण**

रावण के भाई कुंभकर्ण का नामान्तर।

**घटयोनि**

अगस्त्य मुनि का नाम।

**घटसंभव**

अगस्त्य मुनि का नाम।

**घटी (घड़ी)**

चौबीस मिनट का समय। दिन-रात का बत्तीसवाँ भाग।

घटोत्कच

हिडिम्बा राक्षसी के गर्भ से उत्पन्न भीम का पुत्र।

घननाद

रावण के पुत्र मेघनाद का एक नाम।

घनश्याम

श्री कृष्ण का एक नाम।

घृताची

सरस्वती देवी; अप्सरा विशेष।

# च

चंडालिका

दुर्गा का नाम; एक प्रकार की वीणा।

चंडिका

दुर्गा, गायत्री देवी।

चंदेरीपति

शिशुपाल की उपाधि।

चंद्रकला

सोलह हैं :—

अमृता, मानदा, पूषा, पुष्टि, तुष्टि, रति, धृति, शशिनी (या शशनी) चन्द्रिका, कान्ति, ज्योत्स्ना, श्री, प्रीति, अंगदा, पूरणा, पूर्ण अमृता (या पूर्णामृता)।

चंद्रकान्ता

चन्द्रमा की स्त्री। चन्द्रमा की स्त्री का नाम रोहिणी भी है।

चंद्रभागा

पंजाब की चनाब नदी का प्राचीन नाम; दक्षिण भारत की एक नदी।

चंद्रदारा

२७ नक्षत्र जो दक्ष की कन्याएँ हैं और चन्द्रमा की स्त्रियाँ हैं।

**चंद्रवंश**

क्षत्रियों के दो कुलों में से एक जो पुरूरवा से प्रारंभ हुआ था।

**चंद्रहास**

रावण की तलवार का नाम।

**चकवा (चक्रवाक)**

एक जल-पक्षी जिसका अपनी मादा (चकई) से रात्रि के समय विरह हो जाता है। सामान्यतः इसे 'सुर्खाब' कहते हैं।

**चकोर**

तीतर की जाति का एक पहाड़ी पक्षी जो चन्द्रमा को देख कर बहुत प्रसन्न होता है।

**चक्र**

योग के सन्दर्भ में शरीर के ८ चक्र हैं :—

मूलाधार चक्र—स्थान योनि, चार दल, रक्त वर्ण, भूः लोक।
स्वाधिष्ठान चक्र—स्थान पेडू, षट् दल, सिन्दूर वर्ण, भुवः लोक।
मणिपूरक चक्र—स्थान नाभि, दस दल, नील वर्ण, स्वः लोक।
अनाहत चक्र—स्थान हृदय, द्वादश दल, अरुण वर्ण, महः लोक।
विशुद्ध चक्र—स्थान कण्ठ, षोडश दल, धूम्र वर्ण, जनः लोक।
आज्ञा चक्र—स्थान भ्रुवों के मध्य, दो दल, श्वेत वर्ण, तपः लोक।
शून्य चक्र—स्थान मस्तक, सहस्र दल, सत्यः लोक।

सुरति चक्र—यह सहस्रार (सहस्र दल कमल) के ऊपर माना गया है।
इनके ये नाम भी मिलते हैं :—
आधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध, ललना, भूचक्र, ब्रह्मरन्ध्र, ब्रह्मचक्र (=९)।

(दे० 'षट्चक्र' भी)

**चक्रतीर्थ**

नैमिषारण्य का तीर्थ विशेष (कुण्ड); दक्षिण में वह स्थान जहाँ ऋष्यमूक पर्वतों के बीच तुंगभद्रा नदी घूम कर बहती है।

**चक्रधर**

विष्णु और कृष्ण की उपाधि।

**चक्रपाणि**

विष्णु का नाम ।

**चक्रपूजा**

तांत्रिकों की एक पूजा-विधि ।

**चक्रवाल**

पुराणोल्लिखित एक पर्वत-शृंखला जो भूमण्डल को परिवेष्ठित किए हुए है और जो प्रकाश तथा अन्धकार की विभाजन-रेखा समझी जाती है ।

**चक्रायुध**

विष्णु का एक नाम ।

**चतुरंगिणी या चतुरंग**

रथ, गज, अश्व और पैदल सिपाही जिसमें ये चारों हों उसे चतुरंगिणी सेना कहते हैं । (दे० 'सेना')

**चतुरानन**

ब्रह्मा का एक नाम ।

**चतुर्भुज**

विष्णु का एक नाम ।

**चतुर्भुजा**

गायत्री के रूप में महाशक्ति ।

**चतुर्भाव**

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ।

**चतुर्मास**

चार मास की अवधि—आषाढ़ मास की शुक्ला ११ से कार्तिक शुक्ला ११ तक की अवधि ।

**चतुर्मुख**

ब्रह्मा जी ।

**चतुर्मूर्ति**

राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न रूप—इन चार मूर्तियों वाले विष्णु ।

## चतुर्युग

सतयुग या कृत युग (१७२८००० वर्ष), त्रेता (१२९६००० वर्ष), द्वापर (८६४००० वर्ष), और कलियुग (४३२००० वर्ष)। कुल ४३२०००० वर्ष का समय।

## चतुर्वर्ग

चार पुरुषार्थ :—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

## चतुर्वर्ण

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।

## चतुर्व्यूह

वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध—इन चार व्यूहों से युक्त महाविष्णु।

## चरक

वैद्यक शास्त्र के प्रधान आचार्य।

## चरखपूजा

देवी के उग्र रूप की पूजा जो चैत्र की संक्रांति को की जाती है।

## चरणामृत

घी, दूध, दही, शक्कर और शहद मिला कर बनाया हुआ जल जिससे किसी देवमूर्ति को स्नान कराया जाता है और तत्पश्चात् जिसे भक्त ग्रहण करते हैं।

## चर्मण्वती

चंबल नदी। यह नदी इटावा के पास यमुना में गिरती है।

## चांडाल

कोल, किरात, शबर, भील, केवट, पासी, मुसहर, भंगी, डोम, चमार, धोबी, भर, दुसाध, व्याध, नट, वेणुक (बाँस काटने वाला) आदि को 'चांडाल' शब्द के अन्तर्गत माना जाता है। इन्हें अस्पृश्य या अन्त्यज भी कहा जाता है।

## चांद्रमास

बारह हैं :—

माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष और पौष।

चांद्रमास का अर्थ है उतना काल जितना चन्द्रमा को पृथ्वी की एक परिक्रमा पूर्ण करने में लगता है; पूर्णिमा से पूर्णिमा या अमावस्या से अमावस्या तक का समय ।

## चांद्रायण

एक कठिन व्रत जिसमें चन्द्रमा के घटने-बढ़ने के अनुसार भोजन की मात्रा भी घटानी-बढ़ानी पड़ती है ।

## चाचर

होली में गाया जाने वाला एक प्रकार का गीत ।

## चाचरी

योग की एक मुद्रा ।

## चाणक्य

इन्हें विष्णुगुप्त (दे०) और कौटिल्य (दे०) भी कहते हैं। इन्होंने 'अर्थशास्त्र' नामक एक प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की। चाणक्य-नीति प्रसिद्ध है। इन्हीं ने नंदवंश को समूल उखाड़ कर चन्द्रगुप्त मौर्य को सिंहासन पर बिठाया। इनके समय में ही चन्द्रगुप्त मौर्य ने ग्रीक विजेता ऐलैग्ज़ैण्डर को पराजित किया था।

## चाणूर

कंस का एक सेवक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मल्ल-युद्ध में पछाड़ा ।

## चातक

पपीहा। एक पक्षी जो वर्षा ॠतु में स्वाँति नक्षत्र में गिरी बूँद को पाकर अत्यन्त प्रसन्न होता है ।

## चातुर्मास्य

यज्ञ विशेष जो प्रत्येक चार मास बाद अर्थात् कार्तिक, फाल्गुन और आषाढ़ के आरम्भ में किया जाता है ।

## चामुण्डा

दुर्गा देवी का एक भयानक रूप। इन्होंने शुंभ निशुंभ के चंड मुंड नामक दो दैत्य सेनापतियों का संहार किया था ।

## चाम्पिला

चम्पा अथवा आधुनिक चंबल नदी ।

## चार्वाक

एक नास्तिक दार्शनिक; महाभारत में उल्लिखित एक राक्षस जो पाण्डवों का शत्रु और दुर्योधन का मित्र था ।

चिंतामणि

विचारते ही इच्छित वस्तु देने वाला रत्न विशेष ।

चित्त

अन्तःकरण की अनुसंधानात्मक वृत्ति ।

चित्तभूमि

योग में चित्त की पाँच अवस्थाएँ :—

क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध ।

चित्रकूट

बाँदा ज़िले में तीर्थ-क्षेत्र जहाँ वनगमन के समय राम, सीता और लक्ष्मण का आगमन तथा निवास हुआ । यहाँ कामद गिरि, मन्दाकिनी, हनुमान-मंदिर, गुप्त गोदावरी, सीताकुण्ड, अनसूया जी आदि दर्शनीय और पवित्र स्थान हैं ।

चित्रगुप्त

यमराज (धर्मराज) के पेशकार जो जीवधारियों के पाप-पुण्य का लेखा रखते हैं और जो कायस्थों के कुलदेवता माने जाते हैं ।

चित्ररथ

गन्धर्वों के एक नेता का नाम; मुनि नाम्नी स्त्री के गर्भ से उत्पन्न कश्यप ऋषि के सोलह पुत्रों में से एक; सूर्य ।

चित्रांगद

राजा शांतनु का पुत्र; गंधर्व; विद्याधर ।

चित्रांगदा

अर्जुन की एक पत्नी; रावण की एक पत्नी ।

चीवर

बौद्ध भिक्षुओं के पहनने के वस्त्र का ऊपरी भाग; संन्यासियों का फटा-पुराना कपड़ा ।

चूड़ाकरण

हिन्दुओं में प्रचलित एक संस्कार जब बच्चे का पहले-पहल सिर मुँडवा कर चोटी रखवाई जाती है ।

चेकितान

एक यादववंशी राजा जो महाभारत के युद्ध में पाण्डवों की तरफ से लड़ा था; महादेव ।

चेदिराज

शिशुपाल का नाम। यह दमघोष राजा का पुत्र था और श्रीकृष्ण के हाथ से युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में श्रीकृष्ण का अपमान करने के कारण मारा गया।

चैतन्य महाप्रभु

बंगाल के एक प्रसिद्ध वैष्णव सन्त।

चैत्ररथ

कुबेर के बाग़ का नाम।

चौथ

मरहठों का लगाया हुआ कर जिसमें आमदनी या तहसील का चतुर्थांश ले लिया जाता था; भाद्र शुक्ल चतुर्थी का चन्द्रमा जिसे देख लेने से झूठा कलंक लग जाना माना जाता है।

चौमासा

वर्षा के चार महीने—आषाढ़, श्रावण, भादों और आश्विन (क्वाँर)।

च्यवन

एक ऋषि का नाम।

## छ

छांदोग्य

सामवेद का एक ब्राह्मण; छांदोग्य ब्राह्मण का उपनिषद्।

छाया

सूर्य की पत्नी का नाम।

छिन्नमस्ता

महाविद्याओं (दे०) में छठी देवी।

## ज

जंबूद्वीप

एक महाद्वीप। इसके नौ वर्ण विभाग माने जाते हैं :—
कुरु, हिरण्यमय, रम्यक्, इलाव्रत, हरि, केतुमाल, भद्राश्व, किन्नर और भारत।

**जगदंबा**

दुर्गा देवी की उपाधि।

**जगन्नाथ**

विष्णु का एक रूप जिसका मन्दिर उत्कल के पुरी नामक स्थान में है।

**जटायु**

गिद्ध जाति का पक्षी विशेष जिसने सीता जी की रक्षा के लिए रावण से युद्ध कर अपने प्राण गँवाए। (दे० 'अरुण')

**जठराग्नि**

इसे 'वैश्वानर' भी कहते हैं। उदर के भीतर खाद्य पदार्थों को पचाने वाली शक्ति।

**जड़ भरत**

ऋषभ देव के पुत्र भरत जो राज्य करने के बाद विरक्त होकर पुलस्त्याश्रम में रहने लगे। एक नवजात हिरण के बच्चे के पालन-पोषण में इतने मग्न हुए कि ईश्वर-भजन भी भूल गए। हिरण के बच्चे की चिन्ता में ही मृत्यु हुई। अगले जन्म में हिरण हुए। इन्हें पूर्व जन्म की स्मृति से छुटकारा न मिला और जब मृत्यु हुई तो फिर ब्राह्मण कुल में जन्म लिया। पूर्व जन्म की बात तब भी याद रही और ईश्वर-भजन में विघ्न न पड़े, इसलिए जड़ के समान रहने लगे। पिता ने बहुत कोशिश की कि वे वेदाध्ययन करें, किन्तु सफलता प्राप्त न हो सकी। पिता की मृत्यु के बाद घर छोड़ कर इधर-उधर घूमते रहे। एक बार सौवीर-राज के पालकी-वाहकों ने इनसे पालकी ढोने के लिए कहा तो इनकी अलसता देख कर राजा ने क्रोध किया, किन्तु तब भी जड़ भरत विचलित न हुए और तत्त्वज्ञान की बातें करने लगे। राजा ने इन्हें अपना गुरु स्वीकार किया।

**जनक**

मिथिला के राजा और सीता के पिता।

**जनमेजय**

महाराज परीक्षित के पुत्र और चन्द्रवंशी प्रसिद्ध राजा जिन्होंने अपने पिता को डसने वाले तक्षक नाग से बदला लेने के लिए नागयज्ञ किया और अन्त में आस्तिक ऋषि के समझाने पर उस यज्ञ को बन्द किया।

**जन्माष्टमी**

भाद्र कृष्णा अष्टमी, जिस दिन भगवान् कृष्ण का जन्म हुआ।

## जन्हतनया या जन्हुनंदिनी

गंगा।

## जमदग्नि

भृगुवंश के एक ऋषि और परशुराम के पिता। इनके पिता का नाम ऋचीक और माता का नाम सत्यवती था। इनकी मामी का नाम रेणु था जिसके गर्भ से इनके पाँच पुत्र उत्पन्न हुए थे। ये बड़े अध्ययनशील ौर वेदों के प्रसिद्ध ज्ञाता थे।

## जयन्त

इन्द्र के पुत्र उपेन्द्र का नाम। इसने कौए का रूप धारण कर सीता के पैर में चोंच मारी थी जिससे उनके रक्त का प्रवाह हुआ। श्रीराम ने सींक का बाण बनाकर उसके पीछे छोड़ा। अपनी रक्षा के लिए वह त्रिलोक में घूमा, लेकिन किसी ने उसे शरण न दी। अन्त में वह भगवान् के चरणों की शरण में ही आया। भगवान् ने उसकी एक आँख फोड़ दी। कहा जाता है तभी से कौए की एक ही आँख होती है।

## जयद्रथ

सिन्धु देश का राजा और दुर्योधन का बहनोई। यह दुःशला का पति था और अर्जुन के हाथ से महाभारत की लड़ाई में मारा गया।

## जय-पत्र

अश्वमेधीय घोड़े के माथे पर बँधा हुआ विजय-पत्र।

## जरत्कारु

एक ऋषि का नाम।

## ज़रथुस्त्र (ज़रदुश्त)

प्राचीन ईरान के आचार्य संत जिन्होंने पारसी धर्म की स्थापना की।

## जरासंध

जरासंध जब पैदा हुआ था तो उसके शरीर के दो हिस्से थे। जरा नाम की दासी द्वारा उन दो हिस्सों के जोड़े जाने से इसका नाम जरासंध पड़ा। यह बृहद्रथ का पुत्र और मगध देश का राजा था जिसकी पुत्री कंस को ब्याही गई थी। कंस के मारे जाने पर उसने १८ बार मथुरा पर चढ़ाई की जिसके फलस्वरूप यादवों को मथुरा छोड़ कर सुदूर समुद्रस्थित द्वारकापुरी में जाकर रहना पड़ा। अन्त में महाराज युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के समय श्रीकृष्ण की युक्ति से (तिनके

को चीर यह संकेत दिया कि इसे गिरा कर टाँग पकड़ कर चीर दो) भीमसेन ने इसका वध किया। जरासंध को जरायणि नाम भी दिया गया है।

जलधरी

वह अर्घा जिसमें शिवलिंग रहता है; जल का भरा हुआ घड़ा जो छेद करके शिवलिंग के ऊपर टाँगा जाता है।

जलहरी

दे० 'जलधरी'।

जह्नु

दे० 'जाह्नवी'।

जांबवती

जांबवान् की कन्या जिससे श्रीकृष्ण ने विवाह किया।

जांबवान्

रिक्षराज जिन्होंने लंका पर आक्रमण करने में भगवान् राम की सहायता की। ये सुग्रीव के मंत्री थे।

जातक

वे बौद्ध कथाएँ जिनमें भगवान् बुद्ध के पूर्व जन्मों का वर्णन किया गया है।

जातकर्म

जन्म के समय किया गया बालक का चौथा संस्कार।

जानकी

जनक की पुत्री—सीता जी।

जाबाल

एक मुनि जिनकी माँ का नाम जाबाला था।

जाबालि

कश्यप वंश के एक ऋषि जो महाराज दशरथ के गुरु थे।

जालंधरी विद्या

माया; इंद्रजाल।

जाह्नवी

गंगा नदी। जब भगीरथ गंगा को लेकर आ रहे थे, तो जह्नु ऋषि ने गंगा को पी लिया था और फिर कान से निकाल दिया था। इसलिए गंगा 'जाह्नवी' कहलाई।

### जिताष्टमी

एक व्रत जो पुत्रवती स्त्रियों द्वारा आश्विन कृष्णाष्टमी को रखा जाता है।

### जित्वरी

काशी का एक प्राचीन नाम।

### जिन

जैन अर्हंतों की उपाधि। जिसने अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर ली हो वह जिन। बौद्ध या जैन भिक्षुओं को भी जिन कहा जाता है।

### जिष्णु

सूर्य; इन्द्र; विष्णु; अर्जुन; कृष्ण।

### जीमूतवाहन

विद्याधरों के एक राजा का नाम; नागानन्द नाटक का प्रधान पात्र; इन्द्र।

### जीव

जीव या पिंडज चार प्रकार के हैं :—

जरायुज, अण्डज, स्वेदज और उद्भिज (उद्‌भिज)। इनके ये नाम भी मिलते हैं :—उद्‌भिज, स्थावर, मनुष्य और चतुष्पद।

### जीवमातृका

सात प्रकार की जीवमातृका हैं, जिनके नाम हैं :—

कुमारी धनदा नंदा विमला मङ्गला बला।
पद्‌मा चेति च विख्याताः सप्तैता जीवमातृकाः।

### जीवानुज

गर्गाचार्य मुनि जो बृहस्पति के वंश में हुए।

### जीविकोपार्जन

इसके साधन निम्नलिखित हैं :—

ऋत् (बाजार या खेत में पड़े धान्य-कणों को चुन कर खाना)।
अमृत (जो बिना माँगे मिल जाय)।
मृत (प्रतिदिन माँग कर खाना)।
प्रभृत (खेती करना)।
सत्यानृत (व्यापार करना जिसमें सच और झूठ दोनों का मिश्रण होता है)।

**जैन**

अहिंसा को परम धर्म मानने वाला और महावीर स्वामी द्वारा प्रचलित भारत का एक प्राचीन और प्रमुख धर्म। इसके दो सम्प्रदाय हैं—श्वेतांबर और दिगंबर। यह धर्म न तो वेदों को स्वीकार करता है और न ईश्वर को मानता है।

**जैनी**

जैन मत का मानने वाला।

**जैमिनि**

पूर्वमीमांसा दर्शन के प्रणेता महर्षि जो व्यास जी के चार मुख्य शिष्यों में से एक थे।

**ज्ञान काण्ड**

वेदों का वह भाग जो ब्रह्मज्ञान से संबंध रखता है। उदाहरण के लिए—उपनिषद्।

**ज्ञानेन्द्रिय**

नाक, कान, रसना, त्वचा और नेत्र (क्रमश: घ्राणेन्द्रिय, श्रवणेन्द्रिय, रसना, स्पर्शेन्द्रिय, दर्शनेन्द्रिय)।

**ज्योतिर्लिंग**

सोमनाथ (प्रभास क्षेत्र) में स्थित शिव के बारह लिंगों में से एक।

**ज्योनार**

भोज्य, भक्ष्य, लेह्य, चोष्य, पेय।

**ज्वाला देवी**

हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले के शारदा पीठ में स्थित देवी।

## ठ

**ठाढेश्वरी**

वे साधु जो दिन-रात खड़े ही रहते हैं।

## ड

**डमरु**

एक प्रकार का बाजा जो शिवजी को अत्यन्त प्रिय है। कापालिक शैवों का डमरु वाद्ययंत्र है। इसके दोनों सिरों पर चमड़ा मढ़ा रहता है।

### डाकिनी-शाकिनी

डाकिनी=एक पिशाची जो काली के गणों में है; डाइन; चुड़ैल; डंकिनी।

शाकिनी=डाइन; चुड़ैल।

## ढ

### ढुंढपाणि

दंडपाणि भैरव; शिवजी का एक गण।

### ढुंढि या ढुंढिराज

गणेशजी।

## त

### तंत्र

शिवजी द्वारा रचित शास्त्र और एक रहस्यमय उपासना-पद्धति। तंत्र ५ प्रकार के माने गए हैं :—वशीकरण, मारण, उच्चाटन, मोहन, आकर्षण। तंत्र-शास्त्र में पार्वती और महादेव का संवाद मुख्य होता है। इस शास्त्र के 'रुद्रयामल', 'मेरुतंत्र' आदि अनेक ग्रन्थ हैं।

### तक्षक

देवताओं का कारीगर; पातालवासी एक नाग।

### तक्षक

जनमेजय के पुत्र राजा परीक्षित को डसने वाला पाताल के आठ नागों में से एक। एक ऋषि की गर्दन में मरा हुआ साँप डाल देने के कारण राजा परीक्षित साँप द्वारा डसे जाने के लिए शापित हुए। यहीं से कलियुग का प्रारंभ माना जाता है। तक्षक संभवतः किसी अनार्य जाति से संबंधित था।

### तक्षशिला

भरत के पुत्र तक्ष की प्राचीन राजधानी। कहा जाता है कि जनमेजय ने यहीं नागयज्ञ किया था। यह नगर आधुनिक रावलपिंडी

(पाकिस्तान) के निकट था। आधुनिक काल में यह नगर खोद कर निकाला गया।

**तख़्त ताऊस**

शाहजहाँ द्वारा बनवाया गया मोर की शक्ल का अत्यन्त सुन्दर और रत्नजटित सिंहासन जिसे बाद में नादिरशाह अपने साथ ले गया (ताऊस=मोर)।

**तत्त्व**

पाँच हैं :—

आकाश, वायु, जल, अग्नि, पृथ्वी (या मिट्टी)।

**तथागत**

भगवान् बुद्ध का नाम।

**तन्मात्रा**

शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध। ये तन्मात्राएँ पंचभूत की हैं।

**तप्तकृच्छ**

प्रायश्चित्त के लिए किया गया एक कठोर व्रत।

**तप्त-मुद्रा**

शंख, चक्रादि के छापे जिन्हें वैष्णव लोग तपा कर अपने शरीर पर दाग लेते हैं।

**तलातल**

सात पातालों (दे०) में से एक।

**तांडव**

तण्ड नामक ऋषि द्वारा प्रचलित और सिखाया गया नृत्य।

दो प्रकार के नृत्य माने गए हैं—ताण्डव और लास्य। ताण्डव शिवजी का भयंकर नृत्य है और लास्य पार्वती का मधुर नृत्य। प्रलय के समय भगवान् शिव ताण्डव नृत्य करते हैं। 'पुंनृत्यं ताण्डवं प्रोक्तं स्त्रीनृत्यं लास्यमुच्यते।'

**ताजमहल**

शाहजहाँ द्वारा अपनी बेगम मुमताज़ महल की याद में बनवाया गया आगरे का संसार-प्रसिद्ध संगमर्मर का बना मकबरा।

**ताड़का**

सुकेतु की पुत्री, सुन्दर की भार्या और मारीच की माता जिसे विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा करते समय श्रीराम ने मारा।

ताड़केय

ताड़का का पुत्र, मारीच ।

तापत्रय

आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक ।

अथवा

केवल—दैहिक, दैविक, भौतिक ।

तामिस्र

एक नरक जहाँ घनघोर अंधकार रहता है ।

ताम्रपर्णी

मद्रास की एक छोटी नदी ।

तारक

एक दानव जिसे कार्तिकेय ने मारा । इसी दानव को मारने के लिए शिवजी को पार्वती जी से विवाह करना पड़ा था; राम का षडक्षर मंत्र 'ॐ रामाय नम:' ।

तारकाक्ष

तारकासुर का ज्येष्ठ पुत्र । त्रिपुर में से एक पुर में यही रहता था ।

तारकेश्वर

शिवजी की उपाधि ।

तारा

बृहस्पति की स्त्री जिसे चन्द्रमा ने अपने यहाँ रख लिया था और जिससे बुध का जन्म हुआ; बालि की स्त्री का नाम (इसका 'तारका' नाम भी मिलता है) और सुषेण की कन्या जिसकी गणना पंचकन्याओं में की जाती है; राजा हरिश्चन्द्र की रानी का नाम; दस महाविद्याओं में (दे०) से एक ।

ताराग्रह

पाँच ग्रह—मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि ।

ताल

'संगीत दामोदर' में ताल के मुख्य भेद पाँच माने गए हैं :—
अष्ट, रुद्र, ब्रह्म, इन्द्र और चतुर्दश ।

१. अष्ट ताल के भेद :—

आड़, दोज, ज्योति, चन्द्रशेखर, गञ्जन, पञ्चताल, रूपक, समताल ।

२. रुद्रताल के भेद :—

वीर विक्रम, विषम समुद्र, धरण, वीरदशक, मण्डूक, कन्दर्प, डाँशपाहिड़, ध्रुवचरण, दशकोषी, गजेन्द्र गुरु, छटका।

३. ब्रह्मताल के भेद :—

ब्रह्म, विराम ब्रह्म, षटकला, सप्तमात्रा।

४. इन्द्रताल के भेद :—

देवसार, देवचाली, मदनदोला, गुरुगन्धर्व, पञ्चाली, इन्द्रभाष।

५. चतुर्दशताल के भेद :—

चिह्नताल, चन्द्रमात्रा, देवमात्रा, अर्द्धज्योतिका, स्वर्गसार, क्षमाष्ट, धराधरा, वसन्तवाक्, काककला, वीरशब्दा, ताण्डवी, हर्षधारिका, भाषा, अर्द्धमात्रा।

## तालकेतु

भीष्म; बलराम।

## तालध्वज

दे० 'तालकेतु'।

## ताल-बैताल

राजा विक्रमादित्य द्वारा सिद्ध बनाए गए दो यक्ष।

## तित्तिरि या तित्तरि

यास्क मुनि के शिष्य एक ऋषि जिन्होंने कृष्ण यजुर्वेद को सबसे पहले पढ़ाया और यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा चलाई।

## तिलक

वैष्णवों में बारह तिलक लगाए जाते हैं :—

मस्तक (१), नाक (१), कपोल (२), वक्ष (१), भुजा (२), नाभि (१), जंघा (२), पीठ (२)।

## तिलोत्तमा

सुन्द और उपसुन्द दो भाई थे जिन्हें यह वरदान मिला हुआ था कि वे ही एक दूसरे को मार सकेंगे। अतः वे देवताओं और मनुष्यों को सताने लगे। तब ब्रह्मा के आदेश से विश्वकर्मा ने तिलोत्तमा नाम की एक अतीव सुन्दरी अप्सरा का निर्माण किया जो कश्यप ऋषि और प्राधा की पुत्री थी। तिलोत्तमा के सौन्दर्य पर मोहित होकर सुन्द-उपसुन्द आपस में लड़ कर मर गए। कहा जाता है कि ब्रह्मा ने संसार के उत्तमोत्तम पदार्थों में से एक-एक तिल अंश लेकर तिलोत्तमा की रचना की थी।

### तीर्थंकर

जैन मतावलंबियों के श्रेष्ठ और सब दोषों से मुक्त उपास्य देव। इनकी संख्या २४ है :—

ऋषभदेव, अजितनाथ, संभवनाथ, अभिनन्दन, सुमतिनाथ, पद्मनाभ, सुपार्श्वनाथ, चन्द्रप्रभ, सुबुधिनाथ, शीतलनाथ, श्रेयांसनाथ, वासुपूज्य स्वामी, विमलनाथ, अनंतनाथ, धर्मनाथ, शान्तिनाथ, कुंतुनाथ, अमरनाथ, मल्लिनाथ, मुनि सुव्रत, नमिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर स्वामी।

### तीर्थ

१. जंगम (ब्राह्मण आदि चलते-फिरते तीर्थ), २. मानस (सत्य, क्षमा, दया, ब्रह्मचर्य, मधुर भाषण आदि), ३. स्थावर (काशी, प्रयाग आदि स्थल विशेष)।

### तीर्थ

पाँच पुण्य तीर्थ हैं :—

अगस्त्य तीर्थ, सौभद्र तीर्थ, पौलोम तीर्थ, कारडमती तीर्थ और भरद्वाज तीर्थ। इनमें शापग्रस्त अप्सराएँ मगर बन कर रहती थीं, इसलिए इन्हें नारी तीर्थ भी कहा गया है। एक बार अर्जुन के स्नान करने के कारण अप्सराओं को शाप से मुक्ति मिली।

### तीर्थराज

प्रयाग।

### तीर्थराजी

काशी।

### तुंगनाथ

हिमालय पर एक शिवलिंग और तीर्थस्थान।

### तुंबुरु

एक गन्धर्व का नाम जो चैत्र के महीने में सूर्य के रथ पर रहता है।

### तुरीय

वाणी के चार भेदों में से द्वितीय; वैखरी; वाणी जब मुख में आकर उच्चरित होती है; जीव की चार अवस्थाओं में से अंतिम।

### तुर्वसु

देवयानी के गर्भ से उत्पन्न राजा ययाति का एक पुत्र।

**तुलसीदास**

'रामचरितमानस' तथा अन्य अनेक ग्रन्थों के रचयिता हिन्दी के प्रसिद्ध रामभक्त कवि।

**तुष्टि**

सांख्य के अनुसार नौ तुष्टियाँ मानी गई हैं :—
चार आध्यात्मिक और पाँच बाह्य; कंस के आठ भाइयों में से एक।

**तृणावर्त्त**

एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा।

**तैत्तिरीय**

कृष्ण यजुर्वेद की ८६ शाखाओं में से एक शाखा जो तित्तिरि नामक ऋषि द्वारा कथित है।

**तैत्तिरीयारण्यक**

तैत्तिरीय शाखा का आरण्यक जिसमें वानप्रस्थों के लिए उपदेश हैं।

**तोषर**

कंस का भेजा हुआ एक असुर जिसे श्रीकृष्ण ने मारा।

**त्रक्षर**

अ, उ, म् से युक्त ओम्।

**त्रयावस्था**

जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति।

**त्रयी**

तीन वेदों का समूह; ब्रह्मा, विष्णु, महेश।

**त्रिकटु**

सोंठ, मिर्च, पीपर।

**त्रिकर्म**

ब्राह्मणों के तीन कर्म :—
त्याग, वेदाध्ययन और दान।

**त्रिकांड**

अमरकोष का दूसरा नाम; निरुक्त का दूसरा नाम।

**त्रिकाय**

बुद्ध का नाम।

त्रिकाल

भूत, भविष्य, वर्तमान; प्रात:, मध्याह्न और सायं काल ।

त्रिकुटी

दोनों भौंहों के ऊपर का स्थान ।

त्रिकूट

एक पर्वत जिसकी चोटी पर लंका बसी हुई मानी गई है; एक पर्वत जो सुमेरु पर्वत का पुत्र माना जाता है; योग के अनुसार मस्तक के छह चक्रों में से पहला चक्र ।

त्रिगर्त्त

जालंधर और काँगड़ा के निकट का प्राचीन प्रान्त ।

त्रिजगत्

स्वर्ग, अन्तरिक्ष, भूलोक; स्वर्ग, भूलोक और पाताल ।

त्रिजट

शिवजी की उपाधि ।

त्रिजटा

अशोक वाटिका में सीताजी के साथ रहने वाली राक्षसियों में से एक राक्षसी का नाम । यह विभीषण की बहन थी ।

त्रिताप

आधिदैविक (देवताओं द्वारा या प्रारब्ध से मिला ताप), आधिदैहिक (शरीर में उत्पन्न ताप), आधिभौतिक (व्याघ्र, सर्पादि द्वारा दिया गया ताप, जीव अथवा शरीर धारियों द्वारा प्राप्त ताप) ।

त्रिदंड

दैहिक, दैविक और भौतिक ताप; संन्यासियों का दण्ड जिसमें एक बाँस की लकड़ी में क्रमश: एक, दो या तीन थैलियाँ एक तागे के सहारे बँधी रहती हैं और ऊपर से सफेद कपड़ा लिपटा रहता है । थैलियों का समूह नारायण का और सफेद कपड़ा लक्ष्मी का प्रतिनिधित्व करता है । तीनों थैलियाँ अद्वैत, विशिष्टाद्वैत और द्वैत की प्रतीक हैं; वाक्‌दण्ड, मनोदण्ड, कायदण्ड ।

त्रिदण्डी

तीन दण्डों को बाँध कर उसे दाहिने हाथ में धारण करने वाले श्री वैष्णव संन्यासी; जिसने मन, वाणी और शरीर को वश में कर

लिया हो :—

वाग्दण्डोऽथ मनोदण्ड: कायदण्डस्तथैव च ।
यस्यैते निहित बुद्धौ त्रिदण्डीति स उच्यते ॥

—(मनुस्मृति)

### त्रिदश

तीन दशाओं के अर्थ में जन्म धारण करना, जीवित रहना और नष्ट हो जाना । कुछ विद्वान् इसका अर्थ इस प्रकार भी लगाते हैं :— त्रि=तीन, त्रिदश=तीस अर्थात् तेंतीस ('त्रि' शब्द का अर्थ दो बार लिया गया है ।) मुख्य देवता तेंतीस माने गए हैं :—१२ सूर्य, ११ रुद्र, ८ वसु और २ विश्वेदेव ।

### त्रिदेव

ब्रह्मा, विष्णु, महेश ।

### त्रिदोष

वात, पित्त, कफ़ ।

### त्रिध्वनि

मधुर, मंद, गंभीर ।

### त्रिनेत्र

शिवजी जिनके तीन नेत्र सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि के प्रतीक हैं ।

### त्रिपिटक

बौद्ध मत के तीन प्रसिद्ध ग्रन्थ :—
सुत्तपिटक, विनयपिटक और अभिधम्मपिटक ।

### त्रिपुण्ड्र

माथे पर तीन आड़ी रेखाओं वाला टीका जो शैव सम्प्रदाय के लोग लगाते हैं ।

### त्रिपुर

एक दानव जो तीन पुरों का अधिपति था और जिसे शिवजी ने मारा; मय दानव द्वारा राक्षसों के लिए बनाई गई पृथ्वी, अन्तरिक्ष, और आकाश में चाँदी, सोने और लोहे की तीन पुरियाँ जिन्हें देवताओं की प्रार्थना स्वीकार कर शिवजी ने नष्ट किया । इन तीनों पुरियों में तारकासुर (?) के तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली नाम के तीन पुत्र रहते थे ।

**त्रिपुरदाह**

तारकासुर के तीन पुत्र—तारकाक्ष, कमलाक्ष, विद्युन्माली—जब मय द्वारा बनाये गए सोने, चाँदी और लोहे के (क्रमशः स्वर्ग, पृथ्वी और अन्तरिक्ष में) तीन नगरों में एक बार पास-पास रह कर और हज़ार वर्ष तक अलग रह कर संसार को पीड़ित करने लगे तो देवताओं की प्रार्थना स्वीकार कर शिवजी ने देवताओं की शक्ति लेकर, विश्वकर्मा द्वारा बनाया गया रथ लेकर, चार वेदों को अश्व बना कर, मन्दराचल को धनुष बना कर, वासुकि नाग की डोर बना कर, और विष्णु बाण की आगे की नोंक पर अग्नि और नीचे की नोंक पर वायु को रख कर, अपने त्रिशूल से तीनों नगरों को बेध कर दिव्य बाण से उन्हें जला डाला। तीनों असुर एक साथ रहने पर ही मारे गए और शिवजी के एक ही वार में मारे गए।

**त्रिपुरारि**

शिवजी की उपाधि।

**त्रिपुरासुर**

दे० 'त्रिपुर'।

**त्रिफला**

हरड़, बहेड़ा, आँवला।

**त्रिभुवन**

स्वर्ग, भूमि और पाताल।

**त्रिमूर्ति**

ब्रह्मा, विष्णु और महेश।

**त्रियुग**

सत युग, त्रेता और द्वापर।

**त्रिलोक**

स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल अथवा ऊर्ध्व, मध्य, अध अथवा उत्तम, मध्यम, नीच।

**त्रिलोचन**

शिवजी की उपाधि।

**त्रिवर्ग**

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य; सांसारिक जीवन के तीन पदार्थ—धर्म, अर्थ, काम; सत्व, रज, तम; वृद्धि, स्थिति और नाश।

त्रिविक्रम

वामनावतार।

त्रिविधि

वेद-विधि, लोक-विधि और कुल-विधि।

त्रिवेणी

प्रयाग का वह स्थान जहाँ गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम है; हठयोग में इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना इन तीन नाड़ियों का संगम।

त्रिशंकु

सूर्यवंशी एक राजा। यह हरिश्चन्द्र राजा का पिता और अयोध्या का राजा था। इस राजा ने अपने तप द्वारा सशरीर स्वर्ग जाने का प्रयास किया, किन्तु देवताओं ने बीच आकाश में रोक दिया और वह बीच आकाश में लटका रहा; एक तारा जो इन्द्र के ढकेलने से आकाश से गिर रहा था, किन्तु जिसे विश्वामित्र ने अपने तप-बल से बीच में ही रोक दिया।

त्रिशंकुयाजिन्

विश्वामित्र।

त्रिशक्ति

इच्छा-शक्ति, ज्ञान-शक्ति और क्रिया-शक्ति।

त्रिशिर

रावण का एक भाई; कुबेर।

त्रिशिरस

श्रीरामचन्द्र द्वारा मारा गया एक राक्षस।

त्रिशूल

तीन फलकों का शिवजी का अस्त्र; दैहिक, दैविक और भौतिक दुःख।

त्रिसंध्या

प्रातः, मध्याह्न, संध्या।

त्रिसंध्यास्वरूप

रक्त, शुक्ल, श्याम।

त्रिस्थली

तीन पुण्य स्थान—काशी, प्रयाग और गया।

त्रेता युग

चार युगों में से दूसरा युग जो १२९६००० वर्ष का माना गया है। इसका आरंभ कार्तिक शुक्ल नवमी को हुआ था।

त्रैविक्रम

विष्णु या वामनावतार।

त्रैशंकव

त्रिशंकु के पुत्र राजा हरिश्चन्द्र की उपाधि।

त्र्यक्षरी

वाक् बीज, काल बीज और शक्ति बीज—इन तीन अक्षरों से समाहित देवी।

त्र्यंबक

शिवजी की उपाधि।

त्र्यंबका

दुर्गा की उपाधि।

त्वष्टा

बारह आदित्यों में एक; एक वैदिक देवता; एक प्रजापति का नाम; महादेव जी की उपाधि।

## थ

थियोसोफी

यूरोप में कर्नल अलकॉट और मैडम ब्लवैट्स्की द्वारा और भारत में श्रीमती एनी बेसेंट द्वारा स्थापित एक सर्वधर्म समन्वयकारी आधुनिक संप्रदाय।

## द

दंडक

नर्मदा और गोदावरी के बीच दक्षिण भारत का एक प्रान्त। श्री रामचन्द्र के समय में यह प्रान्त उजाड़ पड़ा था।

दंडकारण्य

दे० 'दंडक'।

दंडपाणि

यमराज की उपाधि; भैरव की एक मूर्ति।

दंडी

जैन साधु; 'काव्यादर्श' और 'दशकुमार चरित' का रचयिता; दंड-कमंडलु धारण करनेवाला संन्यासी; शिव; यमराज।

### दक्ष

पुराणों में दक्ष प्रजापति सृष्टि के उत्पन्न करने वाले माने गए हैं जिनसे देवताओं का जन्म हुआ। शिवजी की पत्नी सती इन्हीं दक्ष प्रजापति की कन्या थीं; अत्रि मुनि।

### दक्ष-कन्या

दक्ष प्रजापति की कन्या सती जो शिवजी की पत्नी थीं।

### दक्षिणा

दक्षिण प्रजापति की पुत्री और यज्ञ रूपी पुरुष की पत्नी।

### दक्षिणायन

कर्क की संक्रान्ति से दक्षिण मकर की संक्रान्ति तक जिस मार्ग पर सूर्य चलते हैं वह दक्षिणायन कहा जाता है। इस मार्ग पर सूर्य ६ मास रहते हैं। यह समय ईस्वी सन् के अनुसार २१ जून से २२ दिसम्बर तक है।

### दक्षिणावर्त

शंख जिसका घुमाव दाहिनी ओर होता है। यह अत्यन्त दुर्लभ है, किन्तु अत्यन्त शुभ माना जाता है।

### दग्धाक्षर

कविता में अशुभ माने जाने वाले अक्षर, उदाहरणार्थ :—

प्रारम्भ में—ह, ग, न।

मध्य में—र, ज, स।

अन्त में—क, ट, ज्ञ।

### दत्तात्रेय

एक ऋषि जो अत्रि और अनसूया से उत्पन्न हुए थे और जो ब्रह्मा, विष्णु और महेश का मिश्रित अवतार माने जाते हैं।

### दधिकाँदो

ब्रज में जन्माष्टमी के दिन होने वाला उत्सव जिसमें लोग हल्दी मिला हुआ दही एक दूसरे पर फेंकते हैं।

### दधीचि

एक ऋषि जिन्होंने इन्द्र का वज्र बनाने के लिए अपने शरीर की हड्डियाँ दे दी थीं। इसी वज्र से इन्द्र ने वृत्रासुर का वध किया। दधीचि, यास्क के मतानुसार, अथर्व के पुत्र थे।

### दनु

दानवों की माता जो दक्ष की लड़की और कश्यप की पत्नी थीं। इनके चालीस पुत्र हुए।

**दनुजराय**

हिरण्यकशिपु की उपाधि ।

**दनुजेंद्र**

रावण की उपाधि ।

**दमन**

एक ऋषि जिनके यहाँ दमयन्ती का जन्म हुआ ।

**दमनक**

हितोपदेश का एक पात्र । करकट दमनक यह युग्म प्रसिद्ध है ।

**दमयन्ती**

विदर्भ के राजा भीम की पुत्री और राजा नल की पत्नी । अपने अनुपम सौन्दर्य के कारण संसार की समस्त रूपवती स्त्रियों का अभिमान दूर कर देने के कारण दमयन्ती नाम पड़ा । दे० 'दमन' भी ।

**दरद**

कश्मीर और हिन्दुकुश के बीच का भूमिभाग; एक म्लेच्छ जाति जिसका उल्लेख स्मृतियों (मनु) और पुराणों (हरिवंश) में मिलता है ।

**दरियादासी**

संत दरिया साहब के अनुयायी साधुओं का सम्प्रदाय ।

**दर्शन**

न्याय आदि छह शास्त्र :—

१. न्याय (गौतम ऋषि), २. वैशेषिक (कणाद मुनि), ३. मीमांसा (जैमिनि ऋषि । इस दर्शन में यज्ञ, व्रत, तप, दान, वेद-पाठ आदि कर्मों के करने से मुक्ति पाना लिखा है), ४. वेदान्त (व्यास देव), ५. सांख्य (कपिल मुनि—ये सृष्टि का कोई कर्त्ता नहीं मानते । संसार नित्य है), ६. पातञ्जल (पतञ्जलि मुनि—इनका मत बहुत-कुछ सांख्य से मिलता-जुलता है । सांख्य सृष्टि का कोई कर्त्ता नहीं मानता, पातंजल मत ईश्वर को सृष्टि का कर्त्ता मानता है) ।

**दशकंठ**

रावण की उपाधि ।

**दशकंधर**

रावण की उपाधि ।

**दशद्वार**

शरीर के दस द्वार :—

२ नेत्र, २ कान, २ नाक के नथुने, मुँह, लिंग, गुदा, ब्रह्माण्ड (सिर का मध्य भाग) । (दे० 'दसद्वार' और 'नवद्वार' भी)

**दशनाम**

संन्यासियों के दस भेद :—

तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती और पुरी।

**दशनामी**

अद्वैत मत के जन्मदाता शंकराचार्य के शिष्यों की परम्परा में एक साधु-सम्प्रदाय।

**दश महाविद्या**

दे० 'महाविद्या', 'महामाया'।

**दशमुख**

रावण की उपाधि।

**दशरथ**

श्री रामचन्द्र के पिता। ये महाराज अज के पुत्र और इक्ष्वाकुवंशीय थे।

**दशशीश**

रावण की उपाधि।

**दशा**

दशा दस प्रकार की मानी गई हैं :—

गर्भवास, जन्म, बाल्यावस्था, लड़कपन, किशोरावस्था, युवावस्था, अधबुढ़ापा, बुढ़ापा, मरणासन्न, मरण।

**दशानन**

रावण की उपाधि।

**दशाश्वमेध**

काशी में एक तीर्थ-स्थल।

**दस दाँव**

कामशास्त्र के अनुसार ५ प्रकार के नखक्षत और ५ प्रकार के दन्त-क्षत।

**दस द्वार**

दो नेत्र, दो कान, दो नासिका-छिद्र, मुख, गुदा, लिंग, ब्रह्मरंध्र।

**दसमाथ**

रावण का एक नाम।

**दसू**

सूर्य-पत्नी और अश्विनीकुमारों की माता।

**दसौंधी**

अपने को ब्राह्मण कहने वाली भाट-चारणों की एक जाति ।

**दस्यु**

एक जाति जिन्हें देवताओं के शत्रु होने के कारण इन्द्र ने मारा था ।

**दाक्षायणी**

२७ नक्षत्रों में से कोई भी; कश्यप-पत्नी अदिति; पार्वती; रेवती नक्षत्र; कद्रू या विनिता; दक्ष की कन्या ।

**दादू या दादूदयाल**

एक संत जिन्होंने दादूपंथ चलाया। ये अकबर के समकालीन, अहमदाबाद के रहनेवाले और जाति के धुनिया थे ।

**दादूपंथी**

दादूपंथ का अनुयायी ।

**दान**

दान के निम्न प्रकार माने गए हैं :—

(१) नित्य दान—अरुणोदय, मध्याह्न और पराह्न समय में विष्णु के उद्देश्य से दिया गया दान नित्य दान है ।

(२) नैमित्तिक दान—अमावस्या, पूर्णमासी, संक्रान्ति, एकादशी, माघी पूर्णिमा, मघा नक्षत्र से युक्त तिथि, आषाढ़ की पूर्णमासी, वैशाखी पूर्णिमा, कार्तिकी और सोमवती अमावस्या आदि को दिया गया दान नैमित्तिक दान है।

(३) अभ्युदयिक दान—यह दान यज्ञों में किया जाता है। श्राद्ध द्वारा भी यह दान होता है। पुत्र-पौत्रादि की इससे वृद्धि होती है।

(४) पुण्य दान—पुत्र-पौत्र, भार्या आदि कोई किसी का नहीं होता, यह सोचकर और उनकी चिन्ता न कर वृद्धावस्था में दिया गया दान। यह दान अपने लिए होता है ।

दान से सब धर्म उत्पन्न होते हैं, स्वर्ग प्राप्त होता है। दान सुपात्र को ही देना चाहिए । (दे० 'दान-पात्र')

मृत्यु के समय आठ दान :—अन्न, जल, वाहन, धेनु, वस्त्र, शय्या, आसन और पात्र ।

**दान-पात्र**

लक्षण :—महात्मा, कुलीन ब्राह्मण (उसमें भी वेदज्ञ ब्राह्मण), शान्तचित्त, इन्द्रियों का दमन करने वाला, बुद्धिमान्, ज्ञानवान्, सत्य बोलने वाला, वैष्णव ।

## दानव

कश्यप की पत्नी दनु से उत्पन्न सन्तान। दानवों की संख्या ६१ मानी गई है, किन्तु उनमें से १८ प्रधान माने जाते हैं :—द्विमूर्द्धा, तापन, शम्बर, अरिष्ट, हयग्रीव, विभावसु, अयोमुख, शङ्कुशिरा, स्वर्भानु, कपिल, अरुण, पुलोमा, वृषपर्वा, एकचक्र, विरूपाक्ष, धूम्रकेश, विप्रचित्ति, दुर्जय।

## दानवेन्द्र

राजा बलि की उपाधि।

## दामोदर

श्रीकृष्ण की उपाधि। माखनचोरी करने पर माता यशोदा ने इन्हें रस्सी से बाँधा था, इसलिए दामोदर नाम पड़ा; विष्णु; एक जैन तीर्थंकर का नाम।

## दास

याज्ञवल्क्य स्मृति के टीकाकार विज्ञानेश्वर के अनुसार निम्न प्रकार के दास होते हैं :—

गृहजात (घर की दासी से उत्पन्न), क्रीत (खरीदा गया), लब्ध (दानादि में प्राप्त), दयादुपागत (वंशपरम्परागत), अनाकालभृत (दुर्भिक्ष में मरने से रक्षित), आहित, (धन देकर अपने पास रखा हुआ), ऋणदास (ऋण में रखा हुआ), युद्ध-प्राप्त (युद्ध में पकड़ा गया), पणेजित (जुए आदि में जीता हुआ), प्रव्रज्यावसित (साधु होने के बाद बिगड़ कर दास बना हुआ), कृत (समय की शर्त के साथ रखा हुआ), वडवाहृत (घर की दासी के लोभ से आया हुआ), आत्म-विक्रेता (अपने आपको बेचने वाला)।

## दिक्कन्या

पुराणों के अनुसार दसों दिशाएँ ब्रह्मा की कन्याएँ मानी गई हैं।

## दिक्पाल

आठ माने जाते हैं :—

इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैर्ऋतो वरुणो मरुत्।
कुबेर ईशः पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात्॥

पूर्व के इन्द्र (अमरावती), दक्षिण-पूर्व (अग्निकोण) के अग्निदेव (तेजोवती), दक्षिण का यम (संयमनी), दक्षिण-पश्चिम (नैर्ऋत्य) के नैर्ऋत या निर्ऋति (राक्षस नाम भी मिलता है, कृष्णांजना), पश्चिम के वरुण (श्रद्धावती), उत्तर-पश्चिम (वायव्य कोण) के वायु या मरुत (गन्धवती), उत्तर के कुबेर (अलकापुरी), उत्तर-पूर्व (ईशान

कोण) के ईश या शिव (यशोवती)। कहीं-कहीं ब्रह्मा (ऊर्ध्व दिशा) और शेष या अनन्त या विष्णु (पैरों के नीचे की दिशा) ये दो नाम भी मिलते हैं जिन्हें मिला कर दस दिक्पाल हो जाते हैं। किन्तु सामान्यत: आठ ही माने जाते हैं।

अथवा—

'सूर्य: शुक्र: क्षमापुत्र: सैंहिकेय: शनि: शशी।
'सौम्यस्त्रिदशमंत्री च पूर्वादीनामधीश्वरा:।'

| दिशा | दिक्पति |
|---|---|
| पूर्व | सूर्य |
| अग्निकोण | शुक्र |
| दक्षिण | मंगल |
| नैर्ऋत कोण | राहु |
| पश्चिम | शनि |
| वायव्य कोण | चन्द्रमा |
| उत्तर | बुध |
| ईशान कोण | वृहस्पति |

अथवा—

| | |
|---|---|
| पूर्व | इन्द्र |
| पश्चिम | वरुण |
| उत्तर | कुबेर |
| दक्षिण | यम |
| ईशान | ईश |
| नैर्ऋत्य | नैर्ऋत |
| वायव्य | वायु |
| आग्नेय | अग्नि |
| ऊर्ध्व | ब्रह्मा |
| अध: | शेष |

**दिगंबर**

जैनियों के दो सम्प्रदायों में से एक। इस संप्रदाय के जैन साधु नग्न रहते हैं। दूसरा सम्प्रदाय श्वेतांबर है।

**दिगंश**

क्षितिज वृत्त का ३६०वाँ अंश।

**दिग्गज**

पुराणों में दिग्गज आठ माने गए हैं :—

ऐरावत: पुण्डरीकोवामन: कुमुदोऽञ्जन:।
पुष्पदन्त: सार्वभौम: सुप्रतीकश्च दिग्गजा:।।

ऐरावत (पूर्व), पुण्डरीक (आग्नेय), वामन (दक्षिण), कुमुद (नैर्ऋत्य), अंजन (पश्चिम), पुष्पदन्त (वायव्य), सार्वभौम (उत्तर), सुप्रतीक (उत्तर-पूर्व)। ये आठों हाथी आठों दिशाओं में पृथ्वी को दबाए रहते हैं, उनकी रक्षा करते हैं।

**दिग्पाल (दिक्‌पाल)**

इस प्रकार माने गए हैं :—

अग्नि, यम, नैर्ऋति, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, ब्रह्मा, अनन्त, पूर्व।

**दिग्दाह**

सूर्यास्त होने पर लाल दिखाई पड़ने वाली सभी दिशाएँ जो जलती हुई मालूम पड़ती हैं।

**दिग्विजय**

अपनी वीरता प्रदर्शित करने और प्रभुत्व स्थापित करने के लिए देश-देशांतरों में जाकर युद्ध करना और विजय प्राप्त करना।

**दिङ्‌नाग**

कालिदास के समकालीन एक प्रसिद्ध बौद्ध नैयायिक और आचार्य।

**दिति**

दक्ष की कन्या, कश्यप की पत्नी और दैत्यों की माता।

**दिलीप**

एक सूर्यवंशी राजा जो राजा सगर के प्रपौत्र, अंशुमान के पुत्र और भगीरथ के पिता थे। कालिदास ने इन्हें रघु का पिता कहा है और इनकी पत्नी का नाम सुदक्षिणा बताया है।

**दिवाभिसारिका**

वह नायिका जो दिन में अपने नायक से मिलने सहेट-स्थल पर जाती है।

**दिवोदास**

चन्द्रवंशी राजा भीमरथ के पुत्र और काशी के राजा। ये धन्वन्तरि के अवतार माने जाते हैं।

**दिव्य**

प्राचीन न्यायालयों में किसी व्यक्ति के अपराधी होने या न होने की परीक्षा जो नौ प्रकार की होती थी :—

घट, अग्नि, उदक, विष, कोष, तंडुल, तप्तमाषक, फूल और धर्मज।

**दिव्य वर्ष**

मनुष्यों का ३६५ दिन का एक वर्ष होता है। ऐसे ३६५ वर्षों का देवताओं का एक दिव्य वर्ष होता है।

## दिव्यसूरि

रामानुज संप्रदाय के बारह आचार्य :—

कसार, भूत, महत्, भक्तिसार, शठारि, कुलशेखर, विष्णुचित्त, भक्तांध्रिरेणु, मुनिवाह, चतुष्कविंद्र, रामानुज, गोदादेवा या मधुकर कवि ।

## दिशाएँ

दस होती हैं :—उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, वायव्य (उत्तर-पश्चिम के बीच), ईशान, (उत्तर-पूर्व के बीच), नैर्ऋति (दक्षिण-पश्चिम के बीच), आग्नेय (पूर्व और दक्षिण के बीच), ऊपर और नीचे ।

दस दिशाएँ इस प्रकार भी मानी गई हैं :—

पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, अध, ऊर्ध्व ।

## दिशाग्रह

आठ हैं :—

सूर्य, शुक्र, मंगल, राहु, शनि, चन्द्रमा, बुध, गुरु ।

## दिशान्तर

ईशान (पू०+उ०), नैर्ऋत्य (प०+द०), वायव्य, वायुकोण, (पू०+द०), आग्नेय या अग्निकोण (प०+उ०) ।

## दीर्घतपस्

अहल्या के पति गौतम का नाम ।

## दीर्घतमा

उतथ्य के पुत्र एक जन्मांध ऋषि जिन्होंने अपनी पत्नी के अनुचित व्यवहार से कुपित होकर समाज में यह व्यवस्था स्थापित की थी कि कोई स्त्री एक के बाद दूसरे पति का वरण न कर सकेगी ।

## दुंद

कृष्णजी के पिता वसुदेव का नाम ।

## दुंदुभ

एक दैत्य जिसे बालि ने मारा और ऋष्यमूक पर्वत पर फेंक दिया ।

## दुंदुभि

यदुवंशी राजकुमार अनु का पुत्र ।

## दुःशला

धृतराष्ट्र और गांधारी की पुत्री जो सिंधु देश के राजा जयद्रथ को ब्याही थी ।

## दुःशासन

धृतराष्ट्र का पुत्र जिसने भरी सभा में द्रौपदी का चीर खींचा और महाभारत की लड़ाई के बाद कुरुक्षेत्र में भीमसेन द्वारा मारा गया। अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार भीमसेन ने उसका कलेजा चीर कर गरम लहू पिया। यह अपने भाई दुर्योधन का सलाहकार था।

## दुर्ग

छह प्रकार के होते हैं :—
धन्वदुर्गं, महीदुर्गं, गिरिदुर्गं, तथैव च ।
मनुष्यदुर्गं, मृद्दुर्गं, वनदुर्गमिति क्रमात् ।।

## दुर्गा

दुर्गा देवी। दुर्ग नामक असुर को मारने के कारण दुर्गा नाम पड़ा। ये सृष्टि की आदिशक्ति हैं। वैदिक काल में ये अंबिका देवी के रूप में रुद्र की बहन मानी जाती थीं। देवी भागवत के अनुसार ये विष्णु की माया हैं। सती के रूप में ये दक्ष की कन्या सती और शिव की पत्नी थीं। काली, भैरवी, भवानी, चंडी, कराली, अन्नपूर्णा आदि इन्हीं के नाम हैं; एक रागिनी का नाम; ३ वर्ष से कम की कन्या।

## दुर्गोत्सव

नवरात्र में दुर्गा-पूजा।

## दुर्मुख

श्रीराम का एक गुप्तचर जिसने सीता-विषयक लोकापवाद आकर सुनाया था।

## दुर्योधन

धृतराष्ट्र और गान्धारी का पुत्र, कौरवों में सबसे बड़ा और युधिष्ठिर का प्रतिद्वन्द्वी। इसने जुए में पाण्डवों को जीता, द्रौपदी का चीर हरण कराया, उन्हें वनवास दिया और इसी के कारण महाभारत का युद्ध हुआ।

## दुर्वासा

अत्रि के पुत्र एक अत्यन्त क्रोधी ऋषि। इनका क्रोध पुराण-प्रसिद्ध है।

## दुष्यन्त

सूर्यवंशी एक प्रसिद्ध राजा जो पुरु वंश के थे। इनका गंधर्व-विवाह कण्व ऋषि की पोषिता कन्या शकुन्तला के साथ हुआ था। कालिदास कृत 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' के नायक और भरत के पिता।

## दूषण

रावण के पक्ष का एक राक्षस जिसे श्री रामचन्द्र ने मारा।

## दृषद्वती

आर्यावर्त देश की पूर्वी सीमा पर एक नदी जो सरस्वती नदी में गिरती है। इसे आजकल घग्घर कहते हैं।

## देव

देवों की आठ जातियाँ मानी जाती हैं :—

विबुध, पितर, असुर, गंधर्व (अप्सरस), सिद्ध, यक्षराक्षस-चारणादि, भूत-प्रेतादि, विद्याधर (किन्नरादि)।

## देवकी

देवक की कन्या का नाम जो वसुदेव को ब्याही थी और जिसके गर्भ से श्रीकृष्ण का जन्म हुआ।

## देवता

पुराणों में तेंतीस कोटि देवता माने गए हैं। वैदिक काल में केवल तेंतीस देवता माने गए थे।

शतपथ ब्राह्मण में ८ वसु, ११ रुद्र, १२ आदित्य, १ इन्द्र और १ प्रजापति देवता माने गए हैं। ऋग्वेद में ३३३९ देवताओं का उल्लेख भी मिलता है।

देवजाति के अन्तर्गत :—देवयोनि (१०) गणदेवता, द्वादश आदित्य, अष्टवसु और दश विश्वेदेव माने गए हैं (इन्हें देखिए)।

देवयोनि के अन्तर्गत हैं :—विद्याधर, अप्सरा, यक्ष, रक्ष, गन्धर्व, किन्नर, पिशाच, गुह्यक, सिद्ध, भूत।

गणदेवता के अन्तर्गत :—आभास्वर, अनल, साध्य, तुषित, महाराजिक आदि अनेक भेद हैं।

द्वादश आदित्य—१. विवस्वान, २. अर्यमा, ३. पूषा, ४. त्वष्टा, ५. सविता, ६. भग, ७. धाता, ८. विधाता, ९. वरुण, १०. मित्र, ११. शक्र और १२. उरुक्रम।

अष्टवसु के भी ये नाम मिलते हैं :—

धर, ध्रुव, सोम, विष्णु (सावित्र), अनिल, अनल, प्रत्यूष, प्रभास।

दश विश्वेदेव—क्रतु, दक्ष, वसु, सत्य, काम, काल, ध्वनि, रोचक, आद्रव, पुरूरवा।

(वह्निपुराण—गणभेद नामाध्याय)

### देवताओं के उद्यान

ये चार माने गए हैं :—नंदन, चैत्ररथ, वैभ्राज और सर्वतोभद्र ।

### देवदत्त

अर्जुन के शंख का नाम; शरीर की पाँच वायुओं में से एक जिससे जँभाई आती है ।

### देवदासी

मंदिर में रह कर देवता के सामने नृत्य करने वाली । यह देवदासी-प्रथा दक्षिण भारत में बहुत प्रचलित रही, किन्तु अन्त में भ्रष्ट हो गई ।

### देवपुरी

ये सात हैं :—

विष्णुपुरी, शिवपुरी, ब्रह्मपुरी, अमरावती, अलकावती, वरुणावती, यमपुरी ।

### देवयानी

शुक्राचार्य की कन्या जिसका वृहस्पति के पुत्र कच के साथ प्रेम हुआ, किन्तु बाद में राजा ययाति के साथ विवाह हुआ ।

### देवयोनि

स्वर्ग, अन्तरिक्ष आदि में रहनेवाले जीव—अप्सरा, यक्ष आदि । १० देवयोनियाँ हैं :—विद्याधर, अप्सरा, यक्ष, रक्ष, गन्धर्व, किन्नर, पिशाच, गुह्यक, सिद्ध, भूत । (दे० 'देवता' भी)

### देवर्षि

अत्रि, भृगु, नारद, मरीचि, भरद्वाज, पुलस्त्य, अंगिरस आदि देवर्षि हैं; नारद की उपाधि । ये देवताओं में ऋषि माने जाते हैं ।

### देवसभा

सुधर्मा नामक सभा जिसे मय दानव ने अर्जुन या युधिष्ठिर के लिए बनाया था ।

### देवसेना

प्रजापति की कन्या जो सावित्री के गर्भ से उत्पन्न हुई थी ।

## देवहूति

स्वायंभुव मनु की तीन कन्याओं में से एक जो कर्दम मुनि को ब्याही थी। सांख्य शास्त्र के रचयिता आचार्य कपिल इन्हीं के पुत्र थे।

## देवापि

राजा जो ऋष्टिषेण के पुत्र और शांतनु के भाई थे।

## देवी (तंत्र)

दे० 'महाविद्या' और 'मातृका'।

## देवी

आठ हैं—लक्ष्मी, मेघा, घरा, पुष्टि, तुष्टि, गौरी, प्रभा, धृति।
वैसे 'देवी' के अन्तर्गत मानी जाती हैं :—

(१) पंचदेवी : दुर्गा, लक्ष्मी, राधा, वाणी, शाकम्भरी।

(२) सप्तमाता : ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डा।

(३) नवदुर्गा : शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्री।

(४) नवकन्यका : कुमारी, त्रिमूर्ति, कल्याणी, रोहिणी, कालिका, शांभवी, दुर्गा, चण्डिका, सुभद्रा।

(५) नवशक्ति : वैष्णवी, ब्रह्माणी, रौद्री, माहेश्वरी, नारसिंही, वाराही, इन्द्राणी, कार्तिकी, सर्वमङ्गला।

(६) दश महाविद्या : काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगला, मातङ्गी, कमला।

(७) चौंसठ योगिनी : नारायणी, गौरी, शाकम्भरी, भीमा, रक्तदंतिका, पार्वती, दुर्गा, कात्यायनी, महादेवी, चन्द्रघण्टा, महाविद्या, महातपा, भ्रामरी, सावित्री, ब्रह्मवादिनी, भद्रकाली, विशालाक्षी, रुद्राणी, कृष्णपिङ्गला, अग्निज्वाला, रौद्रमुखी, कालरात्रि, तपस्विनी, मेघस्वना, सहस्राक्षी, विष्णुमाया, जलोदरी, महोदरी, मुक्तकेशी, घोररूपा, महाबला, श्रुति, स्मृति, धृति, तुष्टि, पुष्टि,

मेधा, विद्या, लक्ष्मी, सरस्वती, अपर्णा, अम्बिका, योगिनी, डाकिनी, शाकिनी, हारिणी, हाकिनी, लाकिनी, त्रिदशेश्वरी, महाषष्ठी, सर्वमंगला, लज्जा, कौशिकी, ब्रह्माणी, ऐन्द्री, नारसिंही, वाराही, चामुण्डा, शिवदूती, विष्णु-माया, मातृका, कार्तिकी, विनायकी, कामाक्षी।

## देवी के उपासक

बारह प्रसिद्ध उपासक हैं :—
मनु, चन्द्र, कुबेर, लोपामुद्रा, मन्मथ, अगस्त्य, अग्नि, सूर्य, इन्द्र, स्कन्द, शिव, क्रोध भट्टारक।

## देवी पुराण

देवी का माहात्म्य बताने वाला एक उपपुराण।

## देवी भागवत

एक उपपुराण, जिसे कुछ लोग पुराण भी मानते हैं। इसमें १२ स्कंध और १८०० श्लोक हैं।

## देवोत्थान

कार्तिक शुक्ला एकादशी को जब विष्णु भगवान् शेष की शय्या पर से उठते हैं तब देवोत्थान एकादशी होती है। इस समय सभी मांगलिक कार्य सम्पन्न होते हैं।

## दैत्यगुरु

शुक्राचार्य।

## दैवयुग

देवताओं का युग जिसमें बारह हजार वर्ष माने गए हैं।

## दो पुरुष

ईश्वर और जीव।

## दो फल

पाप, पुण्य; स्वर्ग, नरक; बन्धन, मोक्ष।

## दोहद

एक प्राचीन विश्वास जिसके अनुसार सुन्दर स्त्री के छूने से प्रियंगु, चरण-स्पर्श से अशोक, देखने से तिलक, मधुर गान से आम, पान की पीक थूकने से मौलसिरी और नाचने से कचनार फूलता है।

## द्युमत्सेन

शाल्व देश के राजा जिसके पुत्र सत्यवान् थे ।

## द्रव्य

वैशेषिक दर्शन में ९ द्रव्य माने गए हैं :—

पृथ्वी, जल, तेज (आग), वायु, आकाश, काल (समय), दिक्, आत्मा और मन ।

## द्रुपद

पांचाल देश के राजा जिनकी पुत्री द्रौपदी पाण्डवों को ब्याही थी। द्रौपदी का नाम कृष्णा भी है। धृष्टद्युम्न और शिखंडी द्रुपद के पुत्र थे ।

## द्रोण

कौरव-पाण्डवों के गुरु । ये ब्राह्मण, धनुर्विद्या में पारंगत और शरद्वान् की कन्या कृपी के पति थे । अश्वत्थामा इनका पुत्र था ।

## द्रोणगिरि

एक पर्वत जिसे क्षीरोद समुद्र भी कहा गया है ।

## द्रोणाचार्य

दे० 'द्रोण' ।

## द्रौपद

'सुषुम्ना' नाड़ी का नाम 'पांचाली' भी है। इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना, चित्रा और ब्रह्म की अधिष्ठातृ ।

## द्रौपदी

द्रुपद-सुता जो पाण्डवों को ब्याही गई और कौरवों की भरी सभा में दु:शासन आदि द्वारा अपमानित हुई तथा जो महाभारत के युद्ध का एक कारण बनी । द्रौपदी का नाम कृष्णा भी है ।

## द्वादशाक्षर

विष्णु का जाप करने के लिए बारह अक्षरों का मंत्र :—
'ओं नमो भगवते वासुदेवाय' ।

## द्वापर

यह ८६४००० वर्षों का माना गया है। (दे० 'युग')

### द्वारका, द्वारिका, द्वारावती

गुजरात प्रान्त में स्थित श्रीकृष्ण की राजधानी। इसीलिए श्रीकृष्ण की उपाधियाँ द्वारिकाधीश, द्वारिकेश आदि हैं। यह पुरी सात पुरियों में से एक है।

### द्वारकाधीश

द्वारका में स्थित श्रीकृष्ण की एक मूर्ति।

### द्वीप

सात महाद्वीपों (पृथ्वी के बड़े विभागों) के नाम हैं :—
जम्बू द्वीप (क्षीर सागर में), प्लक्ष द्वीप या लंका द्वीप (इक्षुरस सागर में), शाल्मलि द्वीप (सुरोद सागर में), कुश द्वीप (घृत सागर में), क्रौंच द्वीप (क्षीर सागर में), शाक द्वीप (दधिमण्डोद सागर में), पुष्कर द्वीप (शुद्धबलोद सागर में)। ये द्वीप महाराज प्रियव्रत ने बनाए थे। उन्होंने पुत्रों के नाम पर एक-एक द्वीप को वर्षों में विभाजित किया, जैसे—भारतवर्ष जम्बूद्वीप में। इन सात द्वीपों के नाम भी मिलते हैं :—

जम्बू, पुष्कर, शाक, शाल्मली, कुश, गोमेद, क्रौंच।

### द्वैपायन

व्यास जी का नाम। पूरा नाम है—'कृष्णद्वैपायन' (दे०); एक तालाब जिसमें कुरुक्षेत्र से भाग कर दुर्योधन छिपा था।

## ध

### धनंजय

अर्जुन का नाम; विष्णु; शरीर की एक वायु।

### धनद

कुबेर और अग्नि की उपाधि।

### धनुर्वेद

अथर्व वेद के अन्तर्गत एक उपवेद जिसमें बाण चलाने की विद्या का उल्लेख है। कहीं-कहीं इसे यजुर्वेद का उपवेद भी बताया गया है।

### धन्या

मनु की एक कन्या जो ध्रुव को ब्याही थी।

## धन्वन्तरि

देवतओं का वैद्य । ये समुद्र-मंथन के समय निकले थे और आयुवद के प्रधान आचार्य माने जाते हैं ।

## धर

कच्छपावतार; एक वसु; विष्णु; श्रीकृष्ण ।

## धर्म के दस लक्षण

अहिंसा, क्षमा, अस्तेय, सत्य, श्रद्धा, इन्द्रियसंयम, यज्ञ, तप, ज्ञान, अपरिग्रह ।

इस क्रम से भी इन्हें कहा गया है :—

धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शुचि, इन्द्रियनिग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य, अक्रोध ।

धर्म के चार पद माने गए हैं :—विद्या, सत्य, तपस्या, दान ।

## धर्मचक्र

बुद्ध की धर्म-शिक्षा जो काशी से प्रारम्भ हुई ।

## धर्मशास्त्र

मनु, याज्ञवल्क्य, पराशर, कात्यायन आदि द्वारा निर्मित स्मृतियाँ जिनमें मानव जाति के कर्म, आचार आदि के बारे में बातें बताई गई हैं ।

धर्मशास्त्र के प्रवर्तक हैं :—

मनु, याज्ञवल्क्य, अत्रि, विष्णु, हारीत, उशना, अंगिरा, यम, आपस्तम्ब, संवर्त, कात्यायन, वृहस्पति, पराशर, व्यास, शंख, लिखित, दक्ष, गौतम, शातातप और वशिष्ठ ।

## धवलागिरि

हिमालय पहाड़ की एक ऊँची चोटी ।

## धातु

शरीर की सात धातुएँ हैं :—

रक्त, पित्त, मांस, वसा, मज्जा, अस्थि और शुक्र ।

## धातु

खनिज़ धातुएँ हैं :—

सोना (सप्तर्षियों की अत्यन्त सुन्दर पत्नियों को देखकर अग्नि के वीर्यपात से उत्पन्न), चाँदी (त्रिपुरासुर वध के समय महादेव जी के

वाम नेत्र के अश्रुपात से उत्पन्न), ताँबा (कार्त्तिकेय के वीर्य से उत्पन्न), लोहा (लोमिन दैत्यों के शरीर से उत्पन्न), सीसा और राँगा। (दे० 'अष्टधातु' भी )

**धातु**

बुद्ध या किसी महात्मा की अस्थि जिसे बौद्ध किसी डिब्बे में बन्द कर स्थापित करते हैं। (दे० 'पंचधातु')

**धान**

इसके तीन प्रधान भेद हैं :—

आमन (अगहनी), आउस (भँदई) और बोरो (जेठी)।

महीन चावल के भेद हैं :—बासमती, लटेरा, रामभोग, रानीकाजर, तुलसीबास, मोतीचूर, समुद्रफेन, कनकजीरा।

साधारण धान :—बगरी, दुद्धी, साठी, बरमा, रामजवाइन।

**धाम**

ये चार हैं :—

द्वारका, बदरिकाश्रम, काशी (इसके स्थान पर रामेश्वरम् का उल्लेख भी मिलता है) और पुरी (जगन्नाथ पुरी)।

**धारणा**

योग में मन की वह स्थिति जिसमें केवल ब्रह्म का ही ध्यान रहता है।

**धुंधुमार**

त्रिशंकु का पुत्र।

**धूमावती**

दश महाविद्याओं में से एक।

**धृतराष्ट्र**

विचित्रवीर्य की विधवा रानी के गर्भ से व्यास के साथ नियोग करा कर उत्पन्न हुआ पुत्र और दुर्योधन का पिता।

**धृष्टद्युम्न**

द्रुपद राजा का पुत्र और द्रौपदी का भाई। इसी ने कुरुक्षेत्र के मैदान में अश्वत्थामा के वध की झूठी खबर सुन ध्यानमग्न द्रोणाचार्य का सिर काटा था।

**धेनुक**

बलराम द्वारा मारा गया दैत्य।

**धोती या धौति**

हठयोग की वह क्रिया जिसमें योगी कपड़े का लंबा टुकड़ा मुँह से निगलते हैं।

**ध्रुव**

एक तारा; उत्तानपाद राजा और सुनीति का पुत्र जिसने पिता द्वारा अपमानित होने पर अपने तप के प्रभाव से राज्य प्राप्त किया। भगवान् के वरदान-स्वरूप ये सब लोकों, ग्रहों, नक्षत्रों से ऊपर अचल भाव से रहते हैं।

**ध्रुवलोक**

वह लोक जो सत्य लोक के अन्तर्गत है और जिसमें ध्रुव स्थित है।

## न

**नंद**

गोकुल के प्रमुख गोप जिनके यहाँ श्रीकृष्ण की बाल्यावस्था व्यतीत हुई। यशोदा इनकी पत्नी थीं; नवनिधियों (दे०) में से एक; विष्णु; गौतम बुद्ध के सौतेले भाई का नाम।

**नंदक**

श्रीकृष्ण के खड्ग का नाम।

**नंदकुमार**

श्रीकृष्ण का नाम।

**नंदगाँव**

वृन्दावन का एक गाँव जहाँ नन्द रहते थे।

**नंदन (वन)**

इन्द्र का स्वर्ग में उपवन जिसमें पारिजात, मंदार, कल्पवृक्ष आदि हैं; विष्णु; शिव।

**नंदरानी**

माता यशोदा।

नंदलाल

श्रीकृष्ण।

नंदि

शिवजी के प्रधान गण का नाम।

नंदिग्राम

उस ग्राम का नाम जहाँ राम के वनवास-काल में भरत जी तपस्या में रत रहते थे।

नंदिकेश्वर

शिवजी का प्रधान गण अर्थात् शिव के द्वारपाल बैल का नाम; नंदि-पुराण नामक उपपुराण।

नंदिघोष

अर्जुन के रथ का नाम।

नंदिनी

उमा; गंगा; दुर्गा; वसिष्ठ की कामधेनु जो सुरभि की कन्या थी। राजा दिलीप ने इसी गौ की सिंह से रक्षा की और इसी की आराधना के फलस्वरूप उन्हें रघु नामक पुत्र प्राप्त हुआ। (दे० 'कामधेनु' भी।)

नंदी

शिव का प्रधान गण। वैसे शिव के नन्दीगण हैं:—शृंगी, भृंगी, रिटि, तुण्डी, नन्दिक और नन्दिकेश्वर; शिव के नाम पर दागा हुआ बैल; विष्णु।

नकुल

पांडवों में चौथे जो अश्विनीकुमार द्वारा पाण्डु की पत्नी माद्री के गर्भ से पैदा हुए थे।

नक्षत्र

प्रधान नक्षत्र हैं:—

अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी (ब्राह्मी), मृगशिरा (अग्रहायनी), आर्द्रा, पुनर्वसु (यमक), पुष्य, अश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तरा-फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा (राधा), अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रावण, श्रविस्ता, शतभिण, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती।

कुछ अन्तर के साथ २७ नक्षत्रों को ये नाम भी हैं;—

१. अश्विनी, २. भरणी, ३. कृत्तिका, ४. रोहिणी, ५. मृगशिरा, ६. आर्द्रा, ७. पुनर्वसु, ८. पुष्य, ९. अश्लेषा, १०. मघा, ११. पूर्वा-

फाल्गुनी, १२. उत्तराफाल्गुनी, १३. हस्त, १४. चित्रा, १५. स्वाती, १६. विशाखा, १७. अनुराधा, १८. ज्येष्ठा, १९. मूल, २०. पूर्वाषाढ़, २१. उत्तराषाढ़, २२. श्रवण, २३. धनिष्ठा, २४. शतभिष, २५. पूर्वाभाद्रपद, २६. उत्तराभाद्रपद, २७. रेवती। (ज्योतिष के अनुसार 'अभिजित' नामक एक और नक्षत्र उत्तराषाढ़ के बाद माना जाता है। इस प्रकार कुल २८ नक्षत्र हुए।)

नगदंती

विभीषण की स्त्री का नाम।

नचिकेता

यम से ब्रह्मज्ञान प्राप्त करनेवाले ऋषि। ये वाजश्रवा ऋषि के पुत्र थे। १८०३ ई० के लगभग सदल मिश्र कृत 'नासिकेतोपाख्यान' में इन्हीं का आख्यान है।

नटवर

श्रीकृष्ण का एक नाम।

नटेश्वर

महादेव जी की उपाधि।

नमुचि

एक दैत्य जिसे इन्द्र ने मारा; कामदेव का एक नाम; एक ऋषि का नाम; एक दैत्य जो शुम्भ और निशुम्भ का भाई था।

नरक

प्रागज्योतिषपुर का अधिपति एक असुर जो अदिति का कुण्डल ले भागा था। देवताओं द्वारा प्रार्थना करने पर श्रीकृष्ण ने उसका वध किया।

नरक

मनुस्मृति में २१ नरक माने गए हैं :—

तामिस्र, अंधतामिस्र, रौरव, महारौरव, नरक, महानरक, कालसूत्र, संजीवन, महावीचि, तपन, प्रतापन, संहात, काकोल, कुड्मल, प्रति-मूर्तिक, लौहशंकु, ऋत्रीष, शाल्मली, वैतरणी, असिपत्र-वन, लौह-दारक।

भागवत में निम्नलिखित नरक बताए गए हैं :—

तामिस्र, अंध-तामिस्र, रौरव, महारौरव, कुंभीपाक, काल-सूत्र, असि-पत्रवन, शूकरमुख, अंधकूप, कृमिभोजन, सन्दंश, तप्तशूर्म्मि, वज्र-

कण्टक, शाल्मली, वैतरणी, पूयोद, प्राणरोध, विशसन, लालाभक्ष, सारमेयादन, अवीची और अयःपान । कहीं-कहीं नरक २८ माने गए हैं । इस सूची में उपर्युक्त नामों के अतिरिक्त निम्नलिखित सात नाम और जोड़े जा सकते हैं :—

शूलप्रोत, दंदशूक, क्षारमर्दन, रक्षोगण-भोजन, पर्यावर्तन, अवटर निरोधन, सूची मुख । इन नामों के अतिरिक्त तप्तकुंभ, तप्तमूर्ति, रुधिरांभस, लवण, वटारोध, अवीचिरयःपान, तप्तभूमि, क्षारकर्दम आदि नाम भी मिलते हैं । ८६ नरक कुण्ड भी हैं—तप्तकुण्ड, क्षार-कुण्ड, वह्निकुण्ड आदि । इन ८६ कुण्डों का उल्लेख ब्रह्मवैवर्त पुराण में मिलता है । (दे० 'नरक कुण्ड') ।

इस भू-मण्डल के दक्षिण, भूमि के नीचे तथा जल के ऊपर एक स्थान नरक माना गया है जहाँ पितृगण और यम का निवास रहता है । वे चित्रगुप्त के लेखानुसार प्रत्येक मृतात्मा को उसके अपने कर्मानुसार नरक में कष्ट भोगने के लिए भेजते हैं । जैसे, जो व्यक्ति पशु-पक्षी मार कर खाता है उसे कुंभीपाक नरक में तप्त तेल में डाला जाता है ।

**नरक-कुंड**

८६ माने गए हैं :—

१. वह्निकुण्ड, २. तप्त, ३. क्षार, ४. विट्, ५. मूत्र, ६. श्लेष्म, ७. गर, ८. दूधिका, ९. वसा, १०. श्रुक्र (शुक्र), ११. अस्टक, १२. अश्रु, १३. गात्रमल, १४. कर्णविट्, १५. मज्ज, १६. मांस, १७. नख, १८. लोम, १९. केश, २०. अस्थि, २१. ताम्र, २२. लौह, २३. तीक्ष्णकण्टक, २४. विध, २५. धर्म्य, २६. तप्तसुरा, २७. प्रतप्त तैल, २८. कुन्त, २९. क्रमि ३०. पूय, ३१. सर्प, ३२. मश, ३३. दंश, ३४. गरल, ३५. वज्रदंष्ट्र, ३६. वृश्चिक, ३७. शर, ३८. श्रूल (शूल), ३९. खड्ग, ४०. गोल, ४१. नक्र, ४२. काक, ४३. सञ्चान, ४४. वाज, ४५. वज्र, ४६. तप्तपाषाण, ४७. तीक्ष्णपाषाण, ४८. लाला, ४९. मसी, ५०. चूर्ण, ५१. चक्र, ५२. वक्र, ५३. कूर्म्य, ५४. ज्वाला, ५५. भस्म, ५६. दग्ध, ५७. तप्तशूर्म्मी, ५८. असिपत्र, ५९. क्षुरधार, ६०. सूचीमुख, ६१. गोधामुख, ६२. नक्रमुख, ६३. गजदंश, ६४. गोमुख, ६५. कुम्भीपाक, ६६. कालसूत्र, ६७. अव-टोद, ६८. अरुन्तुद, ६९. पांशुभोज, ७०. पाशवेष्ट, ७१. शूलपोत, ७२. प्रकम्पन, ७३. उल्कामुख, ७४. अकूप, ७५. वेधन, ७६. दण्ड-

ताड़न, ७७. जालबद्ध, ७८. देहचूर्ण, ७९. दलन, ८०. शोषण, ८१. फष, ८२. सूर्प, ८३. ज्वालामुख, ८४. जिह्म, ८५. धूमान्ध, ८६. नागवेष्टन।

**नरक चतुर्दशी**

कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी जिस दिन घर का कूड़ा-कचरा निकाल कर बाहर फेंका जाता है।

**नरकासुर**

पृथ्वी के गर्भ में उत्पन्न हुआ एक धनी असुर जिसका सिर विष्णु भगवान् ने अपने सुदर्शन चक्र से काटा।

**नरनारायण**

कृष्ण का नाम; दो ऋषि जो भगवान् विष्णु के अवतार माने जाते हैं।

**नरांतक**

रावण का एक पुत्र जिसे राम-रावण युद्ध में अंगद ने मारा।

**नर्मदेश्वर**

अंडाकार शिवलिंग जो नर्मदा नदी से निकलते हैं।

**नल**

एक वानर यूथपति जिसने लंका पर आक्रमण करते समय श्रीराम की सहायतार्थ समुद्र पर पुल बाँधने में अत्यधिक सहायता की; राजा नल निषध देश के चन्द्रवंशी राजा वीरसेन के पुत्र थे और इनका विवाह विदर्भ देश के राजा भीम की कन्या दमयन्ती के साथ हुआ था। नल-दमयन्ती का आख्यान प्रसिद्ध है। इन्होंने नाना प्रकार के कष्ट भोगे।

**नलकूबर**

कुबेर के एक पुत्र जो नारद मुनि के शाप के फलस्वरूप अपने भाई मणिग्रीव सहित यमलार्जुन के रूप में उत्पन्न हुए और श्रीकृष्ण के स्पर्श से शापमुक्त हुए।

**नलसेतु**

नल-नील द्वारा बनाया गया रामेश्वरम् के निकट पुल।

**नवकन्यका**

दे० 'देवी'।

## नव कोश

अन्नमय, शब्दमय, प्राणमय, आनन्दमय, मनोमय, प्रकाशमय, ज्ञानमय, आकाशमय, विज्ञानमय ।

## नव खण्ड

भारत, इलावर्त, रम्यक्, कुरु, हरिवर्ष, किंपुरुष, केतुमाल, भद्राश्व, हिरण्य ।

ये नाम भी मिलते हैं :—

भारत, किंपुरुष, भद्र, हरि, हिरण्य, केतुमाल, इलावृत, कुश और रम्य ।

## नवगिरहीं

नवग्रहों के अनुसार रत्नों का आभूषण या हार :—

सूर्य—वैदूर्य (लहसुनिया), चन्द्र—नीलम, मंगल—माणिक, बुध—पुखराज, गुरु—मोती, शुक्र—हीरा, शनि—मूँगा, राहु—गोमेद, केतु—पन्ना ।

## नव गुण

शम, दम, तप, शौच, क्षमा, आर्जव, ज्ञान, विज्ञान और आस्तिक्य ।

## नव ग्रह

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु ।

## नव दुर्गा

शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री । नवरात्र में इनकी पूजा होती है । (दे० 'देवी' भी)

## नव द्वार

दो नेत्र, दो कान, दो नासा-छिद्र, मुख, गुदा और लिंग । (दे० 'दश द्वार' भी)

## नवधा भक्ति

श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन । प्रेमाभक्ति को मानने वाले दशधा भक्ति मानते हैं ।

## नव (नौ) नाड़ी

इड़ा (चन्द्र नाड़ी), पिंगला (सूर्य नाड़ी), सुषुम्ना (मध्य नाड़ी), गन्धारी (दाहिने नेत्र की नाड़ी), हस्तिजिह्वा (बाएँ नेत्र की नाड़ी), पूषा (दाहिने कान की नाड़ी), पस्यनी (बाएँ कान की नाड़ी), लकुहा (गुदा नाड़ी), अलम्बुषा (लिंग नाड़ी) ।

## नवनिधि

कुबेर की नौ निधियाँ :—

महापद्मञ्च पद्मञ्च शंखौ मकर कच्छपौ ।
मुकुन्द कुन्द नीलाञ्च खर्वञ्च निधयो नवः ।। (दे० 'कुबेर' भी )

## नवरत्न

राजा भोज—विक्रमादित्य की सभा के नौ रत्न :—

धन्वंतरिक्षपणकामरसिंहशंक—
वेताल भट्ट घटकर्परकालिदासाः ।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः समायाम्
रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य ।।

(धन्वन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वेताल भट्ट, घटकर्पर, कालिदास, वराहमिहिर, वररुचि ।)

## नवरत्न

खनिज रत्न हैं :—

मोती, माणिक्य, हीरा, गोमेद, वैदूर्य (लहसुनिया), विद्रुम (मूँगा), पद्मराग, मरकत और नीलम ।

नाम इस प्रकार भी मिलते हैं :—

हीरा, पन्ना (मरकत), माणिक, नीलम, लहसुनिया, पुखराज, (पुष्पराग), गोमेद, मोती, मूँगा ।

## नव रस

काव्य के नव रस :—

शृंगार, करुण, हास्य, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शान्त ।

## नवरात्र

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से नवमी तक और आश्विन, शुक्ला प्रतिपदा से नवमी तक के नौ-नौ दिन जिनमें लोग धर्मानुष्ठान किया करते हैं । आश्विन, चैत्र, आषाढ़ और माघ के शुक्ल पक्ष के नौ दिन-रात भी नवरात्र माने जाते हैं । दुर्गा-पूजा के नौ दिन ।

## नवशक्ति

दे० 'देवी' ।

## नवान्न

एक प्रकार का श्राद्ध ।

### नहुष

इक्ष्वाकुवंशी तथा चन्द्रवंशी पुरूरवा राजा का पौत्र, राजा अम्बरीष का पुत्र और राजा ययाति का पिता। सप्तर्षियों के कंधों पर स्वर्ग जाते समय उनका अपमान करने के कारण नहुष को शाप मिला और वह सर्प बना; एक नाग का नाम।

### नांदीमुख

एक श्राद्ध जो विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर किया जाता है।

### नाक्षत्र

६० घड़ी के दिन से ३० दिवस का मास; जितने दिनों में चन्द्रमा २७ नक्षत्रों पर १ बार घूम जाता है उसे नाक्षत्र मास कहते हैं।

### नाग

कश्यप और कद्रू से उत्पन्न नाग ये थे :—

अनंत, वासुकि, कवंल, कर्कोटक, पद्म, महापद्म, शंख, कुलिक और अपराजित।

नागों की विभिन्न संख्याएँ उपलब्ध होती हैं। ऊपर नौ नाम दिए गए हैं। किन्तु मुख्य नाग सात भी माने गए हैं :—

अनन्त, तक्षक, कर्क, महापद्म, पद्म, शंख और गुलिक।

आठ मुख्य नाग भी माने गए हैं और उनके नामों में भी भिन्नता है :—

शेष, अब्ज (पद्म), वासुकि, महाम्बुज (महापद्म), तक्षक, संखधर, कर्कोतक, कुलिक।

अथवा

वासुकि, तक्षक, काकोटक, शंख, गुलिक, पद्म, महापद्म, अनन्त।

नौ नागों के ये नाम भी मिलते हैं :—

शंख, कुलीक, महाशंख, श्वेत, धृतराष्ट्र, शंखचूड़, देवदत्त, तक्षक और वासुकि।

भारतवर्ष में बस जाने वाली शक जाति की एक शाखा भी 'नाग' नाम से प्रसिद्ध है; हिमालय के उस पार एक भूमिभाग का नाम। (दे० 'पाताल' भी)

### नागपंचमी

श्रावण शुक्ला ५ को नाग-संबंधी एक उत्सव विशेष।

### नागपति (या नागराज)

सर्पों का राजा शेषनाग और वासुकि; गजों का राजा ऐरावत।

**नागपाश**

वरुण का फंदा; एक ऐन्द्रजालिक फन्दा जो युद्ध में शत्रु को फँसाने के लिए व्यवहृत होता था।

**नागलोक**

पाताल लोक।

**नागा**

नंगे रहने वाले शैव सम्प्रदाय के साधु; आसाम के पहाड़ी हिस्सों में रहने वाली एक जाति।

**नागार्जुन**

माध्यमिक शाखा के चलाने वाले बौद्ध महात्मा या बोधिसत्व।

**नाटक**

दे० 'रूपक' और 'उपरूपक'।

**नाड़ियाँ**

शरीर में स्थित तीन प्रधान नाड़ियाँ हैं :—
इड़ा, सुषुम्ना और पिंगला। सुषुम्ना बीच में स्थित है।

**नाड़ी चक्र**

हठयोग के अनुसार नाभि के पास वह अण्डाकार स्थान जहाँ से सब नाड़ियाँ निकली हैं।

**नानक**

सिक्ख सम्प्रदाय के प्रवर्तक पंजाब के एक प्रसिद्ध सन्त।

**नानकपंथ**

गुरु नानक के अनुयायी सिक्खों का सम्प्रदाय।

**नाभाग**

राजा ययाति के पुत्र और इक्ष्वाकुवंशीय राजा; ये अज के पिता और दशरथ के पितामह थे।

**नामदेव**

महाराष्ट्र के एक प्रसिद्ध कृष्ण-भक्त कवि। ये वामदेव जी के दौहित्र थे।

## नारद

ब्रह्मा के दस मानस पुत्रों में एक तथा प्रसिद्ध देवर्षि। ये भगवान् के पहुँचे हुए भक्त होने के साथ-साथ, दो पक्षों को परस्पर लड़ाते भी रहते थे। कुछ विद्वानों का मत है कि नारद कोई एक व्यक्ति न होकर एक संप्रदाय था। विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम भी नारद था।

## नारद पुराण

तीर्थों और व्रतों का उल्लेख करने वाला महापुराण। बृहन्नारदीय एक उप पुराण भी है।

## नारायण

विष्णु; कृष्ण यजुर्वेद के अन्तर्गत एक उपनिषद्।

## नारायणी

श्रीकृष्ण की सेना का नाम जो उन्होंने महाभारत की लड़ाई में दुर्योधन को दे दी थी; दुर्गा; गंगा; लक्ष्मी।

## नारी

मनु ने नारी के छह दूषण बताए हैं :—

पानं दुर्जनसंसर्गः पत्या च विरहोऽटनं।
स्वप्नोऽन्य गृहवासश्च नारीणां दूषणानि षट्॥

## निकुंभ

सुन्द और उपसुन्द के पिता का नाम; शिव के एक अनुचर का नाम; कुंभकर्ण का एक पुत्र जो रावण का मंत्री भी था।

## निकषा

रावण की माता का नाम।

## निघंटु

वैदिक कोश। इसकी एक व्याख्या यास्क ने की है जो निरुक्त के नाम से प्रसिद्ध है।

## निधि

कुबेर की नौ प्रकार की निधियाँ (रत्न) मानी गई हैं :—
पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील और खर्व (या वर्च)।

## निमि

इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा जो मिथिला राजवंश का पूर्व पुरुष था। महाभारत में दत्तात्रेय के पुत्र निमि का उल्लेख भी मिलता है।

## निमिराज

राजा जनक की उपाधि।

## निरुक्त

यास्क द्वारा निघंटु की व्याख्या का नाम। यह छह वेदांगों में से एक है।

## निर्जला एकादशी

जेठ सुदी एकादशी जिस दिन लोग निर्जल व्रत रखते हैं।

## निर्माल्य

वह वस्तु जो देवता पर चढ़ चुकी हो।

## निशुंभ

एक दैत्य जिसका दुर्गा देवी ने वध किया। यह शुंभ तथा नमुचि का भाई था।

## निषध

एक पर्वत जो हरिवर्ष की सीमा पर है; श्री रामचन्द्र के प्रपौत्र और कुश के पौत्र का नाम; एक प्राचीन देश जो विंध्याचल पर्वत पर बसा हुआ था।

## निषाद

एक प्राचीन अनार्य जाति जो संभवत: शृंगवेरपुर के आसपास बसी हुई थी।

## नीमावत

निम्बार्काचार्य का अनुयायी वैष्णव।

## नीलकण्ठ

शिवजी का नामान्तर (दे० 'हलाहल')।

## नीलचक्र

जगन्नाथ जी के मंदिर के शिखर पर माना जाने वाला चक्र।

## नूह

हज़रत नूह जिनके समय में प्रलय का दृश्य उपस्थित हो गया था।

### नृग
वैवस्वत मनु के पुत्र जिन्हें एक ब्राह्मण के शाप से गिरगिट होना पड़ा।

### नृसिंह
भगवान् विष्णु का चौथा अवतार जिसे उन्होंने हिरण्यकशिपु से अपने भक्त प्रह्लाद को बचाने के लिए धारण किया। इनका सिर सिंह का और शरीर मनुष्य जैसा था। ये खंभा फाड़ कर निकले थे, क्योंकि पृथ्वी और जल का कोई प्राणी हिरण्यकशिपु को न मार सकता था।

### नैमिषारण्य
गोमती नदी के किनारे वर्तमान सीतापुर (उत्तर प्रदेश) के निकट जिसे आज नीमसार या नीमखार भी कहते हैं।

## प

### पंक्तिग्रीव
रावण का नाम।

### पंक्तिपावन
वह ब्राह्मण जो सभी मांगलिक कार्यों में बुलाया जाय—जैसे यज्ञ, भोजन, दान आदि।

### पंक्तिरथ
दशरथ का नाम।

### पंचकन्या
ऐसी स्त्रियाँ जो विवाह हो जाने पर भी कन्याएँ समझी जाती हैं। ऐसी स्त्रियाँ पाँच हैं :—
अहल्या, कुन्ती, तारा, द्रौपदी और मंदोदरी।

### पंचकर्म
पांच प्रकार के कर्म :—उत्क्षेपण, अपक्षेपण, आकुंचन, प्रसारण और गमन।
चिकित्सा के अन्तर्गत पाँच क्रियाएँ :—
वमन, रेचन, नस्य, अनुवासन और निरूह।

### पंचकोश (शरीर)
अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय। हमारे यहाँ इनसे शरीर संघटित हुआ माना गया है।

पंचक्रोशी

वाराणसी का एक नाम।

पंचगंगा

गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपापा नदियों का समूह।

पंचगव्य

गौ से उत्पन्न पाँच पदार्थ :—

दूध, दही, घी, मूत्र और गोबर। ये पवित्र माने जाते हैं और प्रायश्चित करते समय इनका उपयोग किया जाता है।

पंचगुण

रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द।

पंचगौड़

सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल और उत्कल—इन पाँच प्रकार के ब्राह्मणों का समूह जो विंध्य पर्वत के उत्तर में माना जाता है। (दे० 'पंचद्रविड़' भी।)

पंचजन

गंधर्व, पितर, देव, असुर और राक्षस; ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद (अन्त्यज); मनुष्य शरीर के पाँच प्राण, अपान आदि।

पंचजन

एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

पंचजन्य

श्रीकृष्ण का शंख (पांचजन्य)।

पंचजीव

देवता, मानव, गन्धर्व, नाग और पितृ।

पंच ज्ञानेन्द्रियाँ

आँख, नाक, कान, रसना और त्वचा।

पंचतंत्र

पाँच अध्यायों में नैतिक विषय संबंधी संस्कृत ग्रन्थ। (दे० 'तंत्र' भी)

पंचतत्त्व

पृथ्वी, जल, अग्नि (तेज्स), आकाश और वायु।

पंच तन्मात्रा

इन्द्रियों से ग्रहण किए जाने वाले पाँच विषय अथवा पंचतत्त्वों के गुण :—

शब्द, रस, स्पर्श, रूप और गन्ध। स्थूल महाभूतों के कारणरूप ये सूक्ष्म महाभूत हैं।

**पंचतपस्**

वह साधु जो ग्रीष्म ऋतु में पंचाग्नि (दे०) तापता है।

**पंचतिक्त**

पाँच कड़ुवी दवाएँ :—'निवामृतवृषपटोलनिदिग्धकाञ्च।'

गिलोय (गुडुच), कंटकारी (भटकटैया), सोंठ, कुट और चिरायता (चक्रदत्त)।

**पंचतीर्थ**

दे० 'तीर्थ'।

**पंचदीर्घ**

शरीर के पाँच बड़े भाग :—

बाहु नेत्रद्वय कुक्षिर्द्वे तु नासे तथैव च।
स्तनयोरन्तरम् चैव पंचदीर्घ प्रचक्षते॥
(बाहु, नेत्र, कुक्षि, नासिका और स्तनों के बीच का भाग।)

**पंचदेवता**

आदित्यं गणनाथं च देवीं रुद्र च केशवम्।
पंचदैवतमित्युक्तं सर्वकर्मसु पूजयेत्॥
(आदित्य, रुद्र, विष्णु, गणेश और देवी)

**पंचद्रविड़**

विंध्य पर्वत के दक्षिण में पाया जाने वाला ब्राह्मण समूह :—
महाराष्ट्र, तैलंग, कर्णाट, गुर्जर और द्रविड़।

**पंचधातु**

सोना, चाँदी, ताँबा, सीसा और राँगा।

अथवा—ताँबा, पीतल, राँगा, सीसा और लोहा।

**पंचनद**

शतद्रु (सतलज), विपाशा (व्यास), इरावती (रावी), चन्द्रभागा (चिनाब), और वितस्ता (झेलम)—पंजाब की ये पाँच नदियाँ जिनके कारण पंजाब को 'पंचनद' कहा गया है।

**पंचनाथ**

बदरीनाथ, द्वारकानाथ, जगन्नाथ, रंगनाथ और श्रीनाथ।

### पंचनीराजन

देवता के सामने घुमाई जाने वाली पाँच चीज़ें :—
दीपक, कमल, वस्त्र, आम और पान ।

### पंचपर्व

चतुर्दश्यष्टमी चैव अमावास्या च पूर्णिमा ।
पर्वाण्येतानि राजेन्द्र रविसंक्रान्ति रेवच ।।

### पंचपल्लव

आम, जामुन, कैथा, बिजौरा और बेल के पल्लव ।

### पंचपितृ

जनकश्चोपनेता च यच्च कन्यां प्रयच्छति।
अन्नदाता भयत्राता पंचैते पितरः स्मृताः ।।

### पंच प्राण या वायु

प्राण (हृदय में स्थित श्वासोच्छ्वास की क्रिया), अपान (अधोभाग में स्थित मलमूत्र-विसर्जन की क्रिया), व्यान (पूरे शरीर में व्याप्त), उदान (मृत्यु के समय जीवात्मा जो शरीर से निकलता है), समान (नाभिस्थल में स्थित पाचन-क्रिया में सहायक) ।

### पंचप्रासाद

वह मन्दिर जिसमें चार कोनों पर चार कलस और लाट या घौरहर हो।

### पंचबाण (कामदेव)

पुष्प बाण हैं :—

अरविंदमशोकं च चूतं च नवमल्लिका ।
नीलोत्पलं च पंचैते पंचबाणस्य सायकाः ।।

अथवा मन से संबंधित बाण हैं :—

सम्मोहनोन्मादनौ च शोषणस्तापनस्तथा ।
स्तम्भनश्चति कामस्य पंचबाणः प्रकीर्तिताः

(सम्मोहन, उन्माद, शोषण, तपन, स्तम्भन अथवा द्रवण, शोषण, तपन, मोहन, उन्माद ।)

### पंचब्रह्म

श्रोत्र, त्वक, चक्षु, जिह्वा और उपस्थ; क्षेत्रज्ञ, प्रकृति, बुद्धि, अहंकार, मन; ईशान, तत्पुरुष, घोर, वामदेव, सद्योजात; ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु, ईश्वर, सदाशिव; शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध; भूमि, जल, अग्नि,

वायु और आकाश; वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध और नर-नारायण।

**पंचभूत**

दे० 'पंचतत्त्व'।

**पंचमकार**

तांत्रिकों या वाम मार्ग में मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन का प्रथम अक्षर 'म'।

**पंचमहापातक**

मनुस्मृति के अनुसार ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरु की स्त्री के साथ व्यभिचार और इन पापों के करने वालों का संग।

**पंचमहायज्ञ**

गृहस्थों के लिए आवश्यक पाँच कर्म :—

स्वाध्याय, पितृतर्पण, होम (देवयज्ञ), बलिवैश्वदेव (भूतयज्ञ) और अतिथि-पूजन (मनुष्य-यज्ञ या नृयज्ञ)।

**पंचमहाव्रत**

अहिंसा, सूनृता, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह—ये पाँच आचरण योगशास्त्र के अनुसार माने गए हैं जिन्हें पतंजलि ने 'यम' कहा है।

**पंचमुद्रा (तंत्र)**

आवाहनी, स्थापनी, सन्निधापनी, संबोधिनी, सम्मुखीकरणी।

**पंचरत्न**

नीलम, हीरा, पद्मराग, मोती और मूँगा।

अथवा—सोना, चाँदी, मोती, रावटी (लाजावर्त) और मूँगा।

अथवा—सोना, हीरा, नीलम, पद्मराग और मोती।

**पंचलक्षण**

दे० 'पुराण'।

**पंचलवण**

काँच, सेंधा, सामुद्र, विट (साँचर) और सोंचर (काला नमक)।

**पंचवटी**

पाँच वृक्षों का समूह—अश्वत्थ (पीपल), बिल्व, वट, आँवला और अशोक; पंचवटी दण्डकारण्य में आधुनिक नासिक के पास मानी जाती है। यहीं सीताहरण हुआ था।

### पंचवर्ग

पाँच वस्तुओं का समूह, जैसे—पंचतत्त्व, पंचेन्द्रियाँ, पंचमहायज्ञ आदि।

### पंचवर्ण

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और अन्त्यज (निषाद)।

### पंचवल्कल

पाँच वृक्षों की छाल का समुदाय—बरगद, गूलर, पीपल, पाकर, बेंत (या सिरिस)।

### पंचशब्द

मांगलिक कार्यों के समय तंत्री, ताल, झांझ, नगाड़ा और तुरही के शब्द; व्याकरण के अनुसार—सूत्र, वार्तिक, भाष्य, कोष और महा-कवियों के प्रयोग।

### पंच सुगंध

'कर्पूरकक्कोललवंगपुष्पगुवाकजातीफलपंचकेन।
समांशभागेन च योजितेव मनोहरं पंच सुगन्धकं स्यात्॥

### पंचसूना

पाँच प्रकार की हिंसा जो गृहस्थों से काम करते समय हुआ करती है :—

चूल्हा जलाना, आटा पीसना, झाड़ू लगाना, कूटना, पानी का घड़ा रखना।

### पंचांग

वैद्यक के अनुसार वृक्ष के पाँच अंग :—जड़, छाल, पत्ती, फूल और फल; ज्योतिष के अनुसार पंचांग या तिथि-पत्र जिसमें तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण ये पाँच बातें रहती हैं; प्रणाम का एक भेद जिसमें घुटना, हाथ और माथा पृथ्वी पर टेक कर और आँख देवता की ओर करके मुँह से 'प्रणाम' शब्द कहा जाता है।

अथवा—

'चन्दनागुरुकर्पूरकुंकुमं गुग्गुलुस्तथा।
पञ्चांग भुच्यते धीरैर्धूपदानविधाविदम्॥
(चन्दन, अगरु, कर्पूर, केशर, गुग्गुल)

### पंचाक्षर

'नमः शिवाय'।

पंचाग्नि

दक्षिण, गार्हपत्य, आहवनीय, सभ्य और आवसथ्य—ये पाँच यज्ञीय अग्नियाँ हैं। इनके ये नाम भी मिलते हैं :—अन्वाहार्य्य, गार्हपत्य, आहवनीय, आवसथ्य और सभ्य।

छान्दोग्य उपनिषद् के अनुसार :—

सूर्य, पर्जन्य, पृथ्वी, पुरुष और योषित्।

पंचाग्नि

चारों ओर प्रज्वलित अग्नि और ऊपर प्रचण्ड सूर्य; मनु नामक अग्नि और उनकी पत्नी निशा के अग्नि रूप पाँच पुत्र—वैश्वानर, विश्वपति, सन्निहित, कपिल और अग्रणी।

पंचामृत

देवपूजन में प्रयुक्त दूध, शर्करा, घृत, दधि और मधु का मिश्रण।

पंचायतन

किन्हीं पाँच देवताओं का समूह।

पंचाल

वह प्राचीन देश जो हिमालय और चंबल के बीच गंगा के दोनों ओर था।

पंचावस्था

बाल्य, कुमार, पौगण्ड, युवा, वृद्धावस्था।

पंचोपनिषद्

तत्पुरुष, अघोर, सद्योजात, वोमदेव और ईशान जो भगवान् शिव के पाँच मुख माने जाते हैं।

पंपा या पंपासर

दण्डकवन का एक सरोवर। इसका उल्लेख रामायण में हुआ है।

पण

२ बीस गण्डे अथवा ८० कौड़ी का परिमाण।

पतंजलि

योगशास्त्र के आचार्य; पाणिनि के सूत्रों और कात्यायन कृत उनके वार्तिक पर 'महाभाष्य' की रचना करने वाले।

पति

साहित्यशास्त्र में पति चार प्रकार के माने गए हैं :—

१. अनुकूल, २. दक्षिण, ३. धृष्ट और ४. शठ।

पत्ति

सेना का वह छोटा-सा भाग जिसमें एक रथ, एक हाथी, तीन घुड़-सवार और पाँच पदाति (पैदल सिपाही) हों।

पद

पुराणों में दान के लिए बताई गई वस्तुओं का समूह—जूते, छाता, कपड़े, अंगूठी, कमंडलु, आसन, बरतन और भोजन।

पदार्थ

खाने के छह प्रकार के पदार्थ होते हैं:—१. चोष्य (चूसा जाने वाला), २. पेय, ३. लेह्य, (चाटने वाले, कढ़ी, लपसी आदि), ४. भोज्य, ५. भक्ष्य (लड्डू, पेड़ा आदि), ६. चर्व्य (चबाया जाने वाला, जैसे पापड़); वैद्यक के अनुसार—रस, गुण, वीर्य, विपाक और शक्ति; पुराणानुसार—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। न्यायशास्त्र में सात पदार्थ माने गए हैं :—द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव। कुछ नैयायिक सोलह पदार्थ मानते हैं। सांख्य में २५ पदार्थ माने गए हैं। (साथ ही दे० 'पचीस प्रकृतियाँ')

पद्म

कुबेर की एक निधि; एक नरक का नाम; जंबू द्वीप के दक्षिण-पश्चिम का देश; विष्णु का एक आयुध।

पद्मनाभ

विष्णु।

पद्मपाणि

ब्रह्मा; बुद्ध की एक विशेष मूर्ति।

पद्मयोनि

ब्रह्मा।

पनस

रामदल का एक वानर; विभीषण का एक मंत्री।

परब्रह्म

परब्रह्म के चार महान् रूप हैं—पुरुष, व्यक्त, अव्यक्त और काल।

परव्रत

धृतराष्ट्र का दूसरा नाम।

## परशुराम

जमदग्नि के पुत्र जिन्होंने २१ बार क्षत्रियों का विनाश किया। राम-सीता स्वयंवर के समय भी ये वहाँ पहुँच गए थे। कर्ण ने इनसे शस्त्र-विद्या सीखी थी। शस्त्र और शास्त्र दोनों में ये पारंगत थे। परशु इनका हथियार था।

## परा

भगवान् की जीव रूपी या चेतना प्रकृति जिससे सम्पूर्ण जगत् धारण किया जाता है; ब्रह्म या उपनिषद् विद्या; एक वाणी।

## परार्ध

ग्यारह हजार चतुर्युगों का ब्रह्मा का एक दिन और इतनी ही लम्बी एक रात होती है। इस प्रकार २००० चतुर्युगों का उनका एक दिन और इस तरह के ३६५ दिनों का उनका एक वर्ष और ऐसे सौ वर्षों की उनकी आयु होती है। सौ वर्ष पूर्ण होने पर ब्रह्म प्रलय मानी जाती है। ब्रह्मा की आयु का परार्ध होता है जिसमें से आधा बीत चुका है अर्थात् ऐसे पचास वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। अब ५१ वां वर्ष चल रहा है जिसे वराह कल्प कहते हैं।

## पराशर

महर्षि द्वैपायन वेदव्यास के पुत्र एक प्रसिद्ध ऋषि। गोत्रकार के रूप में इन्हें वसिष्ठ और शक्ति का पुत्र माना गया है।

## परिवारित

ब्रह्मा के धनुष का नाम।

## परीक्षित

अर्जुन के पौत्र और अभिमन्यु के पुत्र और जनमेजय के पिता। ये पांडु कुल के ही थे। एक मरे सर्प को एक ऋषि के गले में डाल देने के फलस्वरूप शापित और तक्षक नाग द्वारा डसे जाने के फलस्वरूप ये मृत्यु को प्राप्त हुए। तभी से कलियुग का प्रारंभ माना जाता है। (दे० 'उत्तरा' भी)।

## पर्वत

भारत महाद्वीप के सात महापर्वत माने गए हैं जो इस महाद्वीप के प्रत्येक खण्ड में विद्यमान माने जाते हैं। उनके नाम हैं :—

महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान, ऋक्ष, विन्ध्य और पारियात्र।

अथवा :—

हिमालय, निषध, विन्ध्य, माल्यवान्, पारियात्रक, गन्धमादन, हेमकूट।

## पर्वसंधि

पूर्णिमा अथवा अमावस्या और प्रतिपदा के बीच का समय; सूर्य अथवा चन्द्रमा को ग्रहण लगने का समय।

## पवन

सात मुख्य पवन या वायु हैं :—

आवाह, प्रवाह, अनुवह, संवह, दिवह, परावह, परिवाह। (साथ ही दे० उनचास पवन के लिए 'मरुत्' और 'वायु'।)

## पशुपति

शिव का एक नाम।

## पश्यंती

वह अवस्था जब नाद मूलाधार से उठ कर हृदय में जाता है।

## पांचजन्य

भगवान् विष्णु या श्रीकृष्ण का शंख। कहा जाता है कि गुरु-दक्षिणा के रूप में बलराम और श्रीकृष्ण गुरु सन्दीपनि के खोये हुए पुत्र की खोज में समुद्र में गए तो वहाँ शंख के रूप में उसे स्वीकार किया अथवा उसकी हड्डियों से यह शंख बना, इसलिए पांचजन्य नाम पड़ा।

## पांच-पचीस

पाँच तत्त्व (दे०) :—

आकाश, वायु, जल, अग्नि, पृथ्वी। इन पाँचों तत्त्वों की पाँच-पाँच प्रकृतियाँ :—

आकाश—काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय।

वायु—चलन, बल, धावन, पसारन, संकोचन।

जल—लार, रक्त, पसीना, मूत्र, वीर्य।

अग्नि—क्षुधा, तृषा, आलस, निद्रा, मैथुन।

पृथ्वी—हाड़, मांस, त्वचा, नाड़ी, रोम।

(साथ ही दे० 'प्रकृति'।)

## पांचाली

पांचाल देश के राजा द्रुपद की पुत्री द्रौपदी जो पांडवों की पत्नी थी।

## पांडव

महाराज पाण्डु के पाँच पुत्र :—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव। पहले तीन कुन्ती के पुत्र और शेष दो माद्री के थे।

## पांडु

पाण्डवों के पिता और धृतराष्ट्र के भाई। ये व्यास द्वारा नियोग से उत्पन्न हुए थे। व्यास को देख कर इनकी माता अंबिका पीली पड़ गई थी, इसलिए व्यास के वचनानुसार पुत्र पीले रंग का उत्पन्न हुआ। यही कारण है कि ये पाण्डु कहलाए।

## पाक

एक दैत्य जिसे इन्द्र ने मारा था।

## पाकयज्ञ

पंच महायज्ञ (दे०) में ब्रह्मयज्ञ को छोड़ कर अन्य चार यज्ञ (दे० 'महायज्ञ'); वृषोत्सर्ग और गृहप्रतिष्ठा आदि कार्यों में किया जाने वाला खीर का हवन।

## पाकशासन

इन्द्र का नाम।

## पाकशासनि

इन्द्र-पुत्र जयन्त; बालि; अर्जुन।

## पाजामा

एक सिला हुआ वस्त्र जो कमर में बाँध कर पहना जाता है। यह कई प्रकार का होता है :—

सुथना, तमान, हज़ार, चूड़ीदार, अरबी, कलीदार, पेशावरी, नेपाली आदि।

## पाटलिपुत्र

आधुनिक पटना नगर का प्राचीन नाम अथवा पुष्पपुर अथवा कुसुमपुर।

## पाणिनि

संस्कृत के प्रसिद्ध वैयाकरण जो ईसा से लगभग ४०० वर्ष पूर्व थे। इन्होंने 'अष्टाध्यायी' नामक प्रसिद्ध व्याकरण ग्रंथ की रचना की। पाणिनि के अतिरिक्त इन्द्र, चन्द्र, काशकृत्स्न, आपिशली, शाकटायन, अमर, जैनेन्द्र और सरस्वती भी प्रतिनिधि वैयाकरण माने जाते हैं।

## पातंजल या पातंजल दर्शन या पातंजल भाष्य या पातंजल सूत्र

पतंजलिकृत व्याकरण—महाभाष्य या योगसूत्र।

## पाताल

सातों पाताल सुख-समृद्धि के स्थान माने गए हैं। नारद मुनि के अनुसार ये इन्द्रलोक से भी अधिक समृद्ध हैं।

अतल—पृथ्वी के बाद ही है जहाँ की अधिष्ठात्री देवी महामाया है (पद्मपुराण)।

वितल—अधिष्ठाता शिव के एक रूप हितकेश्वर।

सुतल—बलि अधिष्ठाता है।

तलातल—माया अधिष्ठात्री है।

महातल—कद्रू के पुत्र तक्षक, सुषेण, कालिय आदि नागों का स्थान है।

रसातल—दानव, दैत्य और पाणि नामक असुर इन्द्र के भय से निवास करते हैं।

पाताल—वासुकि नाग का स्थान। वासुकि के साथ शंख, शंखचूड़, कुलिक, धनंजय आदि नाग रहते हैं। पाताल के तीस सहस्र योजन के अन्तर पर अनंत या शेषनाग का स्थान माना जाता है।

## पाताल रावण

प्रसिद्ध रावण से भिन्न और माल्यवान का भतीजा। विष्णु के भय से कुछ राक्षस पाताल चले गए थे, उनका नेता पाताल रावण था।

## पाप

दो प्रकार के होते हैं—महापाप और उप-पातक।

## पाराशर

पराशर के पुत्र व्यास जी का नामान्तर; शुकदेव जी का नामान्तर।

## पारिजात

इन्द्र के नन्दन कानन का सुगन्धित पुष्पों वाला दिव्य वृक्ष जो समुद्र-मंथन के समय निकला था; हरसिंगार; कोविदार।

## पार्थ

युधिष्ठिर, भीम और विशेषतः अर्जुन। कुन्ती का दूसरा नाम पृथा था, इसलिए ये लोग पार्थ कहलाए।

## पार्थसारथी

श्रीकृष्ण की उपाधि।

## पार्वती

शिवजी की शक्ति; दुर्गा देवी; द्रौपदी का एक नाम।

## पार्श्व

पारसनाथ (जैन धर्म में) का नामान्तर। ये तेईसवें तीर्थंकर माने जाते हैं। इक्ष्वाकुवंशीय और वाराणसी के राजा अश्वसेन इनके पिता थे।

## पालकाप्य

ऋषि विशेष या करेणु ऋषि। इन्हीं ने सर्वप्रथम हाथियों से संबंधित विज्ञान लोगों को सिखाया।

## पावक

आहवनीय, दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य।

अथवा—

जठरानल, दावानल, बड़वानल (दे० 'अग्नि' भी)।

## पाशुपत

शिवजी की उपासना करने वाला—शैव; अथर्ववेद का एक उपनिषद्।

## पाशुपत दर्शन

शैव सम्प्रदाय का दर्शन; नकुलीश पाशुपत दर्शन।

## पाशुपतास्त्र

शिवजी का प्रचण्ड शूलास्त्र।

## पिंगल

संस्कृत के एक प्रसिद्ध छन्दशास्त्रकार; छन्दशास्त्र; कुबेर की नवनिधियों में से एक; सूर्य का एक गण।

## पिंगला

हठयोग के अनुसार तीन मानी जाने वाली नाड़ियों में से एक (अन्य दो हैं—इड़ा और सुषुम्ना); पुराण-प्रसिद्ध एक वेश्या।

## पिंडज

दे 'जीव'।

## पिता

ब्रह्मवैवर्त पुराण के श्रीकृष्ण जन्मखण्ड (अध्याय ३५) में पिता सात प्रकार के माने गए हैं :—

'कन्यादातान्नदाता च ज्ञानदाताऽभयप्रदः।
जन्मदो मन्त्रदो ज्येष्ठभ्राता च पितरः स्मृताः॥'

श्वसुर, अन्नदाता, ज्ञानदाता (गुरु), अभयदाता, जन्मदाता, मन्त्र दीक्षादाता और बड़ा भाई।

## पितृगण

सात माने जाते हैं :—

कण्यवाह, अनल, सोम, यम, अर्यमा, अग्निष्वात्त और बर्हिषद् । इनमें अर्यमा नामक पितर सब पितरों में प्रधान और श्रेष्ठ माने जाते हैं ।

अथवा—

प्रजापति के नौ पुत्र :—मरीचि, अत्रि, भृगु, अंगिरा, पुलह, क्रतु, वशिष्ठ, अग्नीध्र, अग्निष्वात्ता ।

## पितृतिथि

अमावस्या ।

## पितृतीर्थ

गया ।

## पितृदैवत

पितरों के अधिष्ठाता देवता ।

## पित्त

पित्त पाँच प्रकार के होते हैं :—

पाचक, रंजक, साधक, आलोचक और भ्राजक ।

## पिनाक

शिवजी का धनुष ।

## पिनाकपाणि या पिनाकिन या पिनाकी

शिवजी का एक नाम ।

## पीठ

वह स्थान जहाँ दक्षसुता सती का कोई अंग या आभूषण विष्णु के चक्र से कट कर गिरा हो ।

## पुंडरीकाक्ष

विष्णु का एक नाम ।

## पुण्यश्लोक

पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः ।
पुण्यश्लोको च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः ।।
(पुण्यचरित्रवाला; सीता और द्रौपदी ।)

## पुद्गल

शिवजी का एक नाम; जीव; आत्मा; परमाणु; शरीर ।

## पुनर्वसु

अंधक वंश के दुन्दुभि के पुत्र अरिद्योत के पुत्र; एक नक्षत्र; विष्णु; शिव; कात्यायन मुनि ।

## पुरश्चरण

किसी मंत्र, स्तोत्र आदि को किसी अभीष्ट कार्य की सिद्धि के लिए नियमपूर्वक जपना; किसी कार्य की सिद्धि के लिए पहले से ही उपाय सोच रखना ।

## पुराण

पुराण के पाँच लक्षण माने गए हैं :—

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशोमन्वन्तराणि च ।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ।।

अथवा जिसमें ये पाँच लक्षण हों :—

१. सृष्टि की उत्पत्ति (सर्ग), २. प्रलय और फिर सृष्टि (प्रतिसर्ग), ३. देवताओं की उत्पत्ति और शूरवीरों की वंश-परम्परा (वंश), ४. मन्वन्तर, ५. मनु के वंश का विस्तार ।

## पुराण

१८ माने गए हैं :—

(विष्णु से संबंधित)—विष्णु, नारदीय, भागवत, गरुड़, पद्म, वराह ।

(शिव से संबंधित)—मत्स्य, कूर्म, लिंग, वायु, स्कंद, अग्नि ।

(ब्रह्मा से संबंधित)—ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त, मार्कण्डेय, भविष्य, वामन, ब्रह्म । विभिन्न सूचियों में और तो सब नाम समान हैं, किन्तु कहीं 'वायुपुराण' नाम मिलता है तो कहीं 'शिवपुराण' ।

कुछ अन्तर के साथ ये अठारह नाम भी मिलते हैं :—

ब्रह्मपुराण, पद्मपुराण, ब्रह्माण्डपुराण, अग्निपुराण, विष्णुपुराण, गरुड़-पुराण, ब्रह्मवैवर्तपुराण, शिवपुराण, लिंगपुराण, नारदपुराण, स्कन्दपुराण, मार्कण्डेयपुराण, भविष्यत्पुराण, मत्स्यपुराण, वराहपुराण, कूर्मपुराण, वामनपुराण, श्रीमद्भागवतपुराण ।

## पुराणपुरुष

विष्णु का एक नाम ।

## पुरावसु

भीष्म का एक नाम ।

## पुरी

मोक्षदायक सात पुरियाँ हैं :—

अयोध्यापुरी, मथुरापुरी, मायापुरी (हरद्वार), काशीपुरी, कांचीपुरी, अवन्तिकापुरी, द्वारावती (द्वारका)। कहीं-कही 'मायापुरी' के स्थान पर 'जगन्नाथपुरी' नाम मिलता है।

## पुरु

नहुष के पुत्र राजा ययाति के पुत्र एक चंद्रवंशी राजा।

## पुरुष

सृष्टिकर्त्ता; कामशास्त्र के अनुसार पुरुष चार प्रकार के होते हैं :—

१. अश्व (negro)—इसके योग्य स्त्री हस्तिनी (negress) कही जाती है।
२. वृष (Semite)—इसके योग्य स्त्री शंखिनी (Semite maiden) कही जाती है।
३. मृग (Aryan)—इसके योग्य स्त्री मृगी कही जाती है।
४. शश (mongolian)—इसके योग्य स्त्री पद्मिनी कही जाती है।

अवस्था के अनुसार पुरुष के छह भेद होते हैं :—

१. कुमार (पाँच वर्ष तक)
२. पौगंड (पाँच वर्ष से दस वर्ष तक)
३. किशोर (दस वर्ष से पन्द्रह वर्ष तक)
४. युवा (पन्द्रह वर्ष से तीस वर्ष तक)
५. प्रौढ़ (तीस वर्ष से पचास वर्ष तक)
६. वृद्ध (पचास वर्ष के बाद)

## पुरुषसूक्त

'सहस्रशीर्षा' से प्रारम्भ होने वाला ऋग्वेद का एक प्रसिद्ध सूक्त। यह ऋग्वेद के दसवें मंडल का १६ मंत्रों का सूक्त है जिसमें परमात्मा का स्तवन होता है।

## पुरूरवा

ऋग्वेद में उल्लिखित इला का पुत्र जो उर्वशी का पति था।

## पुरोडाश

वेदों में इसका उल्लेख मिलता है। चावल के आटे की बनी हुई टिकिया जो कपाल में पकाई जाती थी। यज्ञ करते समय देवताओं को आहुति देने के लिए इसके टुकड़े अग्नि में डाले जाते थे।

## पुलस्त्य

ब्रह्मा के मानस-पुत्रों में से एक ऋषि का नाम और सप्तर्षियों तथा प्रजापतियों में से एक।

## पुलोमजा

पुलोमन (दे०) की पुत्री और इन्द्र की पत्नी शची।

## पुलोमन

इन्द्र के श्वसुर एक दैत्य।

## पुष्कर

ब्रह्माण्ड के सात विशाल भागों (द्वीपों) में से एक; अजमेर के पास एक तीर्थ-स्थान; विष्णु; शिव; बुद्ध।

## पुष्पक

सूर्य की पत्नी और अपनी पुत्री संध्या को सूर्य के असहनीय तेज से बचाने के लिए विश्वकर्मा ने सूर्य का तेज निकाला और उस निकाले हुए तेज से विष्णु के चक्र, शिव के त्रिशूल, कार्त्तिकेय की शक्ति और पुष्पक विमान की रचना की। पुष्पक विमान उसने कुबेर को दिया। रावण ने कुबेर से यह विमान छीन लिया। जब राम ने रावण का वध कर दिया तो यह विमान विभीषण को मिला। विभीषण ने उसे कुबेर को वापिस कर दिया।

## पुष्पदन्त

शिव का एक गण; महिम्नस्तोत्र के रचयिता का नाम; वायव्य कोण के दिग्गज का नाम।

## पुष्पपुर

पटना का एक प्राचीन नाम।

## पूजा

१६ प्रकार की होती है :—
आवाहन, स्थापन, पाद्य, सिंहासन, अर्घ, आचमन, स्नान, चन्दन, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, प्रदक्षिणा, नमस्कार, आरती।

## पूतना

कंस द्वारा भेजी गई एक राक्षसी जो कृष्ण जी को मारना चाहती थी परन्तु स्वयं मारी गई।

### पूर्वमीमांसा

जैमिनि कृत वह शास्त्र जिसमें भारतीय कर्म-काण्ड-संबंधी विषयों के संबंध में बताया गया है।

### पूषण

बारह आदित्यों में से एक; एक वैदिक देवता जो कहीं सूर्य के रूप में, कहीं पशुओं के पोषक के रूप में उल्लिखित हुआ है।

### पूषा

दे० 'पूषण'।

### पृतना

सेना का वह विभाग जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२९ घोड़े और १२१५ पैदल सिपाही रहते थे।

### पृथा

कुंतिभोज की कन्या और पाण्डु की ज्येष्ठा पत्नी कुन्ती का दूसरा नाम।

### पृथु

वेणु के पुत्र जिनके नाम के आधार पर पृथ्वी का नाम 'पृथ्वी' पड़ा; अग्नि; विष्णु; शिव; एक विश्वेदेव।

### पृश्नि

सुपत नामक राजा की पत्नी का नाम।

### पेशी

इन्द्र का वज्र।

### पैग़म्बर

चौबीस माने गए हैं :—

आदम, शीश, नूह, इब्राहीम, याकूब, इसहाक, यूसुफ, इस्माईल, ज़करिया, यहया, यूनुस, दाऊद, अयूब, लूत, सुलेमान, स्वालह, शुएब, ईसा, मूसा, इलयास, हार, यूसआ, जिलकिप्ल, मुहम्मद। ये ईश्वर का सन्देश लेकर पृथ्वी पर अवतरित हुए।

### पौंड्रक

जरासंध का संबंधी और पुंड्र देश का राजा जो श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया।

### पौगंड

पाँच से दस वर्ष तक की अवस्था।

### पौ बारह

चौपड़ में ६+६ का दाँव जो सबसे अच्छा समझा जाता है।

### पौरव

पुरु का वंशज।

### पौलस्त्य

रावण, कुम्भकर्ण, कुबेर और विभीषण का नामान्तर। पुलस्त्य वंशज।

### पौलोमी

शची, इन्द्राणी; भृगु ऋषि की पत्नी का नाम।

### प्रकृति

भगवान् की आठ प्रकार की प्रकृति मानी जाती हैं :—
भूमि, जल, वायु, अग्नि, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार।
अथवा—
भूमि, जल, वायु, अग्नि, आकाश, सूर्य, चन्द्र और होता।
पचीस प्रकृतियाँ इस प्रकार हैं :—
अस्थि, मांस, त्वक्, रोम, नाटिका, वीर्य, मूत्र, रक्त, वसा, लार, भूख, प्यास, नींद, क्रांति, आलस्य, दौड़ना, चलना, पसारना, समेटना, कूदना, राग, द्वेष, लाज, भय, मोह। (सांख्य में प्रकृति आदि २५ पदार्थ माने गए हैं)

### प्रजापति

ये दस माने गए हैं :—
मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वसिष्ठ, दक्ष, कर्दम और कश्यप। ये सृष्टि को उत्पन्न करने वाले हैं। सृष्टि के विस्तार के लिए ये ब्रह्मा के मानस-पुत्र कहे जाते हैं; विष्णु; मनु; सूर्य; विश्वकर्मा।
कहीं-कहीं ये नाम मिलते हैं :—
मरीचि, अत्रि, अङ्गिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, प्रचेता, वशिष्ठ, भृगु, नारद। कुछ आचार्य सात ही प्रजापति मानते हैं और कुछ केवल दक्ष, भृगु और नारद—इन तीनों को। २१ प्रजापति भी बताए गए हैं।

### प्रणव

ओंकार मंत्र; परमेश्वर।

### प्रतिप

राजा शान्तनु (दे०) के पिता का नाम।

**प्रतिलोम**

वह विवाह जिसमें उच्च वर्ण की स्त्री और नीच वर्ण का पुरुष हो।

**प्रतिष्ठानपुर**

प्रयाग में गंगा के किनारे एक प्राचीन नगर जिसे अब झूसी कहते हैं। 'प्रतिष्ठान' नामक एक नगर गोदावरी के तट पर भी है।

**प्रद्युम्न**

श्रीकृष्ण का ज्येष्ठ पुत्र; कामदेव।

**प्रभास**

एक प्राचीन तीर्थ।

**प्रमथनाथ**

शिवजी का नाम।

**प्रयोग**

दे० 'षट्प्रयोग'।

**प्रलय**

दो प्रकार की होती है—नैमित्तिक और महाप्रलय। ब्रह्मा का हजार चतुर्युगों का एक दिन जब समाप्त हो जाता है और ब्रह्मा चराचर जगत् की सब वस्तुओं का संग्रह कर रात में श्री नारायण की मूर्ति में लीन (निद्राभिभूत) हो जाते हैं तो नैमित्तिक प्रलय होती है। जब ब्रह्मा कारणभूत प्रकृति (महत्तत्व, अहंकार, तन्मात्र आदि) में लीन हो जाते हैं तो महाप्रलय (ब्रह्म या प्राकृत प्रलय) होती है। उस समय समस्त विश्व नष्ट हो जाता है और ब्रह्मा की आयु समाप्त हो जाती है। यह उल्लेख पुराणों में मिलता है।

**प्रवह**

पवन के सप्त भागों में से एक जिसमें ज्योतिष्क पिण्ड आकाश में स्थित है।

**प्रस्थानत्रयी**

उपनिषद्, गीता और ब्रह्मसूत्र।

**प्रहर**

आठ होते हैं :—

दिन में—पूर्वाह्न या प्रातः, मध्याह्न, अपराह्न, सायं।

रात्रि में—प्रदोष या रजनीमुख, निशीथ, त्रियामा, उषा या भोर या ब्राह्ममुहूर्त।

### प्रह्लाद

हिरण्यकशिपु का पुत्र । पिता द्वारा नाना प्रकार के कष्ट दिए जाने पर भी इन्होंने ईश्वर के प्रति अपनी भक्ति न छोड़ी । होली का आख्यान प्रह्लाद के आख्यान से ही जुड़ा हुआ है ।

### प्राकृत

भाषा । हेमचन्द्र ने प्राकृत भाषा की परिभाषा दी है :—
'प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवं तत आगतं च प्राकृतं ।'

### प्राकृत प्रलय

वह प्रलय जब प्रकृति भी ब्रह्म में लीन हो जाती है ।

### प्राग्ज्योतिष

कामरूप देश ।

### प्राचेतस

मनु, दक्ष और वाल्मीकि का नामान्तर ।

### प्राजापत्य

यज्ञ विशेष; हिन्दू धर्मशास्त्र के अनुसार आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें पिता वर और कन्या को इकट्ठा कर उनसे प्रतिज्ञा करा लेता है कि वे दोनों मिलकर गार्हस्थ्य धर्म का पालन करेंगे; प्रयाग का नामान्तर ।

### प्राजापत्या

एक इष्टि जो संन्यास ग्रहण करते समय की जाती है । इसमें सर्वस्व दक्षिणा में दे दिया जाता है; एक वैदिक छन्द ।

### प्राण

पाँच प्राण हैं :—
प्राण, अपान, उदान, समान और व्यान ।

### प्राणनाथ

एक सम्प्रदाय के प्रवर्तक जो औरंगजेब के समकालीन थे ।

### प्राणायाम

योग की विधि जिसमें दाहिने नथने को बन्द कर बाएँ नथने से साँस को ऊपर खींचने को 'पूरक' कहते हैं । दोनों नथनों को बन्द कर साँस भीतर रोकने को 'कुम्भक' कहते हैं । धीरे-धीरे साँस को दाहिने नथने से बाहर निकालने की क्रिया को 'रेचक' कहते हैं ।

**प्रातिशाख्य**

वेदों की प्रत्येक शाखा की संहिताओं पर एक-एक प्रातिशाख्य ग्रन्थ है जिनमें उनके स्वर, पद, संहिता, संयुक्त वर्णादि के उच्चारण आदि पर निर्णय है।

**प्रार्थना समाज**

ब्रह्म समाज और आर्य समाज की भाँति उन्नीसवीं शताब्दी का एक सुधारवादी आन्दोलन जिसके प्रवर्तक महादेव गोविन्द रानाडे आदि थे।

**प्रियंवदा**

'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' में शकुन्तला की एक सखी। दूसरी अनसूया थी।

**प्रेत**

वह शरीर जो मरने के बाद प्राप्त होता है; पिशाचों की भाँति एक कल्पित योनि; नरक में रहने वाला प्राणी।

**प्रेतयज्ञ**

एक यज्ञ जिसके पूर्ण कर लेने से प्रेत-योनि प्राप्त होती है।

**प्रेतलोक**

यमपुर।

**प्लक्ष**

सात द्वीपों में से एक।

## फ

**फल**

जीवन के चार फल :—

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

**फाल्गुनी**

पूर्वाफाल्गुनी या उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र।

## ब

**बंध**

योग-साधना की कोई मुद्रा; रति का कोई आसन।

**बक**

एक असुर जिसे श्रीकृष्ण ने मारा; एक असुर जिसे भीम ने मारा था; कुबेर का नामान्तर ।

**बकासुर**

दे 'बक' ।

**बगलामुखी**

तांत्रिकों की देवी ।

**बजरंगबली**

हनुमान जी का एक नाम ।

**बदरिकाश्रम**

हिमालय-स्थित एक तीर्थ-स्थान जहाँ नर-नारायण तथा व्यास का आश्रम है ।

**बदरीनारायण**

बदरिकाश्रम के मुख्य देवता ।

**बनमाला**

तुलसी, कुन्द, मदार, परजाता (पारिजात) और कमल—इन पाँच की बनी माला ।

**बनमाली**

श्रीकृष्ण; विष्णु; नारायण ।

**बपतिस्मा**

(बैप्टिज्म) ईसाई धर्म की दीक्षा के समय का संस्कार ।

**बभ्रुवाहन**

दे० 'उलूपी' ।

**बम**

शिव के उपासकों द्वारा उत्पन्न ध्वनि ।

**बलराम या बलदाऊ या बलदेव या बलबीर या बलभद**

श्रीकृष्ण के बड़े भाई और रोहिणी के पुत्र ।

**बला**

एक विद्या जिसके प्रभाव से योद्धा को युद्ध के समय भूख-प्यास नहीं सताती थी । यह विद्या राम-लक्ष्मण ने विश्वामित्र से सीखी थी ।

## बलि

भूतयज्ञ; किसी देवता को चढ़ाया हुआ पदार्थ; प्रह्लाद का पौत्र और दैत्यों का राजा।

## बलिवैश्वदेव

एक महायज्ञ जिसमें गृहस्थ पके हुए अन्न के ग्रास जगह-जगह रखता है।

## बल्लव

अज्ञातवास के समय भीम का कल्पित नाम। उस समय वे राजा विराट के यहाँ रसोइये का काम करते थे।

## बहुधार

इन्द्र का वज्र।

## बहुबाहु

रावण का एक नाम।

## बाइबिल

ईसाइयों की धर्म-पुस्तक—ओल्ड टेस्टामेंट और न्यू टेस्टामेंट।

## बाजा

दो तरह के बाजे (वाद्य-यंत्र) होते हैं :—

१. जिनसे स्वर निकलते हैं।

२. जिन पर ताल दी जाती है।

वैसे बाजे चार प्रकार के माने गए हैं :—

१. तत (तार वाले, जैसे वीणा, सितार आदि)

२. आनद्ध (ताल देने वाले, जैसे तबला, मृदंग आदि)

३. सुषिर या शुषिर (मुँह से बजाए जाने वाले, जैसे तुरही, वंशी, शंख आदि)

४. घन (धातु के बने हुए जिनसे घनघनाहट निकलती है, जैसे घंटा, झाँझ, मजीरा, भेरी आदि)

## बाणासुर

राजा बलि के सौ पुत्रों में से ज्येष्ठ पुत्र जो बहुत गुणी और सहस्रबाहु (दे०) था।

### बादरायण
वेदव्यास का एक नाम ।

### बादरायण सूत्र
वेदान्त दर्शन का नाम ।

### बादरायणि
व्यास के पुत्र शुकदेव जी का नाम ।

### बार्हद्रथ या बार्हद्रथि
जरासन्ध का नाम ।

### बार्हस्पत्य
बृहस्पति का शिष्य, उन बृहस्पति का शिष्य जिन्होंने जड़वाद का प्रचार किया ।

### बालखिल्य
वे साठ हजार पौराणिक तपस्वी जो ब्रह्मा के रोम स उत्पन्न हुए थे और जो अंगूठे के आकार के थे ।

### बालभोग
वह नैवेद्य जो प्रातःकाल देवताओं, विशेषतः बालकृष्ण, के सामने रखा जाता है ।

### बालमुकुंद
बालक श्रीकृष्ण ।

### बालि
वानरराज सुग्रीव का बड़ा भाई । इसकी पत्नी का नाम तारा था और अंगद इसका पुत्र था । इसे राम ने मारा था ।

### बाहुदन्तक
एक स्मृति जिसके रचयिता इन्द्र माने जाते हैं ।

### बिंबसार
गौतम बुद्ध के समकालीन राजा और अजातशत्रु के पिता ।

### बिट्ठल
पंढरपुर (महाराष्ट्र के शोलापुर के अन्तर्गत) में स्थापित विष्णु की मूर्ति ।

### बीजक
कबीरदास के पदों का संग्रह ।

**बीजमंत्र**

किसी देवता के लिए निश्चित मूलमंत्र ।

**बीजाक्षर**

किसी बीजमंत्र (दे०) का पहला अक्षर ।

**बुद्ध**

बौद्ध धर्म के प्रवर्तक महात्मा गौतम बुद्ध । इनका एक नाम शाक्यसिंह (दे०) भी है । ये महाराज शुद्धोदन (शाक्यवंशी) और रानी महामाया के पुत्र थे और लुंबिनी इनका जन्म-स्थान था । सारनाथ में इन्होंने धर्म प्रवर्तन किया, बोधगया में इन्हें बोधिवृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ और कुशीनगर (कसिया) में महानिर्वाण प्राप्त हुआ ।

**बृहदारण्यक**

शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम छह अध्यायों में वर्णित एक उपनिषद् ।

**बृहद्रथ**

जरासन्ध के पिता का नाम; शतधन्वा के पुत्र का नाम ।

**बृहन्नला**

अज्ञातवास के समय अर्जुन इस नाम से राजा विराट के यहाँ रह कर उत्तरा (दे०) को नृत्यकला की शिक्षा देते थे ।

**बृहस्पति**

एक नक्षत्र; देवताओं के गुरु; एक स्मृतिकार ।

**बैजंतीमाल**

विष्णु भगवान् की माला जो नीलम, माणिक, मोती, पुखराज और हीरा इन पाँच रत्नों से बनी मानी जाती है । वैसे, श्रीकृष्ण की पंचरंगी माला को भी 'बैजंतीमाल' कहते हैं ।

**बैरागी**

वैष्णव सम्प्रदाय के साधुओं का एक भेद ।

**बोधिवृक्ष**

गया में वह पीपल का पेड़ जिसके नीचे गौतम बुद्ध को बुद्धत्व (ज्ञान) प्राप्त हुआ ।

**बोधिसत्व**

वह जो बुद्धत्व प्राप्त करने का अधिकारी हो गया हो ।

**बौधायन**

गृह्यसूत्र का रचयिता ।

ब्रह्मजीवी

श्रौतस्मार्त कर्म करा कर जीविका चलाने वाला।

ब्रह्मदिन

सौ चतुर्युगियों का ब्रह्मा का एक दिन।

ब्रह्मदोष

ब्राह्मण का वध करने का पाप।

ब्रह्मद्वार

ब्रह्मरंध्र।

ब्रह्मपुत्र

नारद; वसिष्ठ; मनु; मरीचि; सनकादिक; एक नदी जो हिमालय से निकल कर बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

ब्रह्मपुत्री

सरस्वती नदी का नाम।

ब्रह्मपुराण

अठारह पुराणों में से सर्वप्रथम। इसीलिए इसे आदि पुराण भी कहा जाता है।

ब्रह्मरंध्र

मस्तक में वह गुप्त और कल्पित छिद्र जिसमें से प्राण निकल कर ब्रह्मलोक को प्राप्त होते हैं।

ब्रह्मराक्षस

याज्ञवल्क्य ने ब्रह्मराक्षस होने का कारण लिखा है :

परस्य योषितं हृत्वा ब्रह्मस्वमपहृत्य च।
अरण्ये निर्जले देशे भवति ब्रह्मराक्षस॥

ब्रह्मरात

शुकदेव जी का नाम।

ब्रह्मरात्रि

ब्रह्मा की एक रात जो एक कल्प की होती है, अर्थात् १००० युग या मनुष्यों के २१६०००००० वर्ष; छह महीने की रात जिसमें श्रीकृष्ण ने रास किया।

ब्रह्मराशि

परशुराम का नामान्तर; बृहस्पति से आक्रान्त श्रवण नक्षत्र।

### ब्रह्मवैवर्त
श्रीकृष्ण-भक्ति से सम्बन्धित एक पुराण।

### ब्रह्मा
सृष्टि के रचयिता। चार मुख, रक्त वर्ण, कमलासन, हंसवाहन, विष्णु की नाभि से उत्पन्न और रजोगुण की मूर्ति।

### ब्रह्माण्ड
चौदहों भुवनों का समूह।

### ब्रह्मावती
सरस्वती और दृशद्वती नदियों के बीच की भूमि।

### ब्रह्मास्त्र
मंत्रों से अभिषिक्त और सब अस्त्रों में श्रेष्ठ अस्त्र। यह अस्त्र अमोघ माना जाता था।

### ब्राह्मण
दे० 'पंचगौड़' और 'पंचद्रविड़' भी।

### ब्राह्मण (ग्रंथ)
प्रत्येक वेद का अपना-अपना ब्राह्मण है। ब्राह्मण ग्रन्थ वेद के मन्त्र भाग से पृथक् हैं। इन ग्रन्थों में विविध यज्ञों के विषय में मंत्रों का विनियोग तथा विधियों का प्रतिपादन है और उपाख्यानों के रूप में उनकी व्याख्या और निदर्शन है। उदाहरण के लिए :—

ऋग्वेद—ऐतरेय या आश्वालायन और कौशीतकी या सांख्यायन।
यजुर्वेद—शतपथ।
सामवेद—पंचविंश, षड्विंश आदि।
अथर्ववेद—गोपथ।

### ब्राह्मण
इनके स्वाभाविक कर्म हैं :—

शम—(अन्तःकरण का निग्रह)
दम—(इन्द्रियों का दमन)
तप—(धर्म-पालन के लिए कष्ट-सहन)
शौच—(बाहर-भीतर से शुद्ध रहना)
शान्ति—(दूसरों के अपराध क्षमा करना)
आर्जव—(मन, इन्द्रिय और शरीर को सरल रखना)
आस्तिक्य—(वेद-शास्त्र, ईश्वर आदि में श्रद्धा रखना)
ज्ञानार्जन—(वेद-शास्त्रों का अध्ययन-अध्यापन करना)

## ब्राह्मण

इनके छह सांसारिक कर्म हैं :—
अध्ययन, अध्यापन, यजन, याजन, दान और प्रतिग्रहण ।
ब्राह्मण की जीविका के छह विहित साधन हैं :—
उञ्छ, दान, भिक्षा, व्यापार, पशु-पालन और खेती ।

## ब्राह्म समाज

राजा राममोहन राय द्वारा प्रवर्तित बंगाल का एक सुधारवादी आन्दोलन जो उपनिषदों पर आधारित है और केवल ब्रह्म की उपासना में विश्वास करता है ।

## ब्राह्मी

शिव की अष्ट मातृकाओं में से एक; दुर्गा; एक प्राचीन लिपि जिससे देवनागरी तथा अन्य अनेक भारतीय लिपियों का विकास हुआ ।

# भ

## भक्त

चार प्रकार के माने गए हैं :—

१. अर्थार्थी—(लोक-परलोक के भोगों की कामना के लिए भगवान् पर निर्भर रहना । सुग्रीव, विभीषण आदि ।)

२. आर्त— (शारीरिक या मानसिक संताप से पीड़ित हो भगवान् की शरण में जाना । गजराज, द्रौपदी आदि) ।

३. जिज्ञासु—(सांसारिक सुख-सुविधाओं और कष्टों की परवाह न कर एकनिष्ठ हो भगवान् को जानने की इच्छा रखना । परीक्षित, उद्धव आदि)

४. ज्ञानी—(जो परमात्मा को प्राप्त कर उसी में लिप्त रहते हैं । शुकदेव, नारद, सनकादि)

## भक्ति

भक्ति नौ प्रकार की होती है :—
श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्म-निवेदन ।

## भक्तिसूत्र

शांडिल्य मुनि कृत वैष्णव संप्रदाय का सूत्र-ग्रन्थ ।

### भगवद्गीता

महाभारत (भीष्म पर्व) में अर्जुन का मोह दूर करने के लिए युद्ध-स्थल में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश। यह ग्रंथ कर्मयोग का संसार-प्रसिद्ध ग्रन्थ माना जाता है।

### भगीरथ

सूर्यवंशी राजा दिलीप के पुत्र जो अपने तप से सगर के पुत्रों को तारने के लिए गंगा को मृत्युलोक में लाए।

### भद्र

महादेव; उत्तर दिशा के दिग्गज का नाम।

### भद्रकाली

कात्यायनी देवी; दुर्गा देवी।

### भद्रबल

बलराम या बलदाऊ जी।

### भद्रा

द्वितीया, सप्तमी और द्वादश तिथियाँ; आकाशगंगा; केकयराज की एक कन्या जो श्रीकृष्ण को ब्याही थी; सुभद्रा का एक नाम; दुर्गा।

### भरणी

सत्ताईस नक्षत्रों में से एक। यह तिकोने आकार का होता है।

### भरत

जिनके नाम पर हमारे देश का नाम भारत या भारतवर्ष पड़ा। ये भरत दुष्यन्त और शकुन्तला (दे०) से उत्पन्न एक चक्रवर्ती राजा थे; कैकेयी से उत्पन्न महाराज दशरथ के पुत्र; एक मुनि जिन्होंने नाट्य-शास्त्र की रचना की।

### भरद्वाज

एक वैदिक ऋषि जो राजा दिवोदास के पुरोहित थे। ये सप्तर्षियों में माने जाते हैं।

### भर्तृहरि

एक राजा जिन्होंने अपनी पत्नी के परपुरुष-प्रेम को देख कर वैराग्य धारण कर नीति, वैराग्य और श्रृंगार शतकों की रचना की। ये वैयाकरण भी थे और उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य के छोटे भाई थे।

भवात्मज

गणेशजी या कार्त्तिकेय के नामान्तर।

भवानी

शिवजी की अर्द्धांगिनी पार्वती; दुर्गा।

भस्मासुर

एक असुर जिसने शिवजी से यह वरदान प्राप्त कर कि वह जिसके सिर पर हाथ रख दे वही भस्म हो जाय स्वयं शिवजी पर प्रयोग करना चाहा। शिवजी तीनों लोकों में भागते फिरे। अन्त में ब्रह्मादि द्वारा यह बताया जाने पर कि शिवजी तो भंग के नशे में कुछ का कुछ कह जाते हैं, अपने ही सिर पर हाथ रख कर उनके वचनों की परीक्षा ले लो, उसने ऐसा ही किया और स्वयं भस्म हो गया।

भागवत

अष्टादश पुराणों में से एक पुराण जो वैष्णवों का पवित्र ग्रन्थ है। इसमें १२ स्कंध, ३१२ अध्याय और १८,००० श्लोक हैं। यह वेदान्त का तिलक माना जाता है। यह भागवत श्रीमद्‌भागवत कहा जाता है। इसके अतिरिक्त एक देवी भागवत (दे०) भी है।

भानमती

जादूगरनी का प्रतीक नाम।

भानु

भानु के बारह नाम माने गए हैं :—
विष्णु, शक्र, अर्यमा, धाता, पूषण, त्वष्टा, विवस्वान, सविता, भग, वरुण, अंशुमणि, तेजमति।

भानुकला

भानुकलाओं के नाम इस प्रकार हैं :—
तपिनि, तापिनी, धूम्र, मरीची, ज्वलिनी, रुचि, रुचिनिम्न, भोगदा, विश्वाबोधिनी, धारिणी, क्षमा।

भारत

महाभारत का मूल रूप जिसमें केवल २४,००० श्लोक थे; भरत के गोत्र में उत्पन्न।

भारद्वाज

द्रोणाचार्य और अगस्त्य के नामान्तर; एक ऋषि जिनका रचित एक श्रौतसूत्र और एक गृह्यसूत्र है।

भारशिव

एक शैव सम्प्रदाय जिसमें पापी शिव-मूर्ति अपने सिर पर रखते थे।

भार्गव

असुरों के गुरु शुक्राचार्य; परशुराम; मार्कण्डेय; एक उपपुराण।

भावित्र

त्रैलोक्य; स्वर्ग, मर्त्य और पाताल का सामूहिक नाम।

भीम

पाँच पांडवों में से दूसरे। ये वायु द्वारा कुंती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। ये बहुत बलवान और गदायुद्ध में प्रवीण थे; शिव; महादेवजी की आठ मूर्तियों में से एक।

भीमपंचक

कार्तिक शुक्ला एकादशी से पंचमी तक के पाँच दिन।

भीमसेन

दे० 'भीम'।

भीमसेनी एकादशी

ज्येष्ठ शुक्ला या माघ शुक्ला एकादशी।

भीष्म

गंगा के गर्भ से उत्पन्न राजा शान्तनु के पुत्र जिन्होंने आजीवन ब्रह्मचर्य धारण किया और जो कौरव-पांडवों के पितामह थे। महाभारत के युद्ध में ये दुर्योधन की ओर से लड़े और अन्त में शिखण्डी के सामने आ जाने से मारे गए।

भीष्मक

विदर्भराज जिनकी पुत्री रुक्मिणी का विवाह श्रीकृष्ण के साथ हुआ था।

भुवन

ये चौदह हैं :—

सात ऊपर—भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, जनलोक, तपलोक, महर्लोक, सत्यलोक (भूः, भुवः, स्वः, जनः, तपः, महः, सत्यः)।

सात नीचे :—अतल, वितल, तल, सुतल, महातल, रसातल, पाताल।

**भुवर्लोक**

अन्तरिक्ष; सात लोकों में से दूसरा लोक।

**भूचरी**

योग में समाधि अंग की एक मुद्रा।

**भूतयज्ञ**

पाँच यज्ञों में से एक; भूतबलि।

**भूतांकुश**

कश्यप ऋषि का नाम।

**भूरसी दक्षिणा**

दक्षिणा जो किसी धार्मिक कृत्य के अन्त में ब्राह्मणों को दी जाती है।

**भृगु**

एक ऋषि जिन्होंने विष्णु की छाती में लात मारी, किन्तु विष्णु ने उन्हें क्षमा कर दिया; जमदग्नि ऋषि; शुक्राचार्य; कृष्ण।

**भृगुनंदन**

परशुराम; शुक्राचार्य।

**भृगुतनय**

परशुराम; शुक्राचार्य।

**भृगुपति**

परशुराम।

**भृगुरेखा**

वह चिह्न जो भृगु मुनि के लात मारने से विष्णु के वक्षस्थल पर बना हुआ माना जाता है।

**भृगुवासर**

शुक्रवार।

**भैंसासुर**

दे० 'महिषासुर'।

**भैरव**

शिवजी के गण जो स्वयं शिवजी के अवतार माने जाते हैं।
ये आठ माने गए हैं :—असितांग, रुरु, चण्ड, उन्मत्त, क्रोध (कुपित), कपाली, भीषण, काल (संहार)।

## भैरवी

चामुण्डा; एक प्रकार की देवी जो महाविद्या की मूर्ति मानी जाती है।

## भैरवी चक्र

एक विशिष्ट समय में देवी की पूजा के लिए वाममार्गियों या तांत्रिकों का समूह।

## भैरवी यातना

वह यातना जो मरते समय प्राणियों को भैरव जी से प्राप्त होती है।

## भोज

धार (मालवा) के परमार-वंशी एक राजा जो संस्कृत के परम विद्वान् और कवि थे और अत्यन्त प्रजाप्रिय थे; कान्य-कुब्ज के राजा रामभद्र देव के पुत्र; चंद्रवंशियों के एक वंश का नाम; विदर्भ के एक राजा।

## भोजदेव

दे० 'भोज'।

## भोजन

चतुर्विध होता है :—

१. भक्ष्य—निगला जा सकने वाला (दलिया, हलुवा इत्यादि)।

२. भोज्य—चबाकर खाया जाने वाला (दाल-रोटी आदि)।

३. लेह्य—चटनी की तरह चाटा जाने वाला (शहद, चटनी आदि)।

४. चोष्य—चूस कर खाया जाने वाला (आम, ईख आदि)।

कहीं-कहीं पदार्थ-भेद से भोजन के छह प्रकार बताए गए हैं :—

१. भक्ष्य, २. भोज्य, ३. चर्व्य (सूखी चीजें जो चबाकर खाई जायें, जैसे चबैना, दालमोंठ आदि), ४. चोष्य, ५. लेह्य, ६. पेय (दूध, शर्बत आदि)

(दे० 'ज्योनार' और 'षट्रस' भी)

## भोजराज

दे० 'भोज'।

## भोजविद्या

इन्द्रजाल; जादूगरी।

## भोलानाथ

शिवजी का एक नाम।

# म

**मंगल कलश**

मांगलिक अवसरों पर रखा जानेवाला जल से भरा हुआ घड़ा।

**मंगलसूत्र**

देवता के प्रसाद रूप में कलाई में बाँधा गया धागा।

**मंगल्य**

ये आठ हैं :—

मृगराज, गाय, नाग, कलश, व्यजन, वैजयन्ती, भेरी, दीप।

अथवा—

कुख, दर्पण, दीप, कलश, वस्त्र, अक्षत, सुमंगली युवती, स्वर्ण।

अथवा—

मृगराज, गजराज, नांदी, कलश, व्यजन, ध्वज, भेरी, दीप।

अथवा—

ब्राह्मण, गाय, अग्नि, स्वर्ण, घृत, सूर्य, जल और नृप।

**मंगलाचरण**

किसी शुभ कार्य के प्रारम्भ करने से पूर्व मंगल की कामना से पढ़ा या लिखा गया वचन।

**मंजुघोष**

एक प्रसिद्ध बौद्ध आचार्य।

**मंडलीक या मंडलेश्वर**

बारह राजाओं का अधिपति।

**मंत्रसंहिता**

वेदों का वह अंश जिसमें मंत्रों का सग्रह हो।

**मंत्रोपनिषद्**

उपनिषदों के दो भाग हैं :—१. मन्त्रोपनिषद् और २. ब्राह्मणोपनिषद्। मन्त्रोपनिषद् में संहिताएँ आती हैं और ब्राह्मणोपनिषद् ब्राह्मणों से युक्त हैं और यज्ञ में काम आने वाले मन्त्रों के नियम बताते हैं।

**मंथरा**

कैकेयी की दासी जो कुबड़ी थी और जिसकी सीख पर कैकेयी ने राम को बनवास और भरत को राज्य देने का दशरथ से अनुरोध किया।

**मंदराचल**

पुराण-प्रसिद्ध एक पर्वत जिससे देवताओं ने समुद्र का मंथन किया था।

**मंदाकिनी**

स्वर्ग में प्रवाहित होने वाली गंगा की धारा जो ब्रह्मवैवर्त के अनुसार एक अचुत योजन लंबी है; एक नदी जो चित्रकूट में है।

**मंदोदरी**

मय दानव की कन्या और रावण की पटरानी।

**मकर संक्रान्ति**

सूर्य जब मकर राशि में प्रवेश करता है।

**मघा**

सत्ताईस नक्षत्रों में से दसवाँ नक्षत्र जिसमें पाँच तारे हैं।

**मच्छोदरी (मत्स्योदरी)**

व्यास की माता और शान्तनु की पत्नी सत्यवती।

**मणिपुर**

एक चक्र जो नाभि के पास स्थित है।

**मत्स्यगंधा**

व्यास की माता सत्यवती।

**मत्स्य पुराण**

१८ पुराणों में से एक महापुराण।

**मत्स्यावतार**

विष्णु के दस अवतारों में से एक।

**मत्स्येंद्रनाथ**

गोरखनाथ के गुरु एक प्रसिद्ध हठयोगी।

**मथुरा**

श्रीकृष्ण की जन्मभूमि और सप्तपुरियों में से एक।

**मद**

नौ प्रकार के होते हैं :—

जातिमद, रूपमद, ज्ञानमद, कुलमद, विद्यामद, ध्यानमद, यौवनमद, धनमद और राजमद।

## मदनगोपाल

श्रीकृष्ण का एक नाम ।

## मदन महोत्सव

एक प्राचीन मादक उत्सव जो चैत्र शुक्ला द्वादशी से चतुर्दशी तक मनाया जाता था ।

## मदनमोहन

श्रीकृष्ण का एक नाम ।

## मदालसा

विश्वावसु गंधर्व की कन्या जिसे पातालकेतु दानव उठाकर पाताल लोक ले गया था ।

## मधुकैटभ

मधु और कैटभ नाम के दो दैत्य जिन्हें विष्णु ने मारा ।

## मधुपर्क

दही, घी, जल, शहद और चीनी मिलाकर बनाया हुआ पदार्थ जो देवताओं को अर्पित किया जाता है जिससे सुख-सौभाग्य की वृद्धि होती है। पूजन के षोडश उपचारों में से एक उपचार मधुपर्क-अर्पण भी है। टकाभर घी, तीन टकाभर दही और टकाभर शहद को भी मधुपर्क कहते हैं :—

'आज्यमेक पलं ग्राह्यं दधि त्रिपलमेव च ।
मधुनापलमेकन्तु मधुपर्कस्स उच्यते ॥'

## मधुपुरी

मथुरा नगरी ।

## मधुबन

ब्रज का एक बन जो यमुना के किनारे था; किष्किन्धा के पास सुग्रीव का बन ।

## मधुसूदन

श्रीकृष्ण का नाम ।

## मध्वाचार्य

बारहवीं शताब्दी के प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य और मध्व सम्प्रदाय के संस्थापक ।

## मनु

मानवों के आदि पुरुष और ब्रह्मा के पुत्र। सूर्य सिद्धान्त के अनुसार एक कल्प में १४ मनुओं का अधिकार रहता है और उनके अधिकार-काल को मन्वन्तर कहते हैं। १४ मनु हैं :—
स्वायंभुव, स्वरोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्वत, सावर्णि, दक्षसावर्णि, ब्रह्मसावर्णि, धर्मसावर्णि, रुद्रसावर्णि, देवसावर्णि, इन्द्रसावर्णि।

## मनु-पुत्र

पुराणों के अनुसार इक्ष्वाकु, नृग, शर्याति, द्रिष्ट, धृष्ट, करुष, नरिष्यन्त, पृषध्र, नभग और कवि—ये दस मनु-पुत्र माने जाते हैं।

## मनुष्य

मनुष्य की पाँच अवस्थाएँ हैं—
बाल्यावस्था, कुमारावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ा या वृद्धावस्था।

## मनुसंहिता

मनु द्वारा रचित धर्मशास्त्र।

## मनुस्मृति

मनु द्वारा रचित मानव-धर्मशास्त्र।

## मनोमय कोश

वेदान्त दर्शन के अनुसार पाँच कोशों में से तीसरा कोश। मन, अहंकार और कर्मेन्द्रियाँ इस कोश के अन्तर्गत आती हैं।

## मन्वन्तर

चौदह मनुओं में से एक मनु की आयु का काल जो इकहत्तर चतुर्युगी (३११४४८०००० वर्ष) का होता है और ब्रह्मा के दिन का चौदहवाँ भाग होता है। सांसारिक गणना के अनुसार यह ४३२०००० वर्ष का माना जाता है।

## मय

एक दानव जो प्रसिद्ध शिल्पी था। इसी ने युधिष्ठिर का राजभवन बनाया था जो शिल्पकला की दृष्टि से अद्भुत था; एक प्राचीन देश।

## मयसुता

मन्दोदरी (दे०) का नाम।

## मरियम

ईसा मसीह की कुमारी माता।

## मरीचि

दस प्रजापतियों में से एक और ब्रह्मा के पुत्र कहे जाने वाले सप्तर्षियों में से एक ऋषि; श्रीकृष्ण का एक नाम; एक स्मृतिकार; एक मरुत का नाम; एक ऋषि जो भृगु के पुत्र और कश्यप के पिता थे।

## मरुत

वेदों में इन्हें रुद्र और वृश्नि के पुत्र कहा गया है। किन्तु श्रीमद्-भागवत् पुराणानुसार दैत्यों का नाश हो जाने पर दुखित दिति ने एक इन्द्रहन्ता पुत्र माँगा। कश्यप ने विवश होकर उससे एक वर्ष तक कठोर व्रत रखने के लिए कहा। जब एक वर्ष में थोड़े ही दिन रह गए और दिति सो गई तो इन्द्र ने गर्भ में घुस कर बालक के ४६ टुकड़े कर दिए। जब वे रोने लगे तो इन्द्र ने उन्हें सान्त्वना दी और उन्हें अपना भाई कहा। विष्णु ने उन्हें देवता बना दिया। दिति प्रसन्न हुई। ये मरुत इन्द्र के मित्र बन कर रहे। ये संख्या में ४६ माने जाते हैं :—१. एकज्योति, २. द्विज्योति, ३. त्रिज्योति, ४. ज्योति, ५. एकशक्र, ६. द्विशक्र, ७. त्रिशक्र, ८. इन्द्र, ९. गतदृश्य, १०. ततः, ११. पतिसक्तृत्, १२. पर, १३. मित, १४. सम्मित, १५. सुमति, १६. ऋतजित्, १७. सत्यजित्, १८. सुषेण, १९. सेनजित्, २०. अतिमित्र, २१. अनमित्र, २२. पुरुमित्र, २३ अपराजित, २४. ऋत, २५. ऋतवाह, २६. धर्ता, २७. धरुण, २८. ध्रुव, २९. विधारण, ३०. देवदेव, ३१. ईदृक्ष, ३२. अदृक्ष, ३३. व्रतिन, ३४. असदृक्ष, ३५. समर, ३६. धाता, ३७. दुर्ग, ३८. धिति, ३९. भीम, ४०. अभियुक्त, ४१. अर्थात्, ४२. सह, ४३. द्युति, ४४. द्यपु, ४५. अनाय्य, ४६. अथवास, ४७. काम, ४८. जय और ४९. विराट्। दिति के ये ४६ बालक 'मरुत्' नाम से इन्द्र के साथ रहते और उसकी सहायता करते हैं। इन्हें 'पवन' भी कहते हैं।

## मरुत्त

एक चन्द्रवंशी राजा जिसके यज्ञ में देवता आकर काम करते थे।

## मल

शरीर के बारह मल माने जाते हैं :—
वसा, शुक्र, रक्त, मज्जा, मूत्र, विष्ठा, कान का मैल, नख, श्लेष्मा या कफ, आँसू, शरीर के ऊपर जमा हुआ मैल, पसीना।

मलमास

वह अमांत मास जिसमें संक्रांति नहीं पड़ती; दे० 'अधिमास'।

मलयगिरि

दक्षिण (मैसूर) का एक पर्वत जहाँ चन्दन बहुत होता है; हिमालय पर्वत का वह भाग जो असम में है।

मल्लिकार्जुन

श्री शैल पर स्थित शिवजी के एक लिंग का नाम।

मल्लिनाथ

जैनों के उन्नीसवें तीर्थंकर।

मसीह (ईसा)

ईसाइयों के पैगम्बर हज़रत ईसा मसीह (यशु ख्रीष्ट)।

महतत्व

सांख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति का पहला विकार जिससे अहंकार की उत्पत्ति होती है; जीवात्मा; बुद्धितत्व।

महर्लोक

चौदह लोकों में से ऊपर का चौथा लोक।

महाकाल

उज्जैन में स्थापित शिवलिंग का नाम।

महाकाली

महाकाल रूपी शिव की पत्नी जिसके पाँच मुख और आठ भुजाएँ मानी जाती हैं।

महागौरी

दुर्गा का एक नाम।

महाद्वीप

जम्बूद्वीप, प्लक्षद्वीप, शाल्मलि द्वीप, कुशद्वीप, क्रौंचद्वीप, शाकद्वीप, पुष्कर द्वीप—इन सात द्वीपों में पृथ्वी बँटी मानी गई है।

महानवमी

आश्विन शुक्ला नवमी।

महानिर्वाण

परिनिर्वाण जिसके केवल अर्हत् या बुद्ध अधिकारी हैं।

## महानिशा

प्रलय की रात।

## महापंचविष

शृंगी, कालकूट, मुस्तक, बछनाग और शंखकर्णी।

## महापद्म

नौ निधियों में से एक; सौ पद्म की संख्या।

## महाप्रलय

सृष्टि का नाश जो हर ४३२००००००० वर्ष बाद अथवा ब्रह्मा के १०० वर्ष बाद होता है जिस वर्ष का एक दिन ऊपर लिखे हुए वर्षों के बराबर होता है। ब्रह्मा की एक रात्रि भी इतने ही वर्षों की होती है। महाप्रलय के समय ब्रह्मा, देवताओं, ऋषि, मुनि सहित सातों लोक नष्ट हो जाते हैं।

## महापातक

मनुस्मृति के अनुसार पाँच महापातक माने गए हैं :—
ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरु-स्त्री-गमन और इन पातकों के करने वालों का संग।

## महाभारत

वेदव्यास प्रणीत भारत का प्रसिद्ध महाकाव्य जिसमें अनेक प्रासंगिक कथाओं के अतिरिक्त कौरव-पाण्डवों की कथा है। इसमें १८ पर्व हैं :—

आदि, सभा, वन, विराट, उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, सौप्तिक, स्त्री, शान्ति, अनुशासन, अश्वमेध, आश्रमवासी, मौसल, महाप्रास्थनिक, स्वर्गारोहण।

## महाभाष्य

पाणिनि के व्याकरण पर पतंजलि का रचा हुआ भाष्य।

## महाभूत

पृथ्वी, जल, आकाश, अग्नि और वायु—ये पाँच तत्त्व।

## महामाया

दस प्रकार की दुर्गा :—
काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगला, मातङ्गी, कमला। गंगा को भी 'महामाया' कहा गया है।

## महायज्ञ

स्मृतियों और गृह्यसूत्रों के अनुसार प्रत्येक गृहस्थ को पाँच कर्म नित्य करने चाहिए :—

१. ब्रह्मयज्ञ या ऋषियज्ञ (शास्त्रों का अध्ययन-अध्यापन)
२. पितृयज्ञ (पितरों के लिए तर्पण)
३. देवयज्ञ (देवताओं को प्रसन्न करने के लिए हवन इत्यादि)
४. भूतयज्ञ (पशु-पक्षी आदि को अपने भोजन का एक भाग देना)
५. मनुष्ययज्ञ या नृयज्ञ (अतिथि-सेवा)।

इन्हें इस प्रकार भी बताया गया है :—

ब्रह्मयज्ञ, वैश्वदेव होम, बलि-कर्म, नित्य श्राद्ध और अतिथि-भोजन अथवा—

१. स्वाध्याय, २. अग्निहोत्र, ३. आतिथ्य, ४. पितृतर्पण, ५. बलिवैश्व।

## महायान

बौद्धों के दो प्रमुख संप्रदायों में से एक। महायान संप्रदाय ही विदेशों में फैला और यही फिर तंत्र से प्रभावित हुआ। दूसरा प्रमुख संप्रदाय हीनयान है जो बुद्ध के उपदेशों के अधिक निकट रहा।

## महायुग

सत्य युग, त्रेता युग, द्वापर युग और कलियुग—इन चारों युगों का समूह। मनुष्यों के ये चार युग देवताओं के एक युग के बराबर होते हैं। इसमें मनुष्यों के ४३२०००० वर्ष होते हैं।

## महारथी

जो अकेला दस हज़ार योद्धाओं का संचालन करता हो या जो अकेला ११ सहस्र धनुषधारियों से युद्ध करे। भीम, अर्जुन, विराट, द्रुपद, कुन्तिभोज, कर्ण, भीष्म, द्रोण, युधमन्यु, अभिमन्यु, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, पुरुजित आदि महारथी कहे जाते हैं।

## महारात्रि

महाप्रलय की रात्रि जब ब्रह्मा का लय हो जाता है और दूसरा कल्प प्रारम्भ होता है।

## महारावण

एक रावण जिसके हज़ार मुख और दो हज़ार भुजाएँ मानी गई हैं।

## महारुद्र

शिवजी का एक नाम।

महारौरव

एक नरक का नाम ।

महावाक्य

१. ब्रह्मज्ञानमनन्दमय ब्रह्म, २. तत्वमसि, ३. अहं ब्रह्मास्मि, ४. अय-मात्मा ब्रह्म ।

महाविद्या

तंत्र में मानी हुई दस देवियाँ :—
काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमलात्मिका। (दे० 'महामाया' और 'देवी' भी)

महावीर

हनुमान जी; जैनियों के चौबीसवें और अंतिम तीर्थंकर; गौतम बुद्ध ।

महाव्याहृति

भूः, भुवः, स्वः—ऊपर के ये तीन लोक ।

महाश्वेता

सरस्वती का एक नाम ।

महिम्न

शिवजी से संबंधित एक स्तोत्र ।

महिरावण

रावण का एक लड़का ।

महिषमर्दिनी

महिषासुर का वध करने वाली दुर्गा ।

महिषासुर

भैंसे की शक्ल का और रंभ नामक दैत्य का पुत्र जिसे दुर्गा ने मारा। इसलिए दुर्गा का नाम महिषमर्दिनी भी है ।

मांगलिक द्रव्य

आठ मांगलिक द्रव्यों का समुदाय है :—
मृगराजो वृषो नागः कलशो व्यजनं तथा ।
वैजयन्ती तथा भेरी दीप इत्यष्ट मंगलम् ।।
स्थानान्तरे—
लोकेऽस्मिन्मंगलान्यष्टौ ब्राह्मणो गौर्हुताशनः ।
हिरण्यं सर्पिरादित्य ,आपो राजा तथावृषः ।।

**मांडवी**

राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या जो दशरथ के पुत्र और श्री राम के भाई भरत को ब्याही थी।

**मांडव्य**

एक ऋषि जिन्होंने यमराज को शाप दिया कि तुम शूद्र हो जाओ।

**मांडूक्य**

एक उपनिषद् का नाम।

**मांधाता**

एक सूर्यवंशी राजा।

**मातंग**

एक ऋषि जो शबरी के गुरु थे।

**मातंगी**

दस महाविद्याओं में से एक।

**मातलि (माकलि)**

इन्द्र के सारथी का नाम।

**माता**

सात प्रकार की मानी गई हैं :—
जन्म देनेवाली, गुरु-पत्नी, ब्राह्मणी, राजपत्नी, गौ, धाय और मातृभूमि।

**मातृका**

तांत्रिकों की सात देवियों का नाम :—
ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इंद्राणी और चामुण्डा।

**माद्री**

पाण्डु की पत्नी और नकुल तथा सहदेव की माता।

**माध्यंदिनी**

वाजसनेइयों की एक शाखा; शुक्ल यजुर्वेद की एक शाखा।

**मानव-धर्मशास्त्र**

मनुसंहिता का नाम।

**मानस**

तुलसीकृत 'रामचरितमानस' (सं० १६३१)। इसके काण्ड हैं :—
बाल, अयोध्या, अरण्य, किष्किन्धा, सुन्दर, लंका और उत्तर। पूरे 'मानस' में २७ श्लोक, ४६४७ चौपाइयाँ, ११६३ दोहे, ८७ सोरठे और २१४ अन्य छन्द हैं। विविध काण्डों में क्रमश: १५६८३, १५०५८, ४०११, १८१५, ४३१६, ८६१६ और ६६५० शब्द हैं।

## मानस-पुत्र

ब्रह्मा के दस मुख्य मानस-पुत्र कहे गए हैं :—
मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, प्रचेता, वसिष्ठ, भृगु और नारद। वैसे सनक-सनन्दन भी ब्रह्मा के मानस-पुत्र माने गए हैं। मानस-पुत्र उसे कहते हैं जो इच्छा मात्र से उत्पन्न हो।

## माया

ईश्वर के अतिरिक्त संसार की सभी वस्तुओं को अनित्य और मिथ्या मानने का सिद्धान्त; मय दानव की कन्या जिससे खर, दूषण, त्रिशिरा और शूर्पणखा का जन्म हुआ; गौतम बुद्ध की माता का नाम; दुर्गा।

## मायास्त्र

एक प्रकार का अस्त्र जिसका प्रयोग विश्वामित्र ने राम को सिखाया था।

## मारण

किसी मनुष्य को मारने के लिए तांत्रिक प्रयोग।

## मारीच

रामायण में उल्लिखित एक राक्षस जिसने सोने के मृग का रूप धारण कर सीता को धोखा दिया और रावण द्वारा सीता-हरण में रावण की सहायता की।

## मार्कण्डेय

मृकंड ऋषि के पुत्र जो अमर हैं; एक पुराण।

## माल्यवान्

सुकेश का पुत्र एक राक्षस; एक पर्वत।

## माहेश्वर

एक शैव संप्रदाय; एक उपपुराण; पाणिनि के वे चौदह सूत्र जिनमें स्वर और व्यंजन वर्णों का संग्रह प्रत्याहारार्थ किया गया है।

## माहेश्वरी

दुर्गा का एक नाम।

## मिताक्षरा

याज्ञवल्क्य स्मृति पर विज्ञानेश्वर की टीका।

## मीमांसा

वैसे तो मीमांसा पूर्वमीमांसा और उत्तरमीमांसा नाम से प्रसिद्ध है, किन्तु मीमांसा से प्राय: पूर्वमीमांसा का ही बोध होता है। उत्तर

मीमांसा को वेदान्त कहते हैं। पूर्वमीमांसा जैमिनि कृत दर्शन है। इसमें वेद के यज्ञपरक वचनों की व्याख्या है। मीमांसा षड्दर्शनों में से एक है।

**मुंडमालिनी**

मुंडों की माला धारण करनेवाली काली देवी।

**मुंडमाली**

शिवजी का एक नाम।

**मुकुंद**

विष्णु और कृष्ण का नाम।

**मुक्ति**

सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य और कैवल्य।

सालोक्य —वह मुक्ति जब मुक्त जीव भगवान् के साथ एक लोक में वास करता है।

सामीप्य —वह मुक्ति जब मुक्त जीव भगवान् के समीप पहुँच गया माना जाता है।

सारूप्य —वह मुक्ति जब मुक्त जीव भगवान् का ही रूप धारण कर लेता है।

सायुज्य —वह मुक्ति जब मुक्त जीव भगवान् में लीन हो जाता है।

कैवल्य —शुद्ध निर्लिप्त मुक्ति।

**मुचकुन्द (मुचुकुन्द)**

राजा मान्धाता का पुत्र और भागवत पुराण-प्रसिद्ध एक राजा। इसी के नेत्रों की अग्नि से श्रीकृष्ण ने कालयवन को भस्म कराया था।

**मुख**

मुख के मुख्यतः दो भाग होते हैं :—

१. मुख-मण्डल और २. मुख-गह्वर। 'मुखमण्डल' के अन्तर्गत नाक, ओंठ, गाल, आँख, ललाट और मुख की गणना की जाती है। 'मुख-गह्वर' के अन्तर्गत दाँत, जबड़े, ओंठ का भीतरी भाग, जीभ, तालु, कण्ठ और गला आते हैं।

**मुद्रा**

हठयोग में पाँच मुद्राएँ हैं :—

खेचरी, भूचरी, चाचरी, गोचरी और उन्मनी। विष्णु के आयुधों के चिह्न जिन्हें भक्त लोग अपने शरीर पर धारण करते हैं; गोरखपंथी साधुओं के पहनने का एक कर्णभूषण।

**मुद्रा-मार्ग**

ब्रह्मरन्ध्र अर्थात् मस्तक के भीतर का वह रन्ध्र जहाँ से योगियों का प्राण-वायु बाहर निकलता है।

**मुनि**

'दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः स्थिरधीर्मुनिरुच्यते ॥'
(दुःख-सुख में जो सम-भाव रखे, राग, भय और क्रोध-रहित हो, स्थिर बुद्धिवाला हो, वही मुनि कहा जाता है।)

**मुर**

एक दैत्य जिसका श्रीकृष्ण या विष्णु ने वध किया (मुरारि=श्रीकृष्ण)।

**मुरलीधर या मुरलीमनोहर**

श्रीकृष्ण का नाम।

**मुरसुत**

वत्सासुर का नाम।

**मुरा**

एक दासी जिससे महानंद के पुत्र चन्द्रगुप्त का जन्म हुआ माना जाता है।

**मुरारि या मुरारी**

श्रीकृष्ण का नाम।

**मुहम्मद**

इस्लाम धर्म के पैगम्बर हज़रत मुहम्मद।

**मुष्टियोग**

हठयोग की कुछ क्रियाएँ जो शरीर को नीरोग और शक्तिशाली बनाने के लिए की जाती हैं।

**मूल तत्व**

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश।

**मूलदेव**

चौर्यकला विज्ञान के प्रादुर्भावकर्ता। कर्णी इनकी माता का नाम था।

**मूलाधार**

शरीर के छह चक्रों में से एक।

मृग

कृष्णसार, रुरु, न्यंकु, रंकु, शंवर रौहिष, गोकर्ण, पृषत, ऐण, ऋश्य, रोहित, चमर।

मृतसंजीवनी

वह बूटी जिसके खिलाने से मुर्दा भी जिन्दा हो जाता है।

मेघनाद

रावण का प्रतापी पुत्र जिसे राम-रावण युद्ध में लक्ष्मण ने मारा था।

मेघपुष्प

श्रीकृष्ण के रथ का एक घोड़ा।

मेघवर्त्त

प्रलयकाल के मेघों में से एक।

मेधातिथि

काण्व वंश के एक ऋषि जिन्होंने ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के १२-१३ सूक्तों की रचना की; कण्व मुनि के पिता; महावीर स्वामी के पुत्र जिन्होंने मनुसंहिता की टीका की रचना की; प्रियव्रत के पुत्र और शाकद्वीप के अधिपति; कर्दम प्रजापति के पुत्र।

मेनका

एक अप्सरा जिसके गर्भ से शकुन्तला का जन्म हुआ; उमा या पार्वती की माता का नाम।

मेरु

सुमेरु पर्वत जो सोने का माना जाता है; जपमाला के बीच का सबसे बड़ा दाना।

मैत्रायणि

एक उपनिषद् का नाम।

मैत्रावरुणि

वाल्मीकि का एक नाम; मित्र और वरुण के पुत्र अगस्त्य का नाम; सोलह ऋत्विजों में से एक।

मैथुन

शास्त्रों में मैथुन आठ प्रकार का माना गया है :—

श्रवण (स्त्रियों के बारे में सुनना), सुमिरन (स्त्रियों का स्मरण करना), कीर्तन (स्त्रियों की चर्चा करना), चिन्तन (स्त्रियों के बारे में सोचते रहना), एकान्त में बात करना (गुप्त बात करना), दृढ़

संकल्प (स्त्रियों का संकल्प), प्रयत्न (स्त्रियों का अध्यवसाय), प्राप्ति (स्त्रियों से क्रिया)।

स्त्रियों को घूरना और उनके साथ क्रीड़ा करना भी मैथुन के प्रकार हैं।

मैनसिल

लक्ष्मी के रज से उत्पन्न धातु।

मैनाक

एक पर्वत जो हिमालय का पुत्र माना जाता है। यह हिमालय की एक बहुत ऊँची चोटी है।

मोहरात्रि

ब्रह्मा के पचास वर्ष बीत जाने पर होने वाली प्रलय।

मौन

स्मृति के अनुसार शौच के समय, पेशाब करते समय, स्त्री-प्रसंग करते समय, दाँत साफ करते समय, स्नान करते समय और खाना खाते समय मौन रहना चाहिए।

## य

यक्ष

एक देवयोनि जिसके अधिपति कुबेर माने जाते हैं। यक्ष कुबेर के धन की रक्षा करते हैं। यक्ष अपदेवता माने जाते हैं।

यक्षपति

कुबेर की उपाधि।

यक्षिणी

यक्ष या कुबेर की पत्नी; दुर्गा देवी की एक अनुचरी।

यक्षेश्वर

कुबेर की उपाधि।

यजुर्वेद

यज्ञ-कर्म से संबंधित वेद।

यज्ञ

सामान्यत: यज्ञ उस पवित्र कर्म को कहते हैं जिसे मनुष्य एकाग्रचित्त होकर, स्वार्थ से रहित, पवित्र आचरण करते हुए, करता है। अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करना भी यज्ञ करने के समान माना जाता है। पौराणिक दृष्टि से स्वायम्भुव मनु की पुत्री से एक पुत्र, यज्ञ, और एक

पुत्री, दक्षिणा, का जन्म हुआ। यज्ञ भगवान् का स्वरूप और दक्षिणा लक्ष्मी का स्वरूप मानी जाती है। यज्ञ ने दक्षिणा से विवाह किया और उनके बारह पुत्र उत्पन्न हुए जो तुषित नाम से स्वायंभुव मन्वन्तर के देवगण बने।

**यज्ञ**

देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ, नृयज्ञ और ब्रह्मयज्ञ।

**यज्ञ**

यज्ञ के चार कर्मचारी माने जाते हैं :—
होता, अध्वर्यु, उद्गाता और ब्रह्मा। होता=यज्ञकर्त्ता, यजमान; अध्वर्यु=यज्ञवेदी को माप कर बनाने, लकड़ी और जल लाने वाला; उद्गाता=मंत्रोच्चार करने वाला; ब्रह्मा=जिसका यज्ञ में वरण किया जाय।

**यज्ञपत्नी**

दक्षिणा।

**यज्ञपुरुष**

विष्णु का नाम।

**यदुनंदन या यदुपति या यदुराज**

श्रीकृष्ण।

**यम**

यमराज; धर्मराज; चित्त को धर्म में स्थिर रखने वाले कर्मों का साधन। यम १४ माने गए हैं :—यम, धर्मराज, मृत्यु, अन्तक, वैवस्वत, नील, दघ्न, काल, सर्वभूतक्षय, परमेष्ठि, वृकोदर, औदुम्बर, चित्र, चित्रगुप्त। स्मृतिकारों ने यमों को इस प्रकार बताया है :—
'ब्रह्मचर्यं दया क्षान्तिर्दानं सत्यमकल्कता।
अहिंसाऽस्तेय माधुर्ये दमञ्चेति यमाः स्मृताः॥
अथवा—
आनृशंस्य दया सत्यमहिंसा क्षान्तिरार्जवम्।
प्रीतिः प्रसादो माधुर्यं मार्दवं च यमा दश॥
अथवा—
अहिंसा सत्यवचनं ब्रह्मचर्यमकल्कता।
अस्तेयमिति पञ्चैते यमाख्यानि व्रतानि च॥

**यमकातर**

यम का खांडा।

**यमघट**

दीपावली का दूसरा दिन; एक दुष्ट योग जो विशेष नक्षत्र पड़ने पर होता है ।

**यमदग्नि**

दे० 'जमदग्नि' ।

**यमद्वितीया**

भाईदूज जो कार्तिक शुक्ला द्वितीया को पड़ती है ।

**यमलार्जुन**

कुबेर के पुत्र नलकूबर और मणिग्रीव जो नारद के शाप से पेड़ बन गए थे । श्रीकृष्ण ने उनका उद्धार किया ।

**यमी**

यम की बहन जो बाद को यमुना नदी के रूप में प्रवाहित हुई ।

**यमुना**

यम की बहन यमी और उत्तर भारत की प्रसिद्ध एवं पवित्र नदी ।

**ययाति**

राजा नहुष के पुत्र जिनका विवाह शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी से हुआ ।

**यशोदा**

नंद की पत्नी जिन्होंने श्रीकृष्ण को पालपोस कर बड़ा किया ।

**यशोधरा**

गौतम बुद्ध की पत्नी और राहुल की माता ।

**याज्ञवल्क्य**

वैशंपायन के शिष्य एक प्रसिद्ध ऋषि; एक स्मृतिकार जो योगीश्वर याज्ञवल्क्य के वंशधर थे ।

**युग**

मनुष्य के ३६५ दिनों का एक दिव्य दिन । ३०० दिव्य दिनों का एक दिव्य वर्ष, ४८०० दिव्य वर्षों का सतयुग, ३६०० दिव्य वर्षों का त्रेता युग, २४०० दिव्य वर्षों का द्वापर युग और १२०० दिव्य वर्षों का कलियुग होता है ।

**युग**

युग चार हैं :—
सतयुग (१७२८००० वर्ष), त्रेता (१२९६००० वर्ष), द्वापर (८६४००० वर्ष), कलियुग (४३२००० वर्ष) । चारों युगों के वर्षों

का योग=४३२०००० वर्ष। ४३२००००×१०००=१ कल्प।
(दे० 'चतुर्युग' भी)

**युधाजित्**

भरत के मामा और कैकेयी के भाई।

**युधिष्ठिर**

पांडवों में ज्येष्ठ जो धर्मपरायण और सत्यवादी थे।

**योग**

कर्मयोग, भक्तियोग और राजयोग।

**योग**

योग के आठ अंग माने जाते हैं :—
यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि।

**योग**

राजयोग की आठ श्रेणियाँ होती हैं :—
यम, (अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य आदि), नियम (स्वच्छता, अध्ययन, उपासना, इन्द्रिय-निग्रह, अक्रोध, गुरु-सेवा, अप्रमाद, शौच, मौन आदि), आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि।

**योगनिद्रा**

युग के अंत में होने वाली विष्णु की निद्रा जिसे दुर्गा कहा जाता है।

**योगमाया**

वह कन्या जो यशोदा के गर्भ से उत्पन्न हुई, कारागार में देवकी के पास पहुँचाई गई और जब कंस ने उसे मार डालना चाहा तो आकाश की ओर जाते समय उसने यह घोषित किया कि कंस का मारने वाला उत्पन्न हो चुका है।

**योगवासिष्ठ**

वसिष्ठ कृत वेदान्तशास्त्र संबंधी ग्रन्थ।

**योगशक्ति**

सावद्य, निरवद्य और सूक्ष्म।

**योगशास्त्र**

महर्षि पतंजलि द्वारा रचित शास्त्र जो योग-साधना विषयक है।

**योगसूत्र**

महर्षि पतंजलि द्वारा रचित योग-संबंधी सूत्र।

## योगिनी

आठ विशिष्ट तपस्विनियाँ योगिनी कही जाती हैं :—
शैलपुत्री, चंद्रघंटा, स्कंदमाता, कालरात्रि, चंडिका, कूष्मांडी, कात्यायनी, महागौरी। (चौंसठ योगिनियों के नामों के लिए दे० 'देवी')

## योगी

योगियों के छह कर्म माने गए हैं :—
'धौतिर्वस्ती तथा नेती नौलिकी त्राटकस्तथा ।
कपालभाती: चैतानि षट्कर्माणि समाचरेत ।।'

## योगीश्वर

याज्ञवल्क्य ।

## योगीश्वरी

दुर्गा ।

## योगेश्वर

श्रीकृष्ण की उपाधि।

## योगेश्वरी

दुर्गा की उपाधि ।

## योनि

देवताओं के अंश से उत्पन्न विद्याधर आदि नौ योनियाँ प्रधान हैं :—
विद्याधर, अप्सरा, यक्ष, राक्षस, गन्धर्व, किन्नर, पिशाच, गुह्यक और सिद्ध ।

८४ योनियाँ ये हैं :—९ जलचर, १० व्योमचर, ११ कृमि, २० वनचर, ४ मनुज, ३० पशु ।

अथवा—

स्वेदज, अण्डज, उद्भिज, जरायुज ।

# र

## रंतिदेव

एक चन्द्रवंशी राजा ।

## रंभा

नलकूबर की पत्नी एक अप्सरा जो इन्द्रलोक की सर्वाधिक सुन्दरी अप्सरा मानी जाती है। यह समुद्र-मंथन के समय निकली थी ।

**रक्तबीज**

शुंभ और निशुंभ का सेनापति। युद्ध के समय इसके शरीर से रक्त की जितनी बूँदें गिरती थीं उतने ही नए राक्षस पैदा हो जाते थे।

**रक्षाबंधन**

हिन्दुओं का वह त्यौहार जब बहन भाई के राखी बाँधती है और जो श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को पड़ता है।

**रक्षामंगल**

वह धार्मिक कार्य जो भूत-प्रेतों से रक्षा के लिए किया जाता है।

**रघु**

सूर्यवंशी राजा जो दिलीप के पुत्र और राजा अज के पिता थे। ये श्री राम के परदादा थे।

**रघुनंदन या रघुनाथ या रघुनायक या रघुपति या रघुराई या रघुराज या रघुवर**

श्री रामचन्द्र के नाम।

**रघुवंश**

महाराज रघु का वंश; कालिदास द्वारा रचित एक महाकाव्य।

**रति**

दक्ष प्रजापति की कन्या और कामदेव की पत्नी जो सौन्दर्य का प्रतीक मानी जाती है; साहित्य में श्रृंगार का रस स्थायी भाव।

**रतिनायक या रतिनाह या रतिपति या रतिराज**

कामदेव के नाम।

**रत्न**

चौदह रत्न जो समुद्र-मन्थन के समय निकले थे :—

लक्ष्मीः कौस्तुभपारिजातकसुराधन्वन्तरिश्चन्द्रमा
गावो कामदुधाः सुरेश्वर गजो रम्भादिदेवांगनाः।
अश्व सप्तमुखो विषं हरिधनुः शंखो मृतं चांबुधे
रत्नानीह चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्युः सदामंगलम्॥

(लक्ष्मी, कौस्तुभ, पारिजात या कल्पद्रुम, सुरा या वारुणी (या मदिरा), धन्वन्तरि, चन्द्रमा, कामधेनु, ऐरावत, रंभादि अप्सराएँ, उच्चैःश्रवा, कालकूट या हलाहल विष, इन्द्रधनुष, पांचजन्य शंख और अमृत) (दे० 'नवरत्न' भी)

**रत्नदीप**

एक कल्पित रत्न जिसके प्रकाश से पाताल में प्रकाश होता है।

**रथयात्रा**

आषाढ़ शुक्ला द्वितीया के दिन पुरी में जगन्नाथ जी, बलराम और सुभद्रा की प्रतिमाओं को रथ में प्रतिष्ठापित कर उसे लोगों द्वारा खींचे जाने का उत्सव।

**रमल फेंकना**

रमल की सहायता से भविष्य की बातें बताना।

**रमानिवास या रमारमण**

विष्णु की उपाधियाँ।

**रविचंचल**

काशी में स्थित लोलार्क नामक तीर्थ-स्थल।

**रवितनय**

यमराज; कर्ण; सुग्रीव; अश्विनीकुमार; शनि।

**रवितनया या रविनंदिनी**

यमुना के नाम।

**रस**

नाटक के आठ रस हैं :—

श्रृंगारहास्य करुण रौद्र वीर भयानका:।

वीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसा: स्मृता:॥ (दे० 'षट्रस' भी)

**रस**

वैद्यक में मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कषाय—ये छह रस माने गए हैं।

**रस**

साहित्य में रस ९ होते हैं :—

श्रृंगार (स्थायी भाव–रति), हास्य (हास), भयानक (भय), वीर (उत्साह), रौद्र (क्रोध), करुण (शोक) अद्भुत (आश्चर्य) वीभत्स (जुगुप्सा), शान्त (निर्वेद)। कुछ आचार्य इनमें 'वात्सल्य' को मिला कर दस रस मानते हैं।

**रसिक विहारी**

श्रीकृष्ण की उपाधि।

**रसेश्वर**

एक दर्शन जो छह दर्शनों से अलग है।

**राक्षस**

असुर; धन-कुबेर के कोष के रक्षक; एक प्रकार का विवाह जिसमें कन्या को प्राप्त करने के लिए युद्ध करना पड़ता था।

## राग

भरत के अनुसार छह माने गए हैं :—

भैरवः कौशिकश्चैव हिन्दोलो दीपकस्तथा ।
श्रीरागो मेघरागश्च रागाः षडिति कीर्तिताः ।।

गानविद्या के राग :—

भैरव, मल्लार (मेघ, श्री), सारङ्ग, हिंडोल, बसन्त, दीपक ।

## राग-रागिनी

छह राग और छत्तीस रागिनी मानी गई हैं :—

| राग | रागिनियाँ |
|---|---|
| १. श्री : (अथवा सारंग जो हेमन्त ऋतु में सिंहासनारूढ़ सुन्दर पुरुष का ध्यान करके गाया जाता है) | मालश्री, त्रिवेणी, गौरी, केदारी, मधुमाधवी, पहाड़ी । (ये नाम भी मिलते हैं :—गांधारी, सुभगी, गौरी, कौमारिका, वैरागी, काफ़ी) |
| २. बसन्त : (वसन्त पंचमी से रामनवमी तक आठों पहर वीर रस में गाया जा सकता है) | देशी, देवगिरि, वैराटी, टौरिका, ललित, हिंडोल । (ये नाम भी मिलते हैं :—टोड़ी, पंचमी, ललित, पटमंजरी, गुर्जरी और बियासा) |
| ३. पंचम : | विभास, भूपाली, कर्णाटी, पटहंसिका, मालवी, पटमंजरी । |
| ४. भरव : (शिव के मुख से जन्म, गाने का समय शरद् ऋतु की रात्रि का पिछला समय) | भैरवी, बंगाली, सेंधवी, रामकेली, गुर्जरी, गुणकरी । (नाम इस प्रकार भी मिलते हैं :—भैरवी, बंगाली, बरारी, मधुमाधवी, सिन्धवी, गुर्जरी) |
| ५. मेघ : (वर्षा ऋतु में श्रृंगार रस के अन्तर्गत) | मल्लारी, सैरिटी, सावेरी, कैशिकी, गान्धारी, हरश्रृंगार । (नाम इस प्रकार भी मिलते हैं :—बेलावली, वर्षा, कानड़ा, माधवी, कीड़ा और पटमञ्जरी) |
| ६. नर-नारायण : | कामोदी, कल्याणी, आभीरी, नाटिका, सारंगी, हम्मीरी । |

रागों के नामों में कुछ भिन्नता मिलती है । दे० 'राग' ।

हिंडोल राग की उत्पत्ति ब्रह्मा के शरीर से मानी जाती है। वसन्त ऋतु का राग है। हिंडोल राग की ये रागिनियाँ भी मानी गई हैं :—मायूरी, दीपक, देशवारी, पाहिड़ा, बराड़ी, मोरहारी)।
दीपक राग की उत्पत्ति सूर्य के नेत्र से मानी गई है और यह राग ग्रीष्म ऋतु में मध्याह्न समय गाया जा सकता है। इसकी रागिनियों के नाम हैं :—देशी, कामोदा, केदारा, कान्हड़ा, कर्णाटकी, गुर्जरी।

## राजनीति

छह अंग हैं :—
संधि, विग्रह, आसन, द्वैत, यान, आश्रय।

## राजतरंगिणी

कल्हण द्वारा संस्कृत में लिखित कश्मीर का इतिहास।

## राजयोग

वह प्राचीन योग जिसका वर्णन पतंजलि के योगशास्त्र में हुआ है; किसी मनुष्य की कुंडली में ऐसा योग जिससे वह राजा होता है।

## राजर्षि

क्षत्रिय जाति का ऋषि। पुरूरवस, जनक और विश्वामित्र राजर्षि माने जाते हैं।

## राजसूय

यज्ञ जिसे करने का अधिकार सम्राट् बनने के अधिकारी व्यक्ति ही को होता था।

## राजा

राजा के आठ कर्म ये हैं :—

आदाने च विसर्गे च तथा प्रैषनिषेधयोः।
पंचमे चार्यवचने व्यवहारस्य चेक्षणे।
दण्डशुद्धयोः सदा रक्तस्तेनाष्टगतिको नृपः॥

## राजा

विष्णु वामन—अदिति के पुत्र देवताओं का राजा।
दक्ष प्रजापति—पुण्यात्माजनों का राजा।
प्रह्लाद—दैत्यों और दानवों का राजा।
शूलपाणि—अन्य सब राजाओं का राजा।
धर्मराज—पितरों का राजा।
समुद्र—नदियों, तड़ागों, वापियों, कूपों आदि का राजा।
चित्ररथ—सब गन्धर्वों का राजा।

वासुकि—नागों का राजा।
तक्षक—सर्पों का राजा।
ऐरावत—हाथियों का राजा।
उच्चैःश्रवा—घोड़ों का राजा।
गरुड़—पक्षियों का राजा।
सिंह—वन्यपशुओं का राजा।
नन्दीश्वर—वृषभों, धेनु, महिष, महिषी आदि का राजा।
पिप्पल—सब वनस्पतियों का राजा।
पृथु—मनुष्यों का राजा।
चन्द्रमा—नक्षत्रादि का राजा।
वरुण—जल के मध्य सब तीर्थों का राजा।

## राज्यांग

राज्य के सात अंग माने गए हैं :—
स्वामी, मंत्री, देश, कोष, मित्र, गढ़, सैन्य।
कहीं-कहीं राज्य के आठ अंगों का उल्लेख मिलता है :—
राजा, अमात्य, सुहृत्, कोष, राष्ट्र (प्रजा), दुर्ग, बल (सेना इत्यादि), पौरश्रेणी (पुरवासियों का समूह)।

## राधा

वृषभानु गोप की कन्या और श्रीकृष्ण का विशेष अनुराग-प्राप्त एक गोपी; अधिरथ की स्त्री जिसने कर्ण का पालन-पोषण किया। इसे 'राधिका' भी कहते हैं।

## राधारमण या राधावल्लभ

श्रीकृष्ण के नाम।

## राधावल्लभी

महाप्रभु वल्लभाचार्य द्वारा स्थापित कृष्ण-भक्त वैष्णवों का एक सम्प्रदाय।

## राधिका

राधा (दे०)।

## राम या रामचंद्र

दशरथनन्दन राम जिनका आख्यान 'रामायण' (वाल्मीकि कृत) 'अध्यात्मरामायण' और तुलसी कृत 'रामचरितमानस' में है। परशुराम और बलराम को भी कभी-कभी 'राम' कह दिया जाता है। दशरथनन्दन राम विष्णु के अवतार माने जाते हैं। इनका आख्यान भारत के घर-घर में प्रसिद्ध है।

रामतारक

रामजी का मंत्र—'रां, रामाय नमः'।

रामदास

महाराज छत्रपति शिवाजी के गुरु; हनुमान जी।

रामनवमी

श्रीराम का जन्म-दिन—चैत्र सुदी नवमी।

रामनामी

वह कपड़ा जिस पर 'राम राम' छपा रहता है।

रामसनेही

वैष्णवों का एक सम्प्रदाय।

रामानंद

एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य जो विक्रम की १४ वीं शताब्दी में हुए और जिन्होंने रामावत संप्रदाय चलाया।

रामानुज

वेदान्तांतर्गत विशिष्टाद्वैत के प्रवर्तक दक्षिण के एक आचार्य।

रामानुज सम्प्रदाय

इस सम्प्रदाय के १२ आचार्य माने जाते हैं। दे० 'दिव्यसूरि'।

रामायण

महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित एक महाकाव्य (संस्कृत) जिसमें २४००० श्लोक और सात काण्ड हैं। इसमें राम का आख्यान है। इसे आदि काव्य माना जाता है।

रामावत

रामानन्द का चलाया हुआ एक वैष्णव संप्रदाय।

रामेश्वर

दक्षिण भारत के समुद्र-तट पर एक शिवलिंग जिसकी स्थापना भगवान् राम ने की थी।

रावण

लंका का अधिपति राक्षसराज रावण जिसने दशरथनन्दन राम की पत्नी सीता जी का अपहरण किया और जिसे राम ने युद्ध में मारा।

राशि (ज्योतिष)

राशि बारह हैं :—

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ और मीन।

**राहुल**

गौतम बुद्ध के पुत्र का नाम।

**रुक्म या रुक्मी**

रुक्मिणी के भाई का नाम। इसके पिता का नाम भीष्मक था।

**रुक्मिणी**

राजा भीष्मक की राजकुमारी और श्रीकृष्ण की पटरानी।

**रुक्मिन**

राजा भीष्मक के राजकुमार।

**रुद्र**

ब्रह्मा के आदेश से प्रजा-सृष्टि करने वाले रुद्र ११ माने गए हैं :—
मन्यु, मनु, महिनस, महान्, शिव, ऋतुध्वज, उग्ररेता, भव, काल, वामदेव, धृतव्रत।

अथवा :—

अज, एकपात, अहिर्बुध्न्य, अपराजित, पिनाकी, त्र्यम्बक, महेश्वर, वृषाकपि, शम्भु, हरण, ईश्वर।

अथवा :—अज, एकपात, अहिर्बुध्न्य, त्वष्टा, रुद्र, हर, शम्भु, त्र्यम्बक, अपराजित, ईशान, त्रिभुवन।

इनकी पत्नियाँ हैं :—धी, वृत्ति, उशना, उमा, नियुत, सर्पी, इला, अम्बिका, इरावती, सुधा, दीक्षा।

इनके स्थान हैं :—हृदय, दशेन्द्रिय, प्राण, आकाश, वायु, अग्नि, जल, भूमि, सूर्य, चन्द्र, तप।

रुद्र शिवजी के अपकृष्ट रूप माने जाते हैं। 'अमरकोश' में इनका उल्लेख इस प्रकार है :—

'आदित्य विश्ववसवस्तुषिता भास्वरानिलाः।
महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः ।।

(अर्थात् १२ आदित्य, १० विश्वदेव, ८ वसु, ४९ वायु, १२ साध्य, ११ रुद्र, ३६ तुषित, ६४ आभास्वर, २२० महाराजिक।)

**रुद्रगण**

शिवजी के पार्षद्।

**रुद्रट**

प्रसिद्ध 'काव्यालंकार' ग्रन्थ के रचयिता एक साहित्याचार्य।

**रुद्रतेज**

कार्तिकेय।

रुद्रयामल

तांत्रिकों का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ जिसमें भैरवी का संवाद है।

रुद्रविंशति

प्रभव आदि साठ संवत्सरों या वर्षों में से अंतिम बीस वर्षों का समूह जिसे 'रुद्रबीसी' कहते हैं।

रुद्राणी

रुद्र की पत्नी अर्थात् पार्वती जी।

रूपक

रूपक के दस भेद :—

नाटक, प्रकरण, भाण, प्रहसन, डिम, व्यायोग, समवकार, वीथी, अंक, ईहामृग। (दे० 'नाटक')

रेणुका

परशुराम (दे०) की माता का नाम।

रेवती

राजा रेवत की कन्या और बलराम जी की अर्द्धांगिनी का नाम; सत्ताईसवाँ नक्षत्र जो ३२ तारों से मिल कर बना है।

रेवतीरमण

बलराम जी की उपाधि।

रेवा

काम की पत्नी; रति; दुर्गा; रीवा राज्य; नर्मदा।

रैदास

कबीर के समकालीन और रामानन्द के शिष्य एक भक्त।

रैवतक

द्वारका के समीप एक पर्वत का नाम।

रोहिणी

वसुदेव की पत्नी का नाम। इनके गर्भ से ही बलराम (दे०) का जन्म हुआ था; २७ नक्षत्रों में से चौथा नक्षत्र; नौ वर्ष की कन्या की संज्ञा।

रोहिताश्व

सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र का पुत्र; अग्नि।

## ल

लंकनाथ या लंकनायक या लंकपति

रावण; विभीषण।

## लंका

रावण का राज्य जो भारत के दक्षिण में स्थित था; भारत के दक्षिण में एक टापू जिसे अब 'श्रीलंका' के नाम से पुकारा जाता है।

## लक्षण

अच्छे लक्षण बत्तीस होते हैं :—

सुकृत, स्वरूप, शील, सत्य, पराक्रम, शुच्यात्मा, अभ्यास, वरविद्या, सुमान, परमज्ञान, शास्त्रज्ञान, परस्त्री-त्याग, पुष्टविद्या, दासविभाग, पूर्णता, लोकेश, प्रियवाद, सत्संग, अकाम, गुणपूर्ण, मातृभक्ति, पितृ-भक्ति, गुरुभक्ति, जितेन्द्रिय, दातृत्व, धर्मात्मा, देवपूजन, अल्पनिद्रा, स्वल्पाहार, स्वच्छता, पुष्टता, धीरज।

और कुलक्षण अट्ठाईस माने गए हैं :—

काम, क्रोध, क्रियाहत, दुर्वाद, लोभ, लम्पटता, अलज्जा, अविद्या, अशोभा, आलस्य, अतिनिद्रा, दुष्टता, अदया, कृपणता, दरिद्रता, रोग, मलिनता, कुपात्रदान, अबूझता, भोग्यता, अत्याहार, अहंकार, अदृढ़ता, कुदान, दुर्भावता, अप्रतीति, मोह, व्यंग्यवाक्यता।

## लक्ष्मण

सुमित्रा से उत्पन्न महाराज दशरथ के पुत्र और श्री राम के छोटे भ्राता। ये शेषनाग के अवतार समझे जाते हैं।

## लक्ष्मी

धन की अधिष्ठात्री देवी और भगवान् विष्णु की पत्नी। इनका नाम कमला भी है। ये समुद्र-मंथन के समय निकली थीं।

## लक्ष्मीधर या लक्ष्मीपति

विष्णु के नाम।

## लघिमा

एक सिद्धि जिसे प्राप्त कर लेने पर मनुष्य बहुत छोटा या हलका बन जाता है।

## ललित कलाएँ

वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीतकला और काव्यकला।

## लव

श्री राम के पुत्र का नाम।

## लवण

पाँच प्रकार के माने जाते हैं :—

काँच, सेंधा, सामुद्र, विट और सोंचर।

**लवणासुर**

मधु दैत्य का पुत्र जिसे शत्रुघ्न ने मारा था।

**लाक्षागृह**

लाख का बना हुआ वह भवन जिसमें दुर्योधन पांडवों को जला देना चाहता था।

**लास्य**

पार्वती का मधुर नृत्य।

**लिंग**

सांख्य के अनुसार मूल प्रकृति; शिवजी की एक विशेष मूर्ति।

**लिंग देह**

सूक्ष्म शरीर जो स्थूल शरीर के नष्ट होने पर भी कर्मों के फल भोगने के लिए जीवात्मा के साथ लगा रहता है।

**लिंग पुराण**

अठारह पुराणों में से एक जिसमें शिवजी का माहात्म्य है।

**लिंग शरीर**

दे० 'सूक्ष्म शरीर' और 'लिंग देह'।

**लिंगायत**

दक्षिण का एक शैव सम्प्रदाय।

**लीलापुरुषोत्तम**

श्रीकृष्ण की उपाधि।

**लीलावती**

प्रसिद्ध ज्योतिर्विद भास्कराचार्य की पत्नी जिसने 'लीलावती' नामक गणित की पुस्तक की रचना की।

**लुंबिनी**

कपिलवस्तु के निकट गौतम बुद्ध का जन्म-स्थान।

**लैंगिक**

वैशेषिक दर्शन के अनुसार वह ज्ञान जो लिंग या स्वरूप के वर्णन द्वारा प्राप्त हो।

**लोक**

स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल—इन तीन लोकों (दे० 'त्रिलोक') के अतिरिक्त लोकों की १४ विशेष संख्या मानी जाती है।

ऊर्ध्व लोक (७) :—भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनर्लोक, तपर्लोक और सत्यलोक।

अधःलोक (७) :—अतल, वितल, सुतल, रसातल, महातल, तलातल और पाताल।

(नीचे के लोकों के ये नाम भी मिलते हैं—अतल, नितल, वितल, गभस्तिमान्, तल, सुतल और पाताल।)

लोक छह भी माने गए हैं :—भू, अन्तरिक्ष, स्वर्ग, पितृ, सूर्य और ब्रह्मलोक।

अथवा—

सात स्वर्ग :—भू, भुवः, स्वः, महः, जन, तप, सत्य।

सात पाताल :—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल, पाताल।

भूर्लोक (पृथ्वी), भुवर्लोक में ऋषि, मुनि, सिद्ध आदि लोग रहते हैं और यह सूर्य और पृथ्वी के बीच में स्थित है और जिसे अन्तरिक्ष भी कहते हैं, स्वर्लोक में इन्द्रादि देवताओं का निवास है और जो सूर्य और ध्रुवतारे के मध्य है, महर्लोक में भृगु आदि ऋषि रहते हैं जो ब्रह्मा के जीने तक जीवित रहते हैं, किन्तु प्रलय की लपटें पहुँचने पर वे जनलोक में चले जाते हैं, जनलोक जिसमें ब्रह्मा के पुत्र सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार रहते हैं, तपोलोक में तपस्वी रहते हैं, सत्यलोक या ब्रह्मलोक। पहले तीन लोक ब्रह्मा के दिन के अन्त में नष्ट हो जाते हैं अर्थात् प्रत्येक कल्प के बाद नष्ट हो जाते हैं और पिछले तीन लोक ब्रह्मा के जीने तक अर्थात् १०० वर्ष तक रहते हैं और महर्लोक भी उसी समय तक रहता है। प्रलय के समय नीचे के तीन लोक जलते हैं जिसके कारण कोई प्राणी जीवित नहीं रहता।

१४ लोकों में ७ ऊपर लिखे लोक हैं और सात पाताल हैं। (दे० 'पाताल')।

## लोक

विराट पुरुष का सिर सत्यलोक, ललाट तपोलोक, मुख जनलोक, कण्ठ महर्लोक, वक्ष स्वर्लोक, नाभि भुवर्लोक, कमर भूर्लोक, जाँघ का ऊपरी भाग अतल, अधोभाग वितल, जानु सुतल, टांग तलातल, एड़ी महातल, पाद का ऊपरी भाग रसातल और निचला भाग पाताल माना जाता है।

## लोकसाक्षी

१४ लोकसाक्षी हैं :—

सूर्य, चन्द्र, अग्नि, जल, हृदय, काल, दिन, रात, प्रातः, संध्या, धर्म, वायु, आकाश, भूमि।

लोकायत

चार्वाक-दर्शन जिसमें इस लोक के अतिरिक्त कोई दूसरा लोक नहीं माना जाता।

लोपा या लोपामुद्रा

विदर्भ के राजा की कन्या और महर्षि अगस्त्य की पत्नी का नाम; एक तारा जिसका उदय अगस्त्य-मंडल के पास होता है।

लोमपाद

राजा दशरथ के मित्र और अंग देश के राजा।

लोमश

अमर माने जाने वाले एक ऋषि।

लोलार्क

काशी का एक प्रसिद्ध तीर्थ।

लोहित्य या लौहित्य

लाल समुद्र का नाम; ब्रह्मपुत्र नदी।

## व

वंकमाली

सुषुम्ना नाड़ी।

वंशीधर

श्रीकृष्ण

वंशीवट

बरगद का वह वृक्ष जिसके नीचे खड़े होकर श्रीकृष्ण वृन्दावन में वंशी बजाते थे।

वक

एक राक्षस जिसे श्रीकृष्ण ने मारा; एक राक्षस जिसे भीम ने मारा।

वकासुर

दे० 'वक'।

वगलामुखी

एक महाविद्या।

वज्र

दधीचि की हड्डियों से बना इन्द्र का आयुध जो भाले के फलक के समान होता है।

वज्रनाभ

श्रीकृष्ण का चक्र।

वज्रपाणि

इन्द्र की उपाधि।

वज्रावर्त

एक मेघ का नाम।

वज्रासन

हठयोग का एक आसन

वज्रोली

हठयोग की एक मुद्रा।

वटसावित्री

एक व्रत जिसमें स्त्रियाँ वट का पूजन करती हैं। यह व्रत ज्येष्ठ में पड़ता है।

वन

बारह वन जो श्रीकृष्ण को अत्यन्त प्रिय थे :—

भद्रवन, श्रीवन, लोहवन, भाण्डीर वन, महावन, तालवन, बदरीवन, बकुलवन, कुमुदवन, काम्यवन, मधुवन, वृन्दावन।

ब्रज के बारह वनों के निम्नलिखित नाम भी मिलते हैं :—

मधुवन, तालवन, वृन्दावन, कुमुदवन, कामवन, कोटवन, चन्दनवन, लोहवन, महावन, खदिरवन, बेलवन, भाण्डीर।

वनमाली

श्रीकृष्ण का नाम।

वनमालिनी

द्वारकापुरी का नामान्तर।

वपुष्टमा

काशिराज की कन्या जो जनमेजय को ब्याही थी।

वररुचि

एक प्रसिद्ध वैयाकरण, पंडित और कवि।

वराह

१८ पुराणों में से एक पुराण; भगवान् विष्णु का तीसरा अवतार।

वराहमिहिर

ज्योतिष-विद्या के प्रसिद्ध आचार्य जिनकी 'वृहत्संहिता' बहुत प्रसिद्ध है।

**वरुण**

अदिति और कश्यप के पुत्र; मित्र देवता के साथ एक आदित्य का नाम; समुद्र के अधिष्ठाता देवता और पश्चिम दिशा के दिक्पाल। ये जल के अधिपति और दस्युओं के शासक माने जाते हैं।

**वरुणपाश**

वरुण का अस्त्र या फंदा।

**वर्ण**

वर्ण चार होते हैं :—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।

**वल्लभाचार्य**

पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक और शुद्धाद्वैत के पोषक आचार्य। ये महाप्रभु कहे जाते हैं।

**वसिष्ठ (या वशिष्ठ)**

प्राचीन ऋषि जो सूर्यवंशी राजाओं के गुरु थे। महाराज दशरथ के गुरु भी यही थे; वसिष्ठ नाम के एक स्मृतिकार भी थे; सप्तर्षि-मंडल का एक तारा।

**वसिष्ठ पुराण**

एक उपपुराण जो वास्तव में लिंग पुराण ही माना जाता है।

**वसु**

वैसे तो वसुओं के भिन्न-भिन्न नाम मिलते हैं, किन्तु धर्मदेव के आठ वसुओं के नाम सामान्य रूप से मिलते हैं :—

द्रोण, प्राण, ध्रुव, अर्क, अग्नि, द्वेष, वसु और विभावसु।

इनके अतिरिक्त ये नाम भी मिलते हैं :—

धर, ध्रुव, आप, अनिल, सावित्र, अनल, सोम, प्रत्यूष, विष्णु (सावित्र) और प्रभास (प्रभावन्त);

कुबेर, शिव और विष्णु की उपाधि। (दे० 'देवता' भी)

**वसुदेव**

श्रीकृष्ण के पिता। ये यदुकुल के शूर वंश के थे।

**वसुधारा**

जैनों की एक देवी; कुबेर की पुरी, अलका।

**वसुहंस**

वसुदेव के एक पुत्र का नाम।

**वागीश**

वृहस्पति; ब्रह्मा।

**वागीश्वरी**

सरस्वती ।

**वाग्भट्ट**

अष्टांगहृदय संहिता (वैद्यक ग्रंथ) के रचयिता; वैद्यक निघंटु के रचयिता; 'भावप्रकाश,' 'शास्त्रदर्पण' आदि के रचयिता ।

**वाचस्पति**

वृहस्पति का नाम ।

**वाजसनेय**

याज्ञवल्क्य ऋषि जिनके नाम से शुक्ल यजुर्वेद की वाजसनेयी संहिता प्रख्यात है ।

**वाणी**

वाणी चार हैं :—परा, पश्यंती, मध्यमा और वैखरी ।

**वात**

प्राण, उदान, समान, अपान और व्यान—ये पाँच प्रकार के वात (वायु) शरीर में माने जाते हैं ।

**वात्स्यायन**

कामसूत्र के प्रणेता ऋषि; न्यायसूत्र पर भाष्य के रचयिता ।

**वादरायण**

वेदव्यास का नाम ।

**वाद्य**

चार प्रकार के :—तत, वितत, घन, शिखर ।

**वामदेव**

गौतम गोत्रीय ऋषि जो ऋग्वेद के चौथे मण्डल के अधिकांश सूत्रों के रचयिता थे; महाराज दशरथ के एक मंत्री; शिव ।

**वामन**

विष्णु का पाँचवाँ अवतार; अठारह पुराणों में से एक; काशिकावृत्ति के रचयिता ।

**वायु**

प्राण (मुख्य द्वार शिर, छाती और कण्ठ के बीच निवास और बुद्धि, हृदय तथा चित्त को धारण करती है), उदान (मुख्य स्थान छाती, नासिका, नाभि और कण्ठ में विचरण, भोजन प्रवेश करना, छींक, डकार और जँभाई लेना मुख्य कर्म हैं), व्यान (हृदय में निवास और सारे शरीर में व्याप्त रहती है और अपक्षेपण, उत्क्षेपण,

निमेष, उन्मेष आदि इसके कर्म हैं), समान (मुख्य स्थान नाभि, विचरण स्थान कोष्ठ और अन्न ग्रहण करना, पकाना, विरेचन करना और त्यागना इसके मुख्य कर्म हैं), अपान (मुख्य स्थान गुदा, विचरण स्थान कटि, वस्ति, लिंग और जाँघ हैं। मल, मूत्र, वीर्य, आर्तव और गर्भ आदि निकालना इसके मुख्य कर्म हैं); १८ पुराणों में से एक पुराण। दे० 'पवन' और 'मरुत' भी।

वार्ष्णेय

वृष्णिवंशीय श्रीकृष्ण का एक नाम; राजा नल का सारथी।

वाल्मीकि

आदि कवि जिन्होंने 'रामायण' की रचना की। ये भृगुवंशी मुनि कहे जाते हैं। वैसे यह बताया जाता है कि प्रारंभ में ये डाकू थे।

वासवी

व्यास की माता का नाम।

वासुकि

कश्यप-पुत्र और नागराज। आठ नागों में से ये दूसरे माने जाते हैं।

वासुदेव

श्रीकृष्ण का एक नाम।

वाहिनी

सेना की एक टुकड़ी जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घुड़सवार और ४०५ पैदल होते थे।

वाह्लीक

गांधार के पास का भूमि-भाग।

विंध्यवासिनी

मिर्जापुर जिले में प्रसिद्ध देवी।

विकार

छह प्रकार के :—

उत्पत्ति, शरीरवृद्धि, बालपन, प्रौढ़ता, वृद्धावस्था, मृत्यु।

विक्रमादित्य

उज्जयिनी के प्रसिद्ध एवं प्रतापी शासक जिनके संबंध में अनेक किंवदंतियाँ प्रसिद्ध हैं। इन्हीं ने विक्रम संवत् चलाया।

विघ्न

अतिवृष्टि, अनावृष्टि, चूहा, टिड्डी, पक्षी, बाह्य आक्रमण, राजा और प्रजा का संघर्ष।

**विघ्ननाशक या विघ्नविनायक**

गणेश जी का नाम।

**विचित्रवीर्य**

चंद्रवंशी राजा शान्तनु के पुत्र।

**विजय दशमी**

आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी जिस दिन राम की रावण पर विजय हुई।

**विज्ञानमय कोष**

ज्ञानेन्द्रियों और बुद्धि का समूह ।

**विज्ञानवाद**

ब्रह्म और आत्मा की एकता प्रतिपादित करनेवाला सिद्धान्त; आधुनिक विज्ञान का आश्रय ग्रहण करनेवाला सिद्धान्त।

**वितद्रु**

झेलम नदी का प्राचीन नाम ।

**विदर्भराज**

दमयंती के पिता राजा भीष्म या भीष्मक ।

**विदिशा**

वर्तमान भेलसा नगर; मालवा की एक नदी।

**विदुर**

धृतराष्ट्र और पाण्डु के छोटे भाई। ये धृतराष्ट्र के मंत्री और राजनीति तथा धर्मनीति में अत्यंत निपुण थे।

**विद्या**

चौदह मानी गई हैं :—

ब्रह्मज्ञान, रसज्ञान, कर्मकाण्ड, संगीत, व्याकरण, ज्योतिष, धनुर्विद्या, जलतरण, न्याय, कोक, अश्वारोहण, नाट्य (अभिनय), कृषि, वैद्यक।

अथवा—

चौदह विद्याओं के निम्नलिखित नाम भी मिलते हैं :—

ब्रह्मज्ञान, रसायन, वैद्यक, ज्योतिष, व्याकरण, धनुर्विद्या, कोक, जलतरण, नाड़ीज्ञान, वाहनफेरन, नटनृत्य, द्यूत (जूआ), तस्करी, स्वरज्ञान।

अथवा—

४ वेद, ६ वेदांग=१०, ११. पुराण, १२. मीमांसा, १३. न्याय, १४. धर्मशास्त्र।

अथवा—
चार वेद, छह वेदांग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद, ज्योतिष)
और मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र, पुराण :—
'षडंगमिश्रिता वेदा धर्मशास्त्रं पुराणकं।
मीमांसा तर्कमपि च एता विद्यारचतुर्दश ॥'
विद्या १८ प्रकार की भी मानी गई हैं :—
अंगानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तर:
धर्मशास्त्रं पुराणं च विद्या ह्येताश्चतुर्दश।
आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्वश्चेति ते त्रयः।
अर्थशास्त्र चतुर्थं तु विद्या ह्यष्टा दशैव तु।
(दे० 'कला' भी)

**विद्या**

चार विद्याएँ मानी जाती हैं :—
धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, आयुर्वेद और स्थापत्य। दे० 'उपवेद'
कहीं-कहीं पर इन चारों विद्याओं और उपर्युक्त में से कुछ मिलाकर १८ विद्याओं का उल्लेख एक साथ मिलता है :—
शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छन्द, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, अर्थशास्त्र।

**विद्या**

ये दो प्रकार की मानी गई हैं :—परा और अपरा।
किन्तु कुछ लोगों ने चार प्रकार की भी मानी है :—
'आन्वीक्षकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्च शाश्वती।'

**विद्याधर**

खेचर, गन्धर्व, किन्नर आदि की देवयोनि।

**विद्याधरी**

विद्याधर की पत्नी।

**विधिरानी**

ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती।

**विधुंतुद**

राहु का नाम।

**विनता**

दक्ष प्रजापति की कन्या और कश्यप की पत्नी और गरुड़ तथा अरुण की जननी।

विनायक

गणेश जी का नाम ।

विपिनविहारी

श्रीकृष्ण का नाम ।

विमांडक

मुनि ऋष्यश्रृंग के पिता ।

विभीषण

लंका के राजा रावण का छोटा भाई जो लंका पर आक्रमण होने के समय श्री राम की शरण में आया ।

विरह की दशाएँ

चिन्ता, अभिलाषा, जागरण, उद्वेग, मलिनांगता, प्रलाप, व्याधि, उन्माद, मोह, मूर्च्छा, मृत्यु ।

विराट

मत्स्य देश के राजा जिनके यहाँ अज्ञातवास के समय पाण्डव रहे थे ।

विराध

एक राक्षस जिसे दण्डकारण्य में लक्ष्मण ने मारा ।

विरूपाक्ष

शिव; शिव का एक गण; रावण का एक सेनापति ।

विरोचन

प्रह्लाद के पुत्र और बलि के पिता ।

विल्वमंगल

कहा जाता है कि अंधा होने से पूर्व महाकवि सूरदास का यही नाम था । किन्तु यह विवादास्पद है ।

विवर्तवाद

वेदान्त का सिद्धान्त जिसके अनुसार ब्रह्म को सृष्टि का उत्पत्ति-स्थान और संसार को माया माना जाता है ।

विवस्वत्

सूर्य का सारथी, अरुण ।

विवाह

मनु के अनुसार ये आठ प्रकार के माने गए हैं :—

१. ब्राह्म, २. दैव, ३. आर्ष, ४. प्राजापत्य, ५. गांधर्व, ६. आसुर, ७. राक्षस, ८. पैशाच ।

वैसे केवल चार प्रकार के विवाहों का उल्लेख भी मिलता है :—
प्राजापत्य, आर्ष, गान्धर्व और राक्षस ।

विशाख

एक देवता जिसका जन्म कार्तिकेय के वज्र चलाने से हुआ ।

विशाखा

सत्ताईस नक्षत्रों में से सोलहवाँ नक्षत्र जिसे राधा भी कहते हैं ।

विशिष्टाद्वैत

रामानुजाचार्य का चलाया हुआ दार्शनिक सिद्धान्त जिसके अनुसार जीव और जगत् ब्रह्म से भिन्न होते हुए भी अभिन्न हैं ।

विश्वकर्मा

शिल्पशास्त्र के अधिष्ठाता देवता ।

विश्वश्रवा

एक मुनि जो कुबेर, रावण आदि के पिता थे ।

विश्वामित्र

एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि जो गाधिज, गाधेय और कौशिक भी कहलाते हैं । ये अत्यन्त क्रोधी प्रसिद्ध थे ।

विश्वावसु

एक गन्धर्व ।

विश्वेदेव

दस हैं :—
क्रतु, दक्ष, वसु, सत्य, काम, काल, ध्वनि, रोचक, आद्रव, पुरूरवा (वह्निपुराण—गणभेद नामाध्याय । दे० 'देवता' भी)

विष

दो प्रकार का होता है :—१. स्थावर विष जो खान से या वृक्षादि से या किसी धातु से या कंद से उत्पन्न होता है और २. जंगम विष जो जीव-जन्तुओं के मुख में रहता है (साँप, चूहा, कुत्ता, बिच्छू, शृगाल आदि) । संखिया और बच्छनाग भी विष हैं । (दे० 'उपविष')

विषमबाण

कामदेव का नाम ।

विषय

भोक्ता जीव के भोग-रूप सुख के लिए तन्मात्राओं के शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध—ये पाँच विषय हो जाते हैं ।

## विष्णु

क्षीर सागर में शयन करने वाले और दुष्टों का दलन तथा संतों की रक्षा करने वाले भगवान् विष्णु समय-समय पर अवतार लेते हैं। पूर्णावतार श्री राम और श्री कृष्ण। मुख्य अवतार मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, राम, कृष्ण, कल्कि आदि हैं। अंशावतार नरनारायण ऋषि, कपिल, वासुदेव, यज्ञ, दत्तात्रेय, ऋषभदेव, पृथु, धन्वन्तरि आदि। विष्णु भगवान् के हजार नाम हैं जो 'विष्णुसहस्रनाम' से प्रचलित हैं। उनके चार हाथों में पांचजन्य शंख, सुदर्शन चक्र, कौमोदकी गदा और पद्म शोभा पाता है। वे श्रीवत्स (छाती का चिह्न), कौस्तुभ मणि, वैजयन्ती माला, तुलसी माला, रत्नजटित किरीट, त्रिपुण्ड, मकराकृति कुण्डल, रत्नजटित स्वर्ण कांची, अंगद, केयूर, पीताम्बर धारण किए रहते हैं। उनका धनुष शार्ङ्ग है, खड्ग का का नाम नन्दक है। श्री लक्ष्मी जी ने कई बार दक्षिणा, अर्चि, सीता, रुक्मिणी आदि के रूप में अवतार लिया है। विष्णु त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) में से एक और संसार का पोषण करने वाले हैं। ये परब्रह्म का ही एक रूप और सृष्टि के सर्वेसर्वा हैं। एक पुराण इनके नाम से 'विष्णु पुराण' कहा जाता है। विष्णु के सारथी का नाम दारुक और मन्त्री का उद्धव है।

## विष्णुगुप्त

प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ कौटिल्य का वास्तविक नाम; विष्णुगुप्त नाम के एक वैयाकरण भी हुए हैं।

## विष्वंच्

एक मनु का नाम जो मत्स्य पुराण के अनुसार तेरहवें और विष्णु पुराण के अनुसार चौदहवें हैं।

## वीरभद्र

शिव के एक गण जो स्वयं उनके पुत्र और अवतार माने जाते हैं; अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा।

## वीरशैव

शैवों का एक भेद।

## वृकोदर

भीमसेन की उपाधि।

## वृक्ष

स्वर्ग के पाँच वृक्ष ये हैं :—

पंचैते देवतरयो मंदारः पारिजातकः ।
सन्तानः कल्पवृक्षश्च पुंसि वा हरिचन्दनं ।।

## वृत्रासुर

त्वष्टा का पुत्र एक असुर जो इन्द्र के हाथ से मारा गया। इसे मारने के लिए दधीचि ऋषि की हड्डियों से वज्र बनाया गया था।

## वृषभानु

राधा के पिता जो नारायण के अंश से उत्पन्न माने जाते हैं।

## वृषासुर

दे० 'भस्मासुर'।

## वृषोत्सर्ग

एक धार्मिक कर्म जिसमें लोग मृत पिता के नाम पर सांड को दाग़ कर छोड़ देते हैं।

## वृष्णि

श्रीकृष्ण के पूर्वज; श्रीकृष्ण का एक नाम, साथ ही इन्द्र और अग्नि का नाम।

## वृहत्त्रयी (संस्कृत में)

माघ कृत 'शिशुपाल वध', भारवि कृत 'किरातार्जुनीय', श्री हर्ष कृत 'नैषधीयचरित'।

## वृहस्पति

देवताओं के गुरु।

## वृहन्नला

अर्जुन का वह नाम जो उन्होंने पाण्डवों के अज्ञातवास के समय स्त्री-वेश धारण कर रखा था।

## वेंकटगिरि

दक्षिण भारत का एक पर्वत।

## वेणु

सूर्यवंशी राजा पृथु के पिता; मनु के अनुसार एक प्राचीन वर्णसंकर जाति जो वैदेहक माता और अम्बष्ट पिता से उत्पन्न हुई थी। ये मानव-संस्कृति के संस्थापक माने जाते हैं।

**वेत्रासुर**

एक प्रसिद्ध असुर जो प्राग्ज्योतिषपुर का राजा था।

**वेद**

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद।

इन्हीं चार वेदों से निकले चार उपवेद हैं :—

१. ऋग्वेद से धन्वन्तरि द्वारा निकाला गया आयुर्वेद।

२. यजुर्वेद से विश्वामित्र द्वारा निकाला गया धनुर्वेद।

३. सामवेद से भरत मुनि द्वारा निकाला गया गान्धर्ववेद।

४. अथर्ववेद से विश्वकर्मा द्वारा निकाला गया स्थापत्य।

**वेदमाता**

गायत्री; दुर्गा; सावित्री; सरस्वती।

**वेदांग**

शिक्षा (अक्षरों का स्पष्ट उच्चारण सिखलाना), कल्प (यज्ञ आदि कर्मों की विधि), व्याकरण, निरुक्त (वेद के कठिन और गूढ़ शब्दों तथा वाक्यों का अर्थ), ज्योतिष, छंद।

**वेदांत**

आरण्यक और उपनिषद् आदि वेद के अंतिम भाग जिनमें ब्रह्मज्ञान है। छह दर्शनों में से एक।

**वेदांत सूत्र**

महर्षि बादरायण कृत सूत्र जो वेदांतशास्त्र के मूल माने जाते हैं।

**वैकुंठ**

भगवान् विष्णु का स्थान।

**वैखानस**

ब्रह्मचारी या तपस्वी जो वन में रहते थे।

**वैजयंत**

इन्द्र के महल का नाम।

**वैजयंती**

विष्णु भगवान् की माला।

**वैतरणी**

यमलोक की नदी जो अत्यन्त भयंकर मानी जाती है। यह नदी रुधिर, मज्जा आदि और भीषण जीव-जंतुओं से भरी रहती है।

**वैदेही**

राजा जनक की पुत्री सीता जी ।

**वैद्य**

चार प्रकार के होते हैं :—

रोगचिकित्सक, विषचिकित्सक, शल्यचिकित्सक, कृत्याहार ।

**वैनतेय**

विनता के पुत्र गरुड़ और अरुण ।

**वैशंपायन**

वेदव्यास के शिष्य एक ऋषि ।

**वैश्वदेव**

एक यज्ञ जो विश्वदेव के उद्देश्य से किया जाय ।

**वैश्वानर**

दे० 'जठराग्नि' ।

**व्यसन**

कामज और क्रोधज १८ प्रकार के व्यसन माने गए हैं :—

मृगया, द्यूत-क्रीड़ा, दिन में सोना, छिद्रान्वेषण, नारी के प्रति आसक्ति, नशेबाजी, वादन, गायन, नृत्य और व्यर्थ घूमना—ये दस कामज व्यसन हैं। चुगलखोरी, दुस्साहस, द्रोह, ईर्ष्या, असूया (द्वेष), दूसरे की चीज चुराना, कड़वा बोलना और ताड़ना देना—ये आठ क्रोधज व्यसन हैं ।

**व्याकरण**

ये नौ है :—

इन्द्र, चन्द्र, काशकृत्स्न, शकटायन, पिशालि, पाणिनि, अमर, जैनेन्द्र, सरस्वती ।

**व्यास**

पराशर के पुत्र कृष्णद्वैपायन जिन्होंने वेदों का संग्रह, विभाग और संपादन किया । ये अठारह पुराणों, महाभारत, भागवत और वेदांत आदि के रचयिता भी माने जाते हैं ।

**व्रज**

मथुरा और वृन्दावन के आसपास का भूमि-भाग ।

**व्रजराज**

श्रीकृष्ण का नाम ।

# श

**शंकर**

मंगल करने वाले भगवान् शिव।

**शंकराचार्य**

अद्वैत मत के प्रवर्तक शैव आचार्य जिनका आविर्भाव ईसा की ८वीं शताब्दी में केरल में हुआ। इन्होंने बत्तीस वर्ष की अवस्था में सारे भारत की यात्रा कर अनेक पीठ स्थापित किए और बौद्ध धर्म को उखाड़ फेंका।

**शंख**

एक दैत्य जिसे भगवान् विष्णु ने मारा था; राजा विराट का एक पुत्र; दे० 'नवनिधि'।

**शंखचूड़**

श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया एक राक्षस; कुबेर का एक सखा।

**शंखधर**

श्रीकृष्ण; विष्णु।

**शंखपाणि**

विष्णु।

**शंखासुर**

इसे मारने के लिए विष्णु ने मत्स्यावतार धारण किया, क्योंकि यह ब्रह्मा के पास से वेद चुरा कर समुद्र में जा छिपा था।

**शंबर**

एक दैत्य जिसका वध इंद्र ने किया था; एक प्रकार का प्राचीन शस्त्र।

**शंबरारि**

कामदेव; प्रद्युम्न।

**शंबूक**

एक शूद्र तपस्वी जिसका अनधिकार कर्म करने के कारण श्री राम ने वध कर डाला था। इसे मार कर श्रीराम ने एक ब्राह्मण-पुत्र को जीवित किया था।

**शंभु**

महादेव; ग्यारह रुद्रों में से एक; एक दैत्य का नाम।

शक

राजा शालिवाहन का चलाया हुआ संवत् जो ईसवी सन् से ७८ वर्ष बाद प्रारम्भ हुआ; एक प्राचीन जाति जिसकी उत्पत्ति सूर्यवंशी राजा नरिष्यंत से मानी जाती है। बाद में यह जाति म्लेच्छों में गिनी जाने लगी।

शकटासुर

एक असुर जिसे श्रीकृष्ण ने मारा।

शकाब्द

दे० 'शक'।

शकारि

राजा विक्रमादित्य की उपाधि।

शकुंतला

मेनका की कन्या, कण्व की पोष्य पुत्री, दुष्यन्त की पत्नी और भारत के प्रसिद्ध राजा भरत की माता। इनके आख्यान को लेकर रचा गया कालिदास कृत 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' एक प्रसिद्ध नाट्य-ग्रंथ है। यह आख्यान महाभारत में भी आया है। भरत के नाम पर ही हमारे देश का नाम भारतवर्ष पड़ा।

शकुनि

गान्धारराज सुबल का पुत्र जो धृतराष्ट्र की पत्नी गांधारी का भाई, अतएव कौरवों का मामा था। यह द्यूतक्रीड़ा में अत्यन्त कुशल था; एक दैत्य जो हिरण्याक्ष का पुत्र था।

शकुनी

पुराणानुसार पूतना का एक नाम। यह अत्यन्त भयंकर थी।

शक्र

इन्द्र का नामान्तर।

शची

इन्द्राणी।

शतघ्नी

प्राचीन काल का एक शस्त्र।

शतद्रु

सतलज नदी का प्राचीन नाम।

शतपथ

महर्षि याज्ञवल्क्य द्वारा रचित यजुर्वेद का एक प्रसिद्ध 'ब्राह्मण'।

शतभिषा

चौबीसवाँ नक्षत्र जिसमें सौ तारे हैं और जो मंडलाकार है।

शतरूपा

ब्रह्मा की मानसी पुत्री जिसके पुत्र स्वायंभुव मनु हुए।

शतानन्द

विष्णु के रथ का नाम; गौतम के पुत्र का नाम जो राजा जनक के पुरोहित थे; ब्रह्मा; विष्णु; कृष्ण।

शतानीक

जनमेजय के पुत्र और सहस्रानीक के पिता चन्द्रवंशी राजा।

शत्रुघ्न

सुमित्रा और राजा दशरथ के पुत्र और श्री राम के भाई।

शनि

सौर जगत् का सातवाँ ग्रह जो सूर्य से ८८३०००००० मील दूर है और जो २९ वर्ष, १६७ दिन में सूर्य की परिक्रमा लगाता है।

शब्दब्रह्म

वेद।

शमीक

एक ऋषि जिनके गले में राजा परीक्षित ने मरा हुआ साँप डाला था।

शरभंग

एक ऋषि जिनके दर्शन करने वनवास के समय श्री राम गए थे।

शरावती

श्री राम के पुत्र लव की राजधानी।

शरीर

शरीर के छह अंग :—
हृदय, शिर, शिखा, नेत्र, कवच, अस्त्र।
अथवा—
सिर, धड़, दो भुजाएँ और दो जंघाएँ।

शरीर के बन्धन

ये बहत्तर होते हैं :—
१६ कण्डराएँ, १६ जाल, ४ रज्जु, ७ सेवनी, १४ अस्थि संघात, १४ सीमन्त, १ त्वचा। इन सबसे शरीर बँधा रहता है।

शर्मिष्ठा

दैत्यराज वृषपर्वा की पुत्री जो देवयानी की सखी थी ।

शलातुर

पाणिनि का जन्म-स्थान जो आधुनिक अफगानिस्तान में था ।

शल्य

मद्र देश का एक राजा जो द्रौपदी-स्वयंवर के समय भीमसेन से हार गया था ।

शहद

पौत्तिक (पुत्तिका नाम की मक्खी से निकला हुआ), भ्रामर (भ्रमर से निकला हुआ), क्षौद्र (क्षुद्रा मक्खी से निकला हुआ), माक्षिक (मक्षिका नाम की मक्खी से निकला हुआ) ।

शांडिल्य

एक गोत्र के प्रवर्तक तथा भक्तिशास्त्र के प्रणेता एक ऋषि ।

शांतनु

एक चन्द्रवंशी राजा । ये द्वापर युग के इक्कीसवें चन्द्रवंशी राजा थे ।

शांतनु-सुत

भीष्म पितामह ।

शांता

महाराज दशरथ की पुत्री जो ऋष्यशृंग को ब्याही थी ।

शाकटायन

पाणिनि और यास्क से अधिक प्राचीन एक वैयाकरण ।

शाकद्वीप

दे० 'द्वीप' ।

शाकल प्रातिशाख्य

ऋग्वेद प्रातिशाख्य का नाम ।

शाकल शाखा

ऋग्वेद की वह परंपरा जो शाकलों में परम्परा से चली आती है ।

शाकल्य

पाणिनि द्वारा उल्लिखित एक वैयाकरण ।

शाक्यसिंह

भगवान् बुद्ध का एक नाम ।

शातवाहन

दे० 'शालिवाहन'।

शाबर भाष्य

मीमांसासूत्र पर एक प्रसिद्ध भाष्य।

शारंगपाणि

विष्णु; कृष्ण; राम।

शारदा

दुर्गा और सरस्वती का नाम।

शारदीय महापूजा

शरत्काल में होने वाली नवरात्रि की दुर्गा-पूजा।

शारीरिक भाष्य

शंकराचार्य का किया हुआ ब्रह्मसूत्र का भाष्य।

शालातुरीय

पाणिनि का नाम (शालातुर में जन्म लेने के कारण)।

शालिवाहन

शक संवत् चलाने वाला शक शासक।

शाल्मलि

दे० 'द्वीप'।

शाल्व

सौभ राज्य का एक राजा जिसे श्रीकृष्ण ने मारा।

शास्त्र

ये छह हैं :—सांख्य (कपिल मुनि), योग (पतंजलि), न्याय (गौतम), वैशेषिक (कणाद), पूर्वमीमांसा (जैमिनि), उत्तरमीमांसा (व्यास) या वेदान्त।
अथवा शास्त्र अठारह भी माने गए हैं :—
शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छंद (छह वेदांग), ४ वेद, मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गांधर्ववेद, अर्थशास्त्र। (दे० 'षड्दर्शन' भी)
कुछ अन्य विद्याओं के ग्रन्थ भी शास्त्र नाम से अभिहित किए जाते हैं, जैसे काव्यशास्त्र, शिल्पशास्त्र, अलंकारशास्त्र आदि।

शिखंडी

विष्णु का एक नाम; राजा द्रुपद का एक पुत्र।

### शिखंडि या शिखंडिनी

दे० 'अम्बा'। राजा द्रुपद की कन्या का नाम।

### शिलादित्य

हर्षवर्द्धन का एक नाम।

### शिव

सृष्टि के सन्दर्भ में त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु और महेश) में से एक। महादेव, शंकर आदि इनके अनेक नाम हैं। ये सृष्टि का संहार करने वाले देवता हैं। इनकी पुरी 'कैलास', जटाजूट 'कर्पद', धनुष 'पिनाक' या 'अजगव' और परिषद् 'प्रमथ' हैं।

### शिवपुराण

अठारह पुराणों में से एक जिसमें शिवजी का माहात्म्य बताया गया है।

### शिवरात्रि

फाल्गुन बदी चतुर्दशी जिस दिन व्रत रखा जाता है और शिवजी की पूजा होती है।

### शिवानी

शिव-पत्नी पार्वती।

### शिवि

राजा उशीनर के पुत्र तथा ययाति के दौहित्र का नाम। इन्होंने एक बाज़ (धर्म) और कबूतर (सत्य) की रक्षा करने के लिए अपने शरीर का मांस तराजू पर चढ़ा दिया था। इतने पर भी जब इनका मांस कबूतर के बराबर न हुआ तो ज्योंही ये अपना सिर काटने के लिए तैयार हुए धर्म बाज़ का रूप छोड़ कर प्रकट हुए और इन्हें वरदान दिया।

### शिशुपाल

चेदि देश का प्रसिद्ध राजा, कंस का पक्षपाती जिसे युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के समय श्रीकृष्ण ने सुदर्शन चक्र से मारा।

### शीतलाष्टमी

चैत्र कृष्ण पक्ष की अष्टमी।

### शुकदेव

कृष्णद्वैपायन के पुत्र जो संसार के माया-मोह से अलग पुराणों के वक्ता और ज्ञानी थे।

### शुक्राचार्य

असुरों-दानवों के गुरु।

### शुद्धोदन

महात्मा गौतम बुद्ध के पिता और शाक्य राजा।

### शुनःशेफ

महर्षि ऋचीक के पुत्र और वैदिक काल के एक ऋषि।

### शुनासीर

इन्द्र की उपाधि।

### शूकरक्षेत्र

नैमिषारण्य के पास एक तीर्थ।

### शूद्रक

विदिशा के राजा और 'मृच्छकटिक' के रचयिता।

### शूरसेन

श्रीकृष्ण के बाबा अर्थात् वसुदेव के पिता शूरसेन यदुवंश के हृदीक के चौथे पुत्र देवमीढ़ के पुत्र थे। इनकी पत्नी का नाम मारिषा था। इनके दस पुत्र थे :—वसुदेव, देवभाग, देवश्रवा, आनक, सृंजय, श्यामक, कंग, शमीक, वत्सक और वृक।

### शूर्पणखा

रावण की बहन जिसके नाक-कान लक्ष्मण ने काटे थे और जिसके फलस्वरूप सीता-हरण हुआ।

### शृंगवेरपुर

निषादराज गुह की राजधानी और आधुनिक सिगनौर या सिंगरौर जो प्रयाग से कुछ दूर गंगा के किनारे बसा हुआ है। राजा गुह श्री रामचन्द्र का समकालीन था।

### शृंगार

१६ प्रकार के शृंगार माने जाते हैं :—

स्नान, नासाभौक्तिक, असितपट, सूत्रिणी (नीवीबंधयुक्ता), वेणी-बंधन, कर्णावतंस, अंग चर्चित करना, पुष्पमाल धारण करना, हाथ में कमल लेना, बालों में फूल लगाना, तांबूल, चिबुक को कस्तूरी से चित्रित करना, काजल, मकरीपत्र-भंगादि से शरीर चित्रित करना, अलक्तक, तिलक।

इनके ये नाम भी मिलते हैं :—

शुचि, स्नान, निर्मलपट, महावर, वेणी-बन्धन, मांग-सिन्दूर, भालखौरि, तिलकपोल, केसरमर्दन, मेंहदीपग, कुसुमाभरण, हेमाभरण, लवंगादि आभरण, दाँतों में मिस्सी, ताम्बूल, आँखों में सुरमा।

अथवा :—

अंग शुची मज्जन वसन, मांग महावर केश ।
तिलक भाल तिल चिबुक में, भूषण मेंहदी वेश ।।
मिस्सी काजल अरगजा, बीरी और सुगन्ध ।
पुष्पकलीयुत होय कर, तब नवसप्त प्रबन्ध ।।

शरीर का मैल उतारना, स्नान, साफ कपड़े पहनना, काजल लगाना, आलता से हाथ-पैर रचनां, बाल सँवारना, सिंदूर से माँग भरना, लिलार पर केशर-चन्दन का तिलक लगाना, ठुड्डी पर तिल बनाना, मेंहदी लगाना, शरीर में इत्र आदि सुगन्धित पदार्थ लगाना, आभूषण धारण करना, पुष्पमाल धारण करना, पान खाना, दाँत रँगना, होंठों पर लाली लगाना ।

अथवा :—

शौच, उबटन, स्नान, केशबन्ध, अंगराग, अंजन, जावक, दन्तरञ्जन, ताम्बूल, वसन, भूषण, सुगन्ध, पुष्पहार, कुंकुम, भाल-तिलक, चिबुक-बिन्दु ।

**शृंगीगिरि**

वह पर्वत जहाँ शृंगी ऋषि ने तपस्या की थी ।

**शेषनाग**

सहस्र फन वाला नाग जिसके सिर पर पृथ्वी टिकी मानी गई है; लक्ष्मण; एक दिग्गज ।

**शेषशायी**

विष्णु की उपाधि ।

**शौनक**

शुनक के पुत्र एक प्राचीन वैदिक आचार्य जो कई ग्रन्थों के प्रणेता माने जाते हैं ।

**श्याम या श्यामसुंदर**

श्रीकृष्ण का एक नाम ।

**श्यामा**

राधा का एक नाम ।

**श्रवण**

वैश्य तपस्वी अंधक मुनि के पुत्र । ये अपनी मातृ-पितृभक्ति के लिए प्रसिद्ध हैं । जल भरते समय दशरथ के बाण से मृत्यु हो जाने के कारण इनके पिता ने ही दशरथ को शाप दिया था कि तुम्हारी पुत्र-शोक में मृत्यु हो ।

**श्रावक**

बौद्ध या जैन भिक्षुक ।

### श्रावणी

श्रावण मास की पूर्णमासी जिस दिन रक्षाबंधन का त्यौहार मनाया जाता है।

### श्रीकृष्ण

वसुदेव-देवकी के पुत्र और नंद-यशोदा के घर पालित-पोषित विष्णु के पूर्णावतार जिनके आख्यान घर-घर प्रसिद्ध हैं। इन्होंने दुष्टों का संहार किया, तत्कालीन राजनीति में भाग लिया और कुरुक्षेत्र के मैदान में मोहग्रस्त अर्जुन को गीता का उपदेश दिया।

### श्रीकृष्ण के रथ के घोड़े

सुग्रीव, मेघपुष्प, वलाहक, शैव्य।

### श्रीवत्स

विष्णु के वक्षस्थल पर वह चिह्न जो भृगु के चरण-प्रहार से बन गया था।

### श्रुतकीर्ति

राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या जो शत्रुघ्न को ब्याही थी।

### श्रेष्ठ

सब आशीर्वादों में पुत्र श्रेष्ठ, देवताओं में मधुसूदन श्रेष्ठ, नदियों में गंगा श्रेष्ठ, सब सृष्टि करने वालों में ब्रह्मा श्रेष्ठ, अमृत-श्राव होने से सब नक्षत्रों में चन्द्रमा श्रेष्ठ, हाथियों में ऐरावत श्रेष्ठ, धारण-पोषण करने वालों में पृथ्वी श्रेष्ठ, समुद्रों में क्षीर समुद्र श्रेष्ठ, महौषधियों में चीत श्रेष्ठ, पर्वतों में हिमवान श्रेष्ठ, सब लोकों में वैकुण्ठ श्रेष्ठ, सब वृक्षों में कल्पवृक्ष श्रेष्ठ।

### श्रौतसूत्र

वैदिक यज्ञों का विधान करने वाले सूत्र अथवा कल्पग्रन्थ का वह अंश जिसमें पौर्णमास्येष्टि से लेकर अश्वमेध यज्ञों तक का विधान बताया गया है।

### श्वफल्क

यादव वृष्णि के पुत्र और अक्रूर के पिता।

### श्वेतकेतु

महर्षि उद्दालक के पुत्र का नाम; बोधिसत्व के रूप में भगवान् बुद्ध।

### श्वेतगज

ऐरावत हाथी का नाम।

श्वेतद्वीप

द्वीप जहाँ विष्णु भगवान् का निवास है।

श्वेतवाराह

वाराह की एक मूर्ति; एक कल्प का नाम जो ब्रह्मा के मास का प्रथम दिन माना गया है।

श्वेतांबर

जैनों का एक संप्रदाय जिसमें श्वेत वस्त्र धारण किए जाते हैं। दूसरा संप्रदाय दिगंबर है जिसके अनुयायी नंगे रहते हैं।

श्वेता

अग्नि की सात जीभों में से एक; श्वेत या शंख नामक हाथी की माता।

श्वेताश्वतर

कृष्ण यजुर्वेद की शाखा के अन्तर्गत एक उपनिषद्।

## ष

षंडामर्क

शुक्राचार्य के पुत्र का नाम।

षट् आश्रम

ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास, हंस, परमहंस।

षट्ऊर्म्मि

बुभुक्षा च पिपासा च प्राणस्य मनसः स्मृतौ।
शोकमोहौ शरीरस्य जरामृत्यु षडूर्म्मयः॥
(भूख, प्यास, मन की स्मृति में शोक व मोह, जरा, मृत्यु)

षट्ऋतु

ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर, वसन्त।

षट्कर्म

सामान्य लोगों के षट्कर्म हैं :—
स्नान, संध्या, पूजा, तर्पण, जप, होम।
योगियों के षट्कर्म हैं :—
धौती, नेती, वस्ति, न्योली, त्राटक, कपालभाति।
ब्राह्मण के षट्कर्म हैं :—
यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान, प्रतिग्रह।

(यज्ञ करना, यज्ञ कराना, वेदाध्ययन, दूसरों को वेद पढ़ाना, दान देना, दान लेना)

आपत्काल में ब्राह्मण के षट्कर्म हैं :—

उंछवृत्ति, दान लेना, याचना करना, कृषि, वाणिज्य, गोरक्षा ।

**षट्गुण**

निर्भेद, निर्मात्सर्य, निर्मोह, निर्लोभ, निष्क्रोध, निष्काम ।

**षट्चक्र**

मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा (प्रज्ञा) । ये चक्र कुंडलिनी (नाभिस्थित) से ऊपर हैं ।

**षट्रस**

मधुर, अम्ल (खट्टा), तिक्त (तीता), कषाय (कसैला), लवण, कटु (कड़वा) । ये रस-भेद से भोजन के प्रकार हैं । (दे० 'भोजन')

**षट्राग**

संगीत के छह राग :—

भैरव, मलार, श्री राग (कुछ लोगों ने मेघ माना है), हिंडोल, मालकोस और दीपक ।

अथवा :—

श्री राग, बसंत राग, पंचम राग, भैरव राग, मेघ राग, नर-नारायण राग । छह रागों की छत्तीस रागिनियाँ होती हैं । (दे० 'राग-रागिनियाँ') ।

**षडंग**

वेद के छह अंग :—

शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष ।

शरीर के छह अंग :—

हाथ, पाँव, कटि, सिर, लिंग, गुदा ।

**षड्दर्शन**

सांख्य, योग (पातंजल), न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त । इन्हें 'षट्शास्त्र' भी कहते हैं ।

**षड्प्रयोग**

स्तम्भन, विद्वेषटन, उच्चाटन, उत्सादन, मारण, व्याधि ।

अथवा—

शान्ति, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन, मारण ।

**षड्रिपु**

काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर—मनुष्य के ये छह रिपु ।

### षड्वर्ग

काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर ।

### षडध्वाक्

सौर, शाक्त, गाणपत्य, शैव, वैष्णव, बौद्ध; वर्ण, पद, मन्त्र, कला, तत्व, भुवन ।

### षडानन

कार्तिकेय का एक नाम ।

### षोडश कला

चन्द्रमा की सोलह कलाएँ :—

अमृता मानदा पूषा तुष्टिः पुष्टीरतिर्धृतिः ।
शशिनी चन्द्रिका कान्तिर्ज्योत्स्ना श्रीः प्रीतिरेव च ।।
अंगदा च पूर्णामृता षोडश वै कलाः । (दे० 'चंद्रकला' भी)

### षोडश दान

धरती, आसन, पानी, कपड़ा, दीपक (या दीपक के लिए तेल), अनाज, पान, छत्र, सुगंधित पदार्थ, पुष्पमाल, फल, शय्या, खड़ाऊँ, गाय, स्वर्ण, रूपा या चाँदी ।

### षोडश मातृका

१६ प्रकार की देवियाँ :—

गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, शान्ति, पुष्टि, धृति, तुष्टि, मातरः, आत्मदेवता ।

### षोडश संस्कार

गर्भाधान से लेकर मृतक-कर्म तक के संस्कार :—

१. गर्भाधान २. पुंसवन, ३. सीमन्त, ४. जातकर्म, ५. नामकरण, ६. निष्क्रमण, ७. अन्नप्राशन, ८ चूड़ाकर्म या मुण्डन, ९. कर्णवेध, १०. उपनयन या यज्ञोपवीत, ११. वेदारंभ, १२. समावर्तन या ब्रह्मचर्य, १३. विवाह, १४. गृहस्थाश्रम, १५. द्विरागमन, १६. वानप्रस्थ। (इन १६ प्रधान संस्कारों के अतिरिक्त कुछ लोगों ने महावाक्य-परिसमाप्ति, संन्यासविधि, सर्वसंस्कार होमविधि और मृतक-कर्म का भी उल्लेख किया है) । (दे० 'संस्कार')

### षोडशोपचार या षोडषविध पूजा

पूजन के १६ अंग :—

आवाहन, आसन, अर्घ्यपाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गन्ध (चन्दन), पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, परिक्रमा, वन्दना । (दे० 'पूजा' भी)

# स

## संकर्षण

बलराम का नाम; एक वैष्णव संप्रदाय।

## संचार भावी

ये ३३ माने गए हैं :—

निर्वेद, ग्लानि, शंका, श्रम, धृति, जड़ता, हर्ष, दैन्य, उग्रता, चिन्ता, त्रास, असूया, अमर्ष, गर्व, स्मृति, मरण, मद, स्वप्न, निद्रा, विबोध, व्रीड़ा, अपस्मार, मोह, मति, अलसता, आवेग, तर्क, अवहित्थ, व्याधि, उन्माद, विषाद, औत्सुक्य, चपलता।

## संजय

धृतराष्ट्र का सारथी। महाभारत के युद्ध के समय ये धृतराष्ट्र को सारा विवरण सुनाते थे।

## संजीवनी या संजीवनी विद्या

एक प्रकार की कल्पित ओषधि जिससे मरा हुआ व्यक्ति फिर से जीवित हो जाता है। इसी ओषधि को हनुमान जी लक्ष्मण जी के लिए राम-रावण-युद्ध के समय लाए थे।

## संज्ञा

सूर्य की पत्नी और विश्वकर्मा की पुत्री। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार यम और यमुना का जन्म संज्ञा के गर्भ से हुआ।

## संतापन

कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

## संदीपन

श्रीकृष्ण के गुरु का नाम; कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

## संन्यासी

स्मृतिकारों ने चार प्रकार के संन्यासी माने हैं :—

कुटीचक, बहुदक, हंस और परमहंस। परमहंस सर्वश्रेष्ठ संन्यासी माना जाता है। (दे० 'दशनाम' भी)

## संपाति

गरुड़ का ज्येष्ठ पुत्र और जटायु का भाई गिद्ध; माली नामक राक्षस का पुत्र (दे० 'अरुण')।

## संबर

प्रद्युम्न द्वारा मारा गया एक दैत्य; एक पर्वत का नाम।

**संमोहन**

कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

**संयमनी**

यमराज की नगरी का नाम।

**संवत्**

महाराज विक्रमादित्य द्वारा चलाई गई वर्षगणना।

**संवत्सर**

काल-रूप भगवान् विष्णु; विक्रमादित्य द्वारा स्थापित वर्ष-क्रम।

**संस्कार**

द्विजातियों के सोलह संस्कार माने गए हैं :—
गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोनयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म (मुण्डन), कर्णवेध, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह, वानप्रस्थ, संन्यास, और अन्त्येष्टि। कहीं-कहीं पर 'विवाह' के अतिरिक्त 'गृहस्थाश्रम' का उल्लेख मिलता है, 'अन्त्येष्टि' का नहीं।

**संहात**

२१ नरकों में से एक।

**संहिता**

जिस ग्रंथ में पद, पाठ आदि का क्रम नियमानुसार चला आता हो। ये चार प्रकार की मानी गई हैं :—
ब्राह्मी, भागवती, वैष्णवी, सौरि।

**सगर**

एक चंद्रवंशी राजा। ये अत्यन्त धर्मात्मा थे। शाप द्वारा नष्ट इन्हीं के साठ हज़ार पुत्रों को तारने के लिए भगीरथ गंगा को पृथ्वीतल पर लाए थे।

**सतानंद**

गौतम ऋषि के पुत्र जो राजा जनक के पुरोहित थे।

**सती**

दक्ष प्रजापति की कन्या जिसका विवाह शिवजी के साथ हुआ था। दक्ष द्वारा एक बार यज्ञ किए जाने पर और शिवजी को न बुलाए जाने पर सती ने यज्ञ की अग्नि में अपने को भस्म कर डाला था।

सत्य

ऊपर के सात लोकों में से सबसे ऊँचा लोक जहाँ ब्रह्मा का निवास है; नान्दीमुख श्राद्ध का अधिष्ठाता देवता; राम और विष्णु का नाम ।

सत्यनारायण

विष्णु भगवान् ।

सत्यभामा

श्रीकृष्ण की आठ पटरानियों में से एक ।

सत्ययुग

चारों युगों में से पहला ।

सत्यवती

एक मछुहारे की पुत्री और कृष्णद्वैपायन या वेदव्यास की माता । इसका नाम 'सत्या' भी है । 'सत्या' दुर्गादेवी, द्रौपदी और सत्यभामा का नाम भी है; गाधि की पुत्री और ऋचीक की पत्नी ।

सत्यवान्

साल्व देश के राजा द्युमत्सेन का पुत्र जिसकी पत्नी सावित्री के पातिव्रत की कथा प्रसिद्ध है ।

सत्यसंध

श्रीराम; जनमेजय ।

सनक, सनन्दन, सनत्कुमार

ब्रह्मा के मानस-पुत्र ।

सनातन पुरुष

ब्रह्मा, विष्णु और शिव का नामान्तर ।

सनातनी

लक्ष्मी, दुर्गा, पार्वती और सरस्वती का नामान्तर ।

सप्ततीर्थ

दे० 'सप्तपुरी' ।

सप्तद्वीप

पुराणों में पृथ्वी के सात बड़े और मुख्य भाग बताए गए हैं । उनके नाम है :—जम्बू, कुश, प्लक्ष, शाल्मलि, क्रौंच, शाक और पुष्कर द्वीप ।

सप्तधातु

दे० 'धातु' ।

सप्तपाताल

अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल ।

### सप्तपुरी

अयोध्या, मथुरा, माया या हरिद्वार, काशी, कांची, अवंतिका (उज्जयिनी) और द्वारका।

### सप्तमाता

दे० 'देवी'।

### सप्तर्षि

महाभारत के अनुसार मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वसिष्ठ; आकाश में सात तारों का समूह जो उत्तर दिशा में है और ध्रुव तारे के चारों ओर घूमता हुआ दिखाई देता है।
'शतपथ ब्राह्मण' के अनुसार सप्तर्षि हैं :—गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप और अत्रि। इनके अतिरिक्त ऊर्ज, प्राण, वृहस्पति, अत्रि, दत्तात्रेय, स्तम्भ और च्यवन नाम भी मिलते हैं।

### सप्तसागर

क्षार (नमक का), क्षीर (दूध का), इक्षु (ऊख के रस का), दधि (दही का), मधु (शहद का), मदिरा (शराब का), घृत (घी का)। (दे० 'सिन्धु' भी)

### सप्तस्वर

संगीत के सात स्वर हैं :—
षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद। (इन्हें ही सरगम कहते हैं :—स, र, ग, म, प, ध, नी)

### सभा

सभा के सात अंग होते हैं :—
विद्वान्, कवि, भट्ट, गायक, परिहासक, इतिहासज्ञ और पुराणज्ञ।

### समाधि

समाधि के ६ अंग :—
शम, दम, उपराम, विषय, सुख, दुःख (समान)।

### समन्तपंचक

कुरुक्षेत्र के निकट एक स्थान विशेष।

### समुद्र

क्षीरोद (दूध), इक्षुरसोद (ऊख का रस), सुरोद (सुरा), घृतोद (घृत), क्षारोद (खारा पानी), दधिमण्डोद (दधि), शुद्धोद (मीठा जल)।

## समुद्र-मंथन

महर्षि दुर्वासा के शाप से जब इन्द्रादि देवताओं का ऐश्वर्य नष्ट हो गया तो भगवान् विष्णु के परामर्श से और असुरों से मिलकर सबने समुद्र का मन्थन किया। इसके लिए मन्दराचल को क्षेत्र बनाया गया और वासुकि नाग को रस्सी। जब मन्दराचल समुद्र में डूबने लगा तब भगवान् ने कच्छपावतार धारण कर उसे अपनी पीठ पर टिकाया। समुद्र-मंथन के समय हलाहल, विष, अमृत, उच्चैःश्रवा, ऐरावत, कौस्तुभ, लक्ष्मी, अप्सराएँ, चन्द्रमा, कामधेनु, वारुणी आदि वस्तुएँ प्राप्त हुईं।

## सरमा

विभीषण की पत्नी; दक्ष की कन्या; देवताओं की कुतिया।

## सरयू

नदी जिसके तट पर अयोध्या बसी हुई है।

## सरवन

दे० 'श्रवण'।

## सरस्वती

विद्या की अधिष्ठात्री देवी; एक नदी; बौद्धों की एक देवी।

## सरस्वती-पूजा

आश्विन में या कहीं वसंतपंचमी के दिन मनाया जानेवाला सरस्वती का उत्सव।

## सर्प

पुराणों में आठ प्रधान सर्पों के नाम मिलते हैं :—
अनन्त, वासुकि, तक्षक, कर्कोटक, शंख, कुलिक, पद्मक, महापद्मक।

## सर्पयज्ञ

यज्ञ जिसे नागों का संहार करने के लिए परीक्षित के पुत्र जनमेजय ने किया था।

## सर्वमंगला

पार्वती, दुर्गा, लक्ष्मी का एक नाम।

## सवितापुत्र

सूर्य का पुत्र हिरण्यपाणि।

## सवितासुत

शनि।

सव्यसाची

अर्जुन की उपाधि ।

'उभौ मे दक्षिणौ पाणी गाण्डीवस्य विकर्षणे ।

तेन देवमनुष्येषु सव्यसाचीति मां विदुः ।'

सहज पंथ

गौड़ीय वैष्णव संप्रदाय का एक निम्न वर्ग ।

सहजिया

सहज पंथ का अनुयायी ।

सहदेव

माद्री के गर्भ और अश्विनीकुमार से उत्पन्न पांडवों में पाँचवें और सबसे छोटे ।

सहस्रबाहु

दे० 'कार्तवीर्य' । कार्तवीर्यार्जुन जो क्षत्रिय राजा कृतवीर्य का पुत्र था । इसका दूसरा नाम हैहय था; बाणासुर (दे०) ।

सहस्राक्ष

इन्द्र का एक नाम । जब इन्द्र ने गौतम की पत्नी के साथ बलात्कार किया तो मुनि के शाप के कारण इनके शरीर पर एक सहस्र योनि के चिह्न बन गए । किन्तु बाद में वे नेत्रों में परिवर्तित हो गए जिसके फलस्वरूप इनका नाम सहस्राक्ष पड़ गया; विष्णु ।

सहस्रार्जुन

दे० 'कार्तवीर्य' ।

सांकास्य

जनक के भाई कुशध्वज की राजधानी ।

सांदीपनि

श्रीकृष्ण और बलराम को धनुर्वेद की शिक्षा देने वाले गुरु ।

साकेत

अयोध्या ।

सागर

दे० 'सिंधु' ।

सात्यकि

श्रीकृष्ण का सारथी एक यादव योद्धा; युयुधान ।

सात्वत

विष्णु; बलराम; जातिच्युत वैश्य का पुत्र ।

सात्वती

शिशुपाल की माता; सुभद्रा ।

सात्विक

साहित्य में सतोगुण से उत्पन्न होने वाले अंग-विकार :—
स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, कंप, वैवर्ण्य, अश्रु और प्रलय ।

साधन चतुष्टय

भगवान् का स्वरूप जानने के चार साधन :—
१. नित्यानित्यवस्तुविवेक, २. वैराग्य, ३. शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा और समाधान (बुद्धि को शुद्ध ब्रह्म में लीन रखना), ४. मुमुक्षा ।

सामवेद

चार वेदों में से एक जिसमें यज्ञों के समय पठित स्तोत्रों का संग्रह है ।

सायुज्य

एक प्रकार की मुक्ति जिसमें जीवात्मा परमात्मा में लीन हो जाता है ।

सारंगपाणि

विष्णु का एक नाम ।

सारस्वत

एक प्रसिद्ध व्याकरण; दिल्ली के उत्तर-पश्चिम में सरस्वती के किनारे का भूमि-भाग ।

सारूप्य

एक प्रकार की मुक्ति जिसमें जीवात्मा परमात्मा का रूप धारण कर लेता है ।

सालहोत्र (शालिहोत्र)

आयुर्वेद की वह शाखा जिसमें घोड़ों का इलाज बताया गया है ।

सालोक्य

वह मुक्ति जिसमें जीवात्मा परमात्मा के लोक में निवास करता है ।

सावर्णि

सूर्य के पुत्र आठवें मनु; एक मन्वंतर ।

सावित्री

मद्र देश के राजा अश्वपति की कन्या और साल्व देश के राजा सत्यवान् की पत्नी; ऋग्वेद का एक मंत्र विशेष; पति की दीर्घायु की

कामना रखने वाली पत्नियाँ ज्येष्ठ कृष्ण १४ को 'सावित्री व्रत' रखती हैं; धर्म की पत्नी और दक्ष प्रजापति की कन्या; यमुना नदी; सरस्वती नदी; वेदमाता गायत्री।

## साष्टांग (दण्डवत)

हाथ, पैर, घुटने, वक्षस्थल, सिर, नेत्र, मन और वाणी से जमीन पर लेट कर प्रणाम करना। (दे० 'अष्टांग')

## सिंधु

सात माने गए हैं :—

लवणोद, रसोद, सुरानिधि, घृतनिधि, दधिनिधि, क्षीरनिधि, जलनिधि। (दे० 'सप्तसागर' भी)

अथवा, पुराणों में नाम हैं :—

क्षीरोद, लवणोद, दध्युद, घृतोद, सुरोद, ईक्षूद, स्वादूद।

## सिंधुजा

लक्ष्मी का नाम।

## सिंधुपुत्र

चन्द्रमा।

## सिंधुमाता

सरस्वती।

## सिंधुरवदन

गणेश।

## सिंहवाहिनी

दुर्गा जी की उपाधि।

## सितवराहपत्नी

पृथ्वी का नाम।

## सित सागर

क्षीर सागर।

## सिद्ध

नाथ सम्प्रदाय के चौरासी सिद्ध माने गए हैं :—

लुइपा, लीलापा, विरूपा, डोम्भिपा, शबरिपा, सरहपा, कङ्कलीपा, गोरक्षपा, चौरंगिपा, मीनपा, शान्तिपा, वीणापा, चमरिपा, खंगपा, तन्तिपा, करहपा, कर्णरिपा, नागार्जुन, शालिपा, थगनपा, तारोपा, भत्रपा, छत्रपा, तिलोपा, अजोगिपा, कालपा, धोझिपा, दोखन्धिपा, कंकणपा, कमरिपा, तन्धेपा, भदेपा, डेंगिपा, कुसूलिपा, धर्मपा,

कुकुरिपा, अचिन्तिपा, महीपा, भलहपा, भुसुकिपा, नलिनपा, मेकोपा, इन्द्रभूति, कमरिपा, कुठालिपा, जालन्धरपा, राहुलपा, धर्बरिपा, धोकरिपा, मेदिनीपा, पंकजपा, घण्टापा, जोगीपा, चेलुकपा, लुचिकपा, निर्गुणापा, गुण्डरिपा, जयनन्तपा, चर्पटिपा, चम्पकपा, भिखनपा, भलिपा, कुमरिपा, जबरिपा, मणिभद्रा, मेखला, कनखला, कलकलपा, कन्तलिपा, धहुलिपा, उधलिपा, कपालपा, किलपा, सागरपा, सर्वभक्षपा, नागबोधिपा, दारिकपा, पुतुलिका, पनहपा, कोकलिपा, अनंगपा, लक्ष्मीकरा, समुदपा, भलिपा।

सिद्धार्थ

गौतम बुद्ध; जैनों के चौबीसवें अर्हत् महावीर के पिता का नाम।

सिद्धि

वैसे तो योगियों ने अठारह प्रकार की अलौकिक सिद्धियाँ बताई हैं, किन्तु उनमें आठ प्रधान हैं :—

'अणिमा लघिमा प्राप्तिः प्राकाम्यं महिमा तथा।
ईशित्वं च वशित्वं च तथा कामवसायिता॥'

अणिमा—लघु रूप धारण करना।
महिमा—बड़ा रूप धारण करना। } शारीरिक
लघिमा—हल्का रूप धारण करना।

प्राप्ति—मनवांछित वस्तु लेने की शक्ति।

प्राकाम्य—लौकिक पारलौकिक पदार्थों का इच्छानुसार अनुभव करने या मनोरथ पूर्ण करने की शक्ति।

ईशिता (ईशित्व)—माया को इच्छानुसार संचालित करना या ऐश्वर्य प्राप्त करना।

वशिता (वशित्व)—विषयों में रहते हुए भी उनमें आसक्त न होना या सबको वश में करने की शक्ति।

कामवसायिता—सुख की सीमा तक पहुँच जाना या सारी सांसारिक इच्छाओं को पूर्ण करना।

ये नाम कहीं-कहीं इस प्रकार मिलते हैं :—

अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, वशीकरण, ईशता। (दे० 'कुबेर' भी)

निम्नलिखित आठ सिद्धियाँ भी मानी गई हैं (मार्कण्डेय पुराण) :—
पद्म, महापद्म, मकर, कच्छप, मुकुन्द, नील, नन्द और शंख।

सिद्धि

पुराणों के अनुसार :—
अंजन, गुटका, पादुका, धातुभेद, बेताल, वज्र, रसायन, योगिनी।

सांख्य के अनुसार :—

तार, सुतार, तारतार, रम्यक्, आधिभौतिक, आधिदैविक, आध्यात्मिक ।

सिद्धियोग

'शुक्रे नन्दा बुधे भद्रा, शनौ रिक्ता कुजे जया ।
गुरौ पूर्णा च संयुक्ता सिद्धियोग: प्रकीर्तित: ।।'

(शुक्रवार परिवा, बुधवार दुइज, शनिवार चौथ, मंगलवार तीज, वृहस्पतिवार पंचमी—ज्योतिष के अनुसार इन वारों में उक्त तिथियों को सिद्धियोग कहा जाता है)

सीता

विदेहराज सीरध्वज (जनक, मिथिलाधिपति) की पुत्री और श्री राम की अर्द्धांगिनी । वनवास के समय सीता जी का रावण द्वारा हरण होने के फलस्वरूप राम-रावण युद्ध हुआ जिसका 'रामायण', 'रामचरितमानस' आदि ग्रन्थों में वर्णन हुआ है; एक देवी जो इन्द्र की पत्नी है; आकाशगंगा की चार धाराओं में से एक; उमा और लक्ष्मी का नामान्तर ।

सीमन्तोन्नयन

द्विजों के दस संस्कारों में से एक जो प्रथम गर्भ के चौथे, छठे और आठवें महीने में होता है ।

सीरध्वज

जानकी जी के पिता, राजा जनक ।

सुंद

एक दैत्य जो निकुंभ का पुत्र और उपसुन्द का भाई था । इसके पिता का नाम निसुंद भी मिलता है ।

सुकेशि

विद्युत्केश राक्षस का पुत्र और माल्यवान्, सुमाली और माली नामक राक्षसों का पिता ।

सुग्रीव

वानरराज बालि का छोटा भाई । यह श्री राम का मित्र था और सीता की खोज कराने में इसने राम की सहायता की थी । (दे० 'अरुण') ।

सुतीक्ष्ण

अगस्त्य मुनि के भाई एक ऋषि का नाम जो श्री राम के समकालीन थे ।

**सुत्रामन्**

इन्द्र का एक नाम।

**सुदक्षिणा**

राजा दिलीप की पत्नी।

**सुदर्शन**

भगवान् विष्णु (श्रीकृष्ण) का चक्र।

**सुदामा**

श्रीकृष्ण का मित्र एक दरिद्र ब्राह्मण जो श्रीकृष्ण की कृपा से समृद्ध हो गया था।

**सुदास**

दिवोदास का पुत्र।

**सुधन्वा**

विष्णु; विश्वकर्मा; आंगिरस।

**सुनासीर या सुनाशीर**

इन्द्र का नाम।

**सुभद्र**

विष्णु का नाम; श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम; सनत्कुमार।

**सुभद्रा**

श्रीकृष्ण और बलराम की बहन। इनका विवाह अर्जुन के साथ हुआ था।

**सुमंत्र**

राजा दशरथ के मंत्री और सारथी।

**सुमाली**

एक राक्षस जिसकी कन्या कैकसी की संतान रावण, कुंभकर्ण, विभीषण और शूर्पणखा थी।

**सुमित्रा**

महाराज दशरथ की पत्नी और लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता।

**सुमेरु**

पुराणोल्लिखित एक पर्वत जो सब पर्वतों का राजा और सोने का बना माना गया है; माला के बीच का बड़ा और ऊपरवाला दाना।

**सुयोधन**

दुर्योधन का नामान्तर।

सुरति

ये सात हैं—स्मृति, इच्छा, चित्त, मन, बुद्धि, अहंकार और अनुभव ।

सुरथ

दुर्गा की सर्वप्रथम आराधना करने वाले एक सूर्यवंशी राजा; जयद्रथ के पुत्र का नाम ।

सुरमा

तीन प्रकार का होता है :—स्रोतोंजन, सौवीरांजन, पुष्पांजन ।

सुरासुरगुरु

शिव; कश्यप ।

सुलोचना

मेघनाद की पत्नी; राजा माधव की पत्नी ।

सुषुप्ति

पातंजल दर्शन के अनुसार चित्त की एक वृत्ति जिसमें जीव नित्य ब्रह्म की प्राप्ति करता है, परन्तु उसे उसका ज्ञान नहीं रहता ।

सुषुम्ना

हठयोग के अनुसार शरीर की प्रधान नाड़ियों में से एक । यह नाड़ी नासिका के मध्य भाग (ब्रह्मरंध्र) में स्थित है ।

सुषेण

परीक्षित के पुत्र का नाम, एक वानर जो वरुण का पुत्र, बालि का ससुर और सुग्रीव का वैद्य था ।

सूकरखेत

एक प्राचीन तीर्थ । इसे सोरों भी कहते हैं । इस नाम का तीर्थ मथुरा, अनूपशहर के निकट और बिहार में कई स्थानों में मिलता है ।

सूक्ष्म शरीर

पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच सूक्ष्म भूत, मन और बुद्धि—इन सत्रह तत्वों का समूह ।

सूत

व्यास के एक शिष्य का नाम और पुराण-वक्ता ।

सूरदास

प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सूरसागर' के रचयिता । ये महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्य और अष्टछाप के कवियों में प्रमुख थे । सूरदास कृष्ण के अनन्य भक्त थे ।

सूरपुत्र

सुग्रीव का नाम ।

**सूरज** (वैदिक छन्द-रूप)

गायत्री, वृहति, अश्निक, जगति, त्रिष्टुप, अनुष्टुप और पंक्ति—ये सूरज के सात घोड़े हैं। इनके ये नाम भी मिलते हैं :—गायत्री, वृहति, उष्णीक, जगति, त्रिष्टुप, अनुष्टुप और पंक्ति।

**सूरी**

सूर्य की पत्नी; कुन्ती का नाम।

**सूर्य**

१२ (दे० 'आदित्य')। सूर्य का सारथी अरुण और घोड़ा उच्चैःश्रवा।

**सूर्य**

बारह कलाएँ :—तपिनी, तापिनी, धूम्रा, मरीचि, ज्वालिनी, रुचि, सुषुम्णा, भोगदा, विश्वा, बोधिनी, धारिणी, क्षमा।

**सूर्यतापिनी**

एक उपनिषद् का नाम।

**सूर्यपुत्र**

शनि; यम; वरुण; अश्विनीकुमार; सुग्रीव; कर्ण।

**सूर्यवंश**

क्षत्रियों के दो प्रधान आदि कुलों में से एक जिसका आरंभ इक्ष्वाकु राजा से माना जाता है।

**सूर्या**

सूर्य की पत्नी संज्ञा।

**सृंजय**

मनु के एक पुत्र का नाम; धृष्टद्युम्न का वंश।

**सेतुबंध**

लंका पर चढ़ाई करते समय श्री राम द्वारा बनवाया गया पुल।

**सेनजित्**

श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

**सेना**

दे० 'चतुरंगिणी' या 'चतुरंग'।

**सेनामुख**

सेना का एक विभाग जिसमें तीन हाथी, तीन रथ, नौ घोड़े और पन्द्रह पैदल सैनिक रहते थे।

**सेवड़ा**

जैन साधुओं का एक भेद।

**सैरंध्री या सैरिंध्री**

वह नाम जो द्रौपदी ने अज्ञातवास के समय रखा था।

**सोम**

वैदिक काल की एक लता जिसके मादक रस का ऋषि पान करते थे। ऋग्वेद में सोम का बहुत उल्लेख हुआ है।

**सोमनाथ**

काठियावाड़ में स्थित एक प्रसिद्ध ज्योतिर्लिङ्ग जिसे मुसलमान शासकों ने ध्वस्त किया।

**सोमयाग**

एक त्रैवार्षिक यज्ञ जिसमें सोमरस का पान किया जाता था।

**सोमेश्वर**

संगीत-शास्त्र के एक आचार्य।

**सौत्रामणी यज्ञ**

इन्द्र को प्रसन्न करने के लिए किया जाने वाला एक यज्ञ।

**सौनन्द**

बलराम के मूसल का नाम।

**सौनन्दिन्**

बलराम का नामान्तर।

**सौबल**

दुर्योधन के मामा और गांधार के राजा सुबल के पुत्र शकुनि का नाम।

**सौबली**

दुर्योधन की माता गान्धारी का नाम।

**सौभ**

हरिश्चन्द्र की नगरी जो अन्तरिक्ष में लटकी बताई जाती है।

**सौर मास**

एक संक्रान्ति से दूसरी संक्रान्ति तक का समय।

**सौर वर्ष**

एक मेष की संक्रान्ति से दूसरी मेष संक्रान्ति तक का समय।

**स्कंद पुराण**

१८ पुराणों में से एक पुराण।

**स्कंध**

बौद्धों के अनुसार रूप, वेदना, विज्ञान, संज्ञा और संस्कार—ये पाँच पदार्थ। दर्शनशास्त्र के अनुसार शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध।

### स्त्री

उत्तमा स्त्री के लक्षण हैं :—
स्तनौ सुकठिनौ यस्या नितम्बे च विशालता।
मध्ये क्षीणा भवेद्या सा न्यग्रोधपरिमण्डला।।
ऐसी स्त्री को न्यग्रोधपरिमण्डला कहते हैं।

### स्त्री

कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार की स्त्रियाँ होती हैं :—
शंखिनी, चित्रिणी, हस्तिनी और पद्मिनी। इनके अलग-अलग लक्षण वात्स्यायन के कामसूत्र में बताए गए हैं। (दे० 'पुरुष' भी)
अवस्था के अनुसार स्त्रियाँ ६ प्रकार की मानी गई हैं :—
१. कुमारी (जन्म से ५ वर्ष तक), २. कन्या (५ से १२ वर्ष तक), ३. किशोरी या मुग्धा (१२ से १५ वर्ष तक), ४. युवती या मध्या (१६ से २५ वर्ष तक), ५. प्रौढ़ा (२५ से ४० वर्ष तक), ६. वृद्धा (४० वर्ष के बाद)।

### स्त्री

स्त्रियों के बारह भूषण :—
रूप, शील, सत्य बोलना, श्रृंगार किए रहना, धर्म करना, मधुर बोलना, अन्त:करण व बाहर से शुद्ध रहना, पति का भाव रखना, पति की सेवा करना, सहन-शीलता, रति में कुशलता, पातिव्रत।

### स्थविर

वृद्ध और पूज्य बौद्ध भिक्षु।

### स्थायी भाव

साहित्य में स्थायी भाव हैं :—
रति, हास्य, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा, विस्मय और निर्वेद।

### स्मार्त

वह वैष्णव जो स्मृतियों के अनुसार सब कार्य करता है।

### स्मृति

भारत के वे ग्रन्थ जिनमें धर्म, दर्शन, आचार, व्यवहार या आश्वलायन आदि का विवेचन किया गया है। छह वेदांग; गृह्य, आश्वालन, सांख्यायन, गोमिल, यास्क, बौधायन, भारद्वाज, आपस्तम्ब सूत्र; मनु, याज्ञवल्क्य, अत्रि, विष्णु, हारीत, उशनस्, अंगिरा, यम, कात्यायन, वृहस्पति, पराशर, व्यास, दक्ष, गौतम, वशिष्ठ, नारद, भृगु आदि द्वारा रचित धर्मशास्त्र; रामायण और महाभारत; अठारह पुराण; सब प्रकार के नीतिशास्त्र ग्रन्थ आदि स्मृति के अन्तर्गत माने जाते हैं। वैसे १८ स्मृतियों के नाम ये हैं :—

मनु, अत्रि, विष्णु, याज्ञवल्क्य, हारीत, उशना, अंगिरा, आपस्तम्ब, संवर्त्त, यम, कात्यायन, बृहस्पति, पाराशर, व्यास, शङ्खलिखित, गौतम, वशिष्ठ, दक्ष ।

निम्नलिखित १८ नाम भी मिलते हैं :—

मनु, याज्ञवल्क्य, पाराशर, वसिष्ठ, हारीत, नारद, अत्रि, आपस्तम्ब, शतातप, संख, लिखित, व्यास, भारद्वाज, काश्यप, दक्ष, विष्णु, यम, बृहस्पति ।

दोनों सूचियों के नामों में अन्तर है ।

**स्यमन्तक**

वृष्णिवंशी सत्राजित् ने सूर्य भगवान् की तपस्या कर स्यमन्तक मणि प्राप्त की थी । यह दिव्य रत्न था जो सब संकटों से मनुष्य की रक्षा करता था । सत्राजित् का भाई प्रसेन इसे पहन कर शिकार खेलने गया और जब वह शेर द्वारा मार डाला गया तो जाम्बवान् उसे उतार ले गया । श्रीकृष्ण ने वह प्राप्त कर सत्राजित् को दे दी ।

**स्वधा**

एक शब्द जिसका उच्चारण देवताओं या पितरों को हवि देते समय किया जाता है; पितरों को दिया जाने वाला अन्न या भोजन; दक्ष की एक कन्या ।

**स्वफलक**

दे० 'गांदिनी या गांदिगी' । अक्रूर के पिता ।

**स्वयंभू**

ब्रह्मा का एक नाम; कामदेव; विष्णु; शिव; काल ।

**स्वर**

सप्त स्वर हैं :—

षडज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, धैवत, निषाद, पंचम ।

**स्वरोचिस्**

स्वारोचिष् मनु के पिता जो कलि नामक गंधर्व के पुत्र थे ।

**स्वर्ग**

भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक, सत्यलोक ।

**स्वस्तिक**

शुभ अवसरों पर बनाया गया मंगल चिह्न (卐); हठयोग में एक आसन ।

**स्वायंभुव**

ब्रह्मा और शिव का नाम; प्रथम मनु जो स्वयंभू ब्रह्मा से उत्पन्न माने जाते हैं ।

स्वारोचिष

दूसरे मनु का नाम।

स्वाहा

अग्नि की पत्नी। इसका एक नाम गर्भस्ति भी है; एक शब्द जिसका प्रयोग देवताओं को हवि देने के समय किया जाता है।

## ह

हंस

माया से निर्लिप्त आत्मा; संन्यासियों का एक भेद; सूर्य; ब्रह्म; जीव; विष्णु; शिव।

हंसगति

सायुज्य मुक्ति।

हंसवंश

सूर्यवंश।

हंसवाहन

ब्रह्मा।

हंसवाहिनी

सरस्वती।

हंस-सुता

यमुना।

हँसी

स्मित (मुस्कराना), हसित (हँसते समय दाँत दिखाई देना), विहसित (बोलते हुए हँसना), उपहसित (नाक फुलाकर हँसना), अपहसित (सिर हिलाते तथा आँसुओं के साथ जोर से हँसना), अतिहसित (ठठाकर हँसना जिसमें शरीर भी हिले)।

हठयोग

योग का एक प्रकार जिसमें अत्यन्त कठोर मुद्राएँ और आसन ग्रहण करने पड़ते हैं और नेती, धौती आदि क्रियाएँ करनी पड़ती हैं।

हनुमान

केशरी और अंजनी के पुत्र, पवन के पुत्र, सुग्रीव के सचिव और श्री राम के भक्त हनुमान जी। राम-रावण-युद्ध में इन्होंने अत्यधिक

वीरता प्रदर्शित की और भगवान् राम के चरणों में स्थान प्राप्त किया। हनुमान जी आजन्म ब्रह्मचारी रहे।

**हरि**

विष्णु, श्रीकृष्ण; श्रीराम; शिव; सूर्य।

**हरिण**

ये पाँच तरह के माने गए हैं :—

हरिणञ्चापि विज्ञेयः पंचभेदोत्र भैरव।

ऋष्यः खड्गो रुरुश्चैव पृषतश्च मृगस्तथा ॥

गन्धर्व, शरभ, राम, सृमर (साँभर चीतल), गवय (नीलगाय), शश (खरहा)।

**हरिताल**

पुराणों के अनुसार विष्णु के वीर्य से उत्पन्न।

**हरिद्वार**

तीर्थ विशेष जहाँ से गंगा पहाड़ों को छोड़कर मैदान में आती है।

**हरिवंश**

एक पुराण जिसमें श्रीकृष्ण और उनके वंश से संबंधित आख्यान हैं; श्रीकृष्ण का वंश।

**हरिश्चन्द्र**

सूर्यवंशी अट्ठाईसवें और सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र जिन्होंने सत्य का पालन करने के लिए अपनी पत्नी और पुत्र तक को बेच दिया था। ये बड़े दानी भी थे।

**हरिहर क्षेत्र**

बिहार में एक तीर्थस्थान जहाँ कार्तिक पूर्णिमा को बड़ा भारी मेला लगता है।

**हलायुध**

बलराम की उपाधि।

**हलाहल**

वह विष जो समुद्र-मन्थन से निकला था। समस्त लोकों के भस्म हो जाने के डर से शिवजी ने इसे अपने कण्ठ में रख लिया जिससे वह नील वर्ण का हो गया और शिवजी नीलकण्ठ कहलाए।

**हविष्य**

वह अन्न या वस्तु जो किसी देवता के निमित्त अग्नि में डाली जाय; हवन करने योग्य।

हविष्यान्न

वह आहार जो यज्ञ के समय किया जाय।

हस्तिनापुर

राजा हस्तिन का बसाया हुआ और कौरवों की राजधानी जो आधुनिक दिल्ली और मेरठ के बीच गंगा के किनारे बसी हुई थी।

हस्तिनी

दे० 'स्त्री'। कामशास्त्र के अनुसार स्त्री का निकृष्ट भेद।

हाटकलोचन

दे० 'हिरण्याक्ष'।

हाव

हेला, लीला, ललित, विभ्रम, विहृत, विलास, किलकिंचित्, विच्छित्ति, बिब्बोक, मोट्टायित, कुट्टमित—साहित्य में नायिका की ये ११ स्वाभाविक चेष्टाएँ मानी जाती हैं जो संयोग के समय नायक को आकर्षित करती हैं।

हिंगलाज

सिंध में स्थापित दुर्गा जी की मूर्ति।

हिजरी

इस्लाम धर्म में माना जानेवाला संवत् जो हज़रत मुहम्मद के मक्के से मदीने को की गई हिजरत से प्रारम्भ होता है (१५ जुलाई, ६२२ ई०)।

हिडिंब

एक राक्षस जिसे भीम ने वनवास के समय मारा था।

हिडिंबा

हिडिंब (दे०) की बहन जिससे भीम ने विवाह किया था।

हिमालय

भारतवर्ष के उत्तर में स्थित पर्वत जो संसार के सभी पहाड़ों से ऊँचा है। हिमालय का और भारतीय संस्कृति का घनिष्ठ संबंध रहा है। अपने सौन्दर्य के कारण यह देवताओं का निवास माना जाता है। अभी तक हिमालय अलंघ्य था, किन्तु अब वह अलंघ्य नहीं रह गया।

हिरण्यकशिपु

एक विष्णु-विरोधी दैत्य जिसका पुत्र प्रह्लाद हुआ। नृसिंहावतार द्वारा हिरण्यकशिपु मारा गया।

हिरण्यगर्भ

वह ज्योतिर्मय एवं सुवर्ण अण्ड जिससे ब्रह्मा और सारी सृष्टि उत्पन्न हुई; सूक्ष्म शरीर; विष्णु; ब्रह्मा।

हिरण्यनाभ

विष्णु; मैनाक पर्वत।

हिरण्यरेता

अग्नि; शिव; सूर्य।

हिरण्याक्ष

हिरण्यकशिपु (दे०) का भाई।

हिरनाकुस

दे० 'हिरण्यकशिपु'।

हीनयान

बौद्ध धर्म की दो प्रमुख शाखाएँ मानी जाती हैं :—१. हीनयान और २. महायान (दे०)। हीनयान उसका मूल और प्राचीन रूप है और इसके ग्रंथ पालि में हैं। हीनयान गौतम बुद्ध के उपदेशों के अधिक निकट रहा।

हीरामन तोता

साहित्य में एक कल्पित तोता जो सोने के रंग का माना जाता है।

हुमा

एक कल्पित पक्षी जिसके संबंध में यह माना जाता है कि जिसके ऊपर उसका साया पड़ जाय वह बादशाह हो जाता है।

हुहु या हुहू या हूहू

एक गन्धर्व विशेष।

हृषीकेश

विष्णु या कृष्ण का नाम।

हेमकूट

पुराणानुसार हिमालय के उत्तर में स्थित एक पर्वत।

हेमगिरि

सुमेरु पर्वत।

हैहयराज या हैहयाधिराज

हैहयवंशी कार्त्तवीर्य सहस्रार्जुन।

**होम**

देवताओं को अर्पित करने के लिए अग्नि में घृत, जौ आदि सामग्री डालना; हवन या यज्ञ ।

**होलाष्टक**

होली से पहले के आठ दिन जिनमें विवाह-कृत्य नहीं होते ।

**होता या होतृ**

यज्ञ में आहुति देने वाला ।

**होत्र**

हवन में आहुति दी जाने वाली सामग्री ।

**हौवा**

ईसाई और इस्लाम धर्मों के अनुसार वह पहली स्त्री जिससे आदम ने मनुष्य जाति को उत्पन्न किया । इस प्रकार हौवा मनुष्य जाति की आदि माता है ।

●